वैतरणी

वसिरेड्डी सीता देवी

अनुवादिका

आर. शांता सुंदरी



सतत शिक्षा पुस्तकमाला

वैतरणी

वसिरेड्डी सीता देवी

अनुवादिका
आर. शांता सुंदरी

चित्रांकन
डी. के. दास



नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

ISBN 81-237-2928-6

पहला संस्करण : 1999
दूसरी आवृत्ति : 2004 *(शक 1926)*

VYTARNI (*Hindi*)

रु. 14.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5 ग्रीन पार्क,
नई दिल्ली-110016 द्वारा प्रकाशित

ऊषा देवी ने अपने घूंघट से झांककर गांव के लोगों को देखा।

उसकी मुस्कान का उजाला धीरे-धीरे आकाश में फैल गया।

उसके रक्त-वर्ण गालों की लाली से पूरब दिशा का आकाश लालिमा से भर गया।

"अरे भागवान ! और कितनी देर करोगी ? भद्रैया जी की बैलगाड़ी भी चली गयी। एक तुम हो कि जल्दी तैयार होकर निकलती ही नहीं !" बैलगाड़ी में जुते बैल की पीठ थपथपाते हुए माधवैया ने पुकारा।

"अभी आई !" अन्दर से पुन्नम्मा की आवाज़ सुनाई दी।

माधवैया ने बच्चों से कहा, "तुम लोग पहले गाड़ी में बैठ जाओ।"

माधवैया का बड़ा बेटा सुब्बारायुडु पन्द्रह साल का किशोर था। जल्दी से गाड़ी में बैठ गया।

दूसरा लड़का रामदास तेरह साल का था। उसे गाड़ी में चढ़ने में दिक्कत हो रही थी, तो किसान मज़दूर ने उसे चढ़ा दिया।

तीसरा बेटा ग्यारह साल का था। उसका नाम नागभूषणम् था। उसे भी किसान मज़दूर ने चढ़ाया।

सात साल का सत्यनारायणा चौथा था। पिता ने उसे गोद में लिया और गाड़ी के अगले भाग में बिठाया।

गाड़ी में बैठे तीनों लड़के पीछे बैठने के लिए लड़ रहे थे। पैर लटकाकर पीछे बैठना उन्हें अच्छा लगता था।

"सुब्बारायुडू, तू पीछे बैठ ! और तुम दोनों गाड़ी के अन्दर बैठो। छोटे हो, गाड़ी हिचकोले खाकर चलेगी तो गिर पड़ोगे !" माधवैया ने बेटों से कहा। माधवैया से बच्चे डरते थे। चुपचाप पिता की आज्ञा का पालन किया।

माथे पर कुमकुम का बड़ा टीका लगाए, जरी की बड़ी किनारेवाली

साड़ी पहने, हाथ में दूध का लोटा लिए, पुन्नम्मा आ गई ।

"आ गई ? चलो, जल्दी से गाड़ी में बैठो," माधवैया झुंझला उठा ।

"अरे, इतनी भी क्या जल्दी है ?" पुन्नम्मा बोली । पुन्नम्मा को गाड़ी में चढ़ना कठिन लगा । पर किसी तरह चढ़कर बैठ गई ।

"बाबूजी, आप भी बैठिए," किसान मज़दूर ने कहा ।

"तू घर पर ही रुक जा । घर की रखवाली कर, गाड़ी मैं चला लूंगा," कहकर माधवैया बड़ी फुर्ती से गाड़ी में बैठ गया ।

छोटे आकार के नन्दी जैसे दिखनेवाले बैलों की जोड़ी मालिक के बैठते ही दौड़ पड़ी ।

"जरा धीरे चलाइए, जी ! दूध गिरता जा रहा है," पुन्नम्मा बोली ।

माधवैया गांव के संपन्न किसानों में से एक था ।

माधवैया और पुन्नम्मा के जीवन में एक ही कमी थी । उनकी एक भी लड़की नहीं थी । "भई, चार लड़कों की मां हो, तुम तो बड़ी भाग्यवान हो जी !" इस तरह की बात अगर कोई करता, तो पुन्नम्मा ठंडी सांस लेकर चुप रह जाती ।

उन दोनों ने लड़की के लिए सभी देवी-देवताओं से मन्नतें मांगी थीं । हर प्रकार के व्रत कर चुके थे ।

नागपंचमी का दिन था । गांव से दूर सांपों के बिल थे । उनमें दूध डालने के लिए माधवैया का परिवार निकल पड़ा ।

पुन्नम्मा बोली, "इस बार नागदेवता की कृपा से लड़की हुई तो अगले साल देवता के लिए सोने का फन बनवाऊंगी ।

माधवैया ने गहरी सांस ली । बैलों को हांका । बैलों के गले में बंधी घंटियां बजने लगीं और ऊबड़-खाबड़ रास्ते पर गाड़ी झूले की तरह झूलती हुई आगे बढ़ी ।

सबसे छोटा लड़का सात साल का हो गया । एक अरसे के बाद पुन्नम्मा फिर से गर्भवती है । माधवैया को विश्वास नहीं था कि लड़की होगी । पर पुन्नम्मा को पूरी उम्मीद थी ।

"नागदेवता के आशीर्वाद से लड़की हुई, तो उसका नाम नागम्मा रखेंगे," पुन्नम्मा बोली। वह दूध के लोटे को कसकर पकड़कर बैठी थी।

माधवैया ने जवाब नहीं दिया। फिर से बैलों को हांकने लगा।

"मां ! बहन का नाम नागम्मा नहीं, बालनागम्मा रखेंगे," बड़े बेटे सुब्बारायुडु ने कहा।

"मेरा राजा बेटा ! बहन से कितना प्यार करता है !" बेटे के सिर पर हाथ फेरते हुए, पुन्नम्मा खुश होकर बोली।

"नागम्मा भी कोई नाम होता है ? बहन का कोई अच्छा-सा नाम देंगे !" तीसरा बेटा नागभूषणम् बड़ा तेज़-मिजाज़ था।

मां ने बड़े भाई की तारीफ की तो उसे बुरा लगा। वह दिखाना चाहता था कि बहन को सबसे ज्यादा वही चाहता है।

"चुप, बदमाश !" मां ने डांट दिया। नागभूषणम् को पता न चला कि उसकी गलती क्या थी। वह मां का मुंह देखता रहा।

"नागदेवता ! छोटा बच्चा है, नासमझ है, उसे माफ़ कर देना। मैं अपनी बच्ची का नाम नागम्मा ही रखूंगी," पुन्नम्मा ने देवता से माफ़ी मांगी।

"अरे चुप भी रहो। अभी बच्ची हुई ही नहीं, अभी से नाम को लेकर झगड़ा करने लग गए !" माधवैया ने डांट दिया।

"क्यों अशुभ बोलते हो जी ?" पुन्नम्मा का गला भर आया।

गाड़ी गांव से दूर स्थित ताड़ के पेड़ों के झुरमुट के पास जाकर रुक गई। वहां पर छोटे-बड़े सब मिलाकर तक़रीबन दस बिल थे।

स्त्रियां बिलों पर हल्दी-कुंकुम का लेप लगाकर उनमें दूध डाल रही थीं। प्रदक्षिणा कर रही थीं। बच्चे दूर पेड़ों के पास खेल रहे थे। मर्द गाड़ियों के पास बैठकर बातें कर रहे थे।

पुन्नम्मा गाड़ी से उतरी और एक बिल की तरफ चल पड़ी। बच्चे खेलने चले गए। माधवैया ने बैलों को खोलकर गाड़ी से बांध दिया और चुरुट जलाकर बैठ गया।

2

उत्तर दिशा से काले बादल उमड़कर आ रहे थे । आकाश की लालिमा पर वे ऐसे छाए जा रहे थे, मानों किसी सुहागन के माथे के सिन्दूर को कठोर कबंध का हाथ पोंछ रहा हो ।

ऐसा लग रहा था कि आकाश मटमैला है । न जाने कैसी उदासी है ।

सारे संसार को प्रकाश देनेवाले सूरज को निगलने के लिए राहु अपनी अंधेरी छायाओं को फैलाता हुआ आने लगा ।

लोग इधर-उधर भाग दौड़ रहे थे । कुछ लोग कांच के टुकड़ों पर कालिख लगाकर सूर्यग्रहण को देखने की तैयारी में लगे थे । गर्भवती स्त्रियां बिना हिले-डुले लेटी थीं ।

गांव की सबसे ऊंची इमारत पर बने घोंसले से कबूतरों की एक जोड़ी पंख फड़फड़ाती हुई आकाश में उड़ गई ।

उस इमारत के पिछवाड़े में बनी गोशाला में गाय का बछड़ा मां का दूध पीने के लिए रंभा रहा था ।

उस इमारत की पहली मंजिल पर दक्षिण की दिशा में स्थित कमरे के बाहर माधवैया बेचैन-सा बड़े-बड़े पग बढ़ाता हुआ घूम रहा था ।

उसके चेहरे पर एक प्रकार का भय और मन की खुशी आपस में मिलकर एक अजीब-सा भाव प्रकट कर रहे थे ।

माधवैया के चारों बेटे रोनी-सी सूरत बनाकर बैठे थे । कमरे से आ रही मां की चीख-पुकार सुनकर सत्यनारायणा ने पूछा, “पिताजी ! मां क्यों रो रही है ?”

बड़े ने संजीदगी से जवाब दिया, “छोटे, हमें बहन मिलनेवाली है ।”

“सुनो सुब्बुलु, तुम लोग जाकर खेलो । सत्यम् को भी ले जाओ,” पिता ने कहा ।

पिता की बात वे टालते नहीं थे । उठकर जाने लगे । पर छोटे, सत्यम्, ने ज़िद की, “मुझे मां चाहिए । मां के पास जाऊंगा ।”

"ठीक है, तुम तीनों जाओ," छोटे को गोद में उठाते हुए माधवैया ने कहा ।

कमरे से कराहने की आवाज़ और ज़ोर से आने लगी । माधवैया सांस रोककर सुन रहा था । इतने में कराहना बन्द हो गया । माधवैया ने दूर बैठे पुरोहित त्रिपुरैया की आंखों में झांककर देखा ।

पुरोहित ने पंचांग खोला, दीवार पर लगी घड़ी की तरफ एक बार देखा, और बोले, "अभी-अभी सूर्य ग्रहण लगा है । सूर्य भगवान राहु में फंसे हैं ।"

"और कितना समय है ?" माधवैया ने लंबी सांस ली और पूछा ।

कमरे से फिर कराहने की आवाज़ आई । गोद में बैठा बच्चा जोर से रोने लगा ।" डरने की कोई बात नहीं है रे, मुन्ना । मत रो, अभी मां के पास जाएंगे । अरे, रामुडू !" माधवैया ने मज़दूर को बुलाया ।

"क्या है, बाबूजी ?" मजदूर दौड़कर आया ।

"मुन्ने को ले जा । जा, मुन्ना ! रामडु के साथ जा । जरा देख आना तो, बछड़ा क्या कर रहा है ?" माधवैया बोला ।

बछड़े का नाम सुनते ही बच्चा माधवैया की गोद से उतर गया और रामुडु का हाथ पकड़कर गोशाला की ओर चला ।

माधवैया ने आतुर होकर पुरोहित की तरफ देखा ।

त्रिपुरैया बोला, "सूर्य को विमुक्त होने में अभी सात मिनट बाकी हैं ।"

"इससे कोई दोष. . . ?" माधवैया का गला अटक गया ।

"तो क्या हुआ ? उसके निवारण के उपाय हैं । डरिए मत ! ऐसे अशुभ मुहूर्त के लिए निवारण के उपाय भी बताए गए हैं ।" त्रिपुरैया ने धीरज बंधाया । कुछ इस तरह बोला जैसे सभी प्रकार के अमंगल का उपशमन उसी के हाथ में है ।

माधवैया को इस बात का डर नहीं था कि राहु सूर्य को अपने पेट में ही छिपाकर भाग जाएगा । पुन्नम्मा के पेट में जो बच्चा है, वह सुरक्षित

रूप से बाहर आकर प्रकाश को देख पाएगा या नहीं, इसी बात का उसे डर था ।

माधवैया ने बहुत ही व्याकुल होकर पूछा, "मैं तो इस बात से डरता हूं कि ऐसे समय में पैदा होनेवाला बच्चा कहीं विकलांग न हो । मैंने सुना है कि ऐसा ही होता है ।"

त्रिपुरैया ने आंखें बन्द कर लीं । बोले, "सबकुछ उस नारायण के हाथ में है । भगवान की प्रार्थना कीजिए ।"

अपनी मिन्नतों के अनुसार लड़की हो गई, और वह विकलांग हुई, तो. . . ?

माधवैया के माथे पर पसीना आ गया । अंगोछे से पसीना पोंछते हुए, लड़खड़ाते पैरों को काबू में लाते हुए, धड़कते दिल को संभालते हुए, माधवैया कमरे के दरवाजे के पास जाकर खड़ा हो गया ।

कमरे से चांदी की थाली के बजने की, टन-टन, आवाज़ सुनाई दी । माधवैया का दिल धक-धक करने लगा ।

शिशु के रोने की आवाज़ आई । पुन्नम्मा का कराहना बन्द हो गया । पुरोहित त्रिपुरैया उठ खड़े हुए । दोनों हाथ ऊपर उठाकर मंत्रोच्चार किया । फिर माधवैया की ओर मुखातिब होकर बोले, "सूर्य भगवान को विमुक्ति मिल गई ।"

"जी हां, मुक्ति मिल गई । जच्चा और बच्चा, बिना किसी विपदा के सुरक्षित हैं," माधवैया ने मन ही मन सोचा । पर, बच्चा या बच्ची ? कोई विकलांगता तो नहीं ? हे, भगवान ! लड़का हो, तो भी कोई बात नहीं, पर विकलांग लड़की मत देना, मेरे देवता !" मन ही मन बालाजी से मन्नत मांगी ।

प्रसूति घर के दरवाजे खुल गए । एक प्रकार की अजीब गंध से भरी गर्म हवा बाहर निकली ।

माधवैया की बुआ बाहर आई । माधवैया ने बेचैन होकर उनके हाथ पकड़ लिए, और सिर्फ, "बुआ ?" ही कह पाया ।

"अरे, माधव ! लड़की हुई है रे, बेटी हुई है। सोने की गुड़िया-सी है !" बुआ ने कहा।

माधवैया का मन खुशी से उछलने लगा। अन्दर, मन में, न जाने कैसी गुदगुदी हुई, चेहरा रोशन हो गया। फिर बच्चे के रोने की आवाज़ आई। माधवैया ने यह आवाज़ एक नहीं, दो नहीं, बल्कि चार बार सुनी थी।

पर इस बार का रोना पहले से अलग लगा। अचानक माधवैया को संदेह हुआ।

"बुआ, बच्ची विकलांग तो नहीं है न ?"

बंगारम्मा ने माधवैया की ओर चकित होकर देखा, और बोली, "कैसी बातें कर रहे हो माधो। क्यों अशुभ बोलते हो ? बच्ची तो सोने की गुड़िया जैसी है।"

माधवैया कमरे के अंदर जाने लगा, तो बुआ ने टोका, "अरे, अभी रुको ! तुम अंदर नहीं जा सकते," कहती हुई बुआ अंदर गई और दरवाज़ा बन्द कर दिया।

माधवैया जल्द से जल्द पुन्नम्मा की चमकती आंखों में झांकना चाहता था। यह तो स्वाभाविक है। चार लड़कों के बाद लड़की हुई है। घर में महालक्ष्मी का आगमन हुआ। मन ही मन सोचा, "मेरे जैसा भाग्यशाली पूरे गांव में दूसरा नहीं है।"

"माधवैया जी !" पुरोहित की आवाज़ में कुछ ऐसी बात थी कि सुनकर माधवैया चौंक गया। वह तो पुरोहित को भूल ही गया था।

"बच्ची के जन्म के पांच सेकेंड के बाद ही सूर्यदेव को विमुक्ति मिली।"

"माधवैया का मन हुआ कि कहे, "सूर्यदेव की विमुक्ति की किसे चिन्ता है, जी ?"

"इसलिए, उसका जन्म काल विपदाओं से भरा है। निवारण के उपाय करने होंगे।"

"बस इतनी-सी बात है न ? बोलिए, उपशमन के लिए कितना ख़र्च होगा ? आवश्यक काम जल्दी पूरा कीजिए," कहकर माधवैया अंदर गया और पचास रुपए लाकर पुरोहित के हाथ में रख दिए।

"काफी है न ?"

"बहुत हैं। आपका हाथ खुला है।" पंचांग को हाथ में लेकर त्रिपुरैया उठ खड़ा हुआ।

"और पैसों की जरूरत पड़े तो हिचकिचाइएगा नहीं। मांग लीजिएगा !"

"आपकी उदारता के बारे में कौन नहीं जानता ? जरूरत पड़े तो और मांग लूंगा। अब इजाज़त दीजिए," त्रिपुरैया खुश होकर चला गया।

इतने में कमरे के दरवाजे खुल गए। माधवैया की बुआ बाहर आकर बोली, "अब अन्दर जा रे, माधो ! जाकर अपनी बेटी को देख ले।"

माधवैया दौड़ता हुआ कमरे में गया। आंखें फाड़कर मां और बच्ची को देखने लगा। पुन्नम्मा पति की तरफ देखकर मुसकराई। वह बड़ी कमजोर दिख रही थी। उसने संतुष्ट होकर पति की तरफ देखा, मानो अपना कर्तव्य पूरा कर दिया हो।

आज इतने दिनों बाद पत्नी की मनोकामना पूरी हो गई। कोख भरी और लड़की हुई। माधवैया ने नवजात शिशु को आंख भर देख लिया।

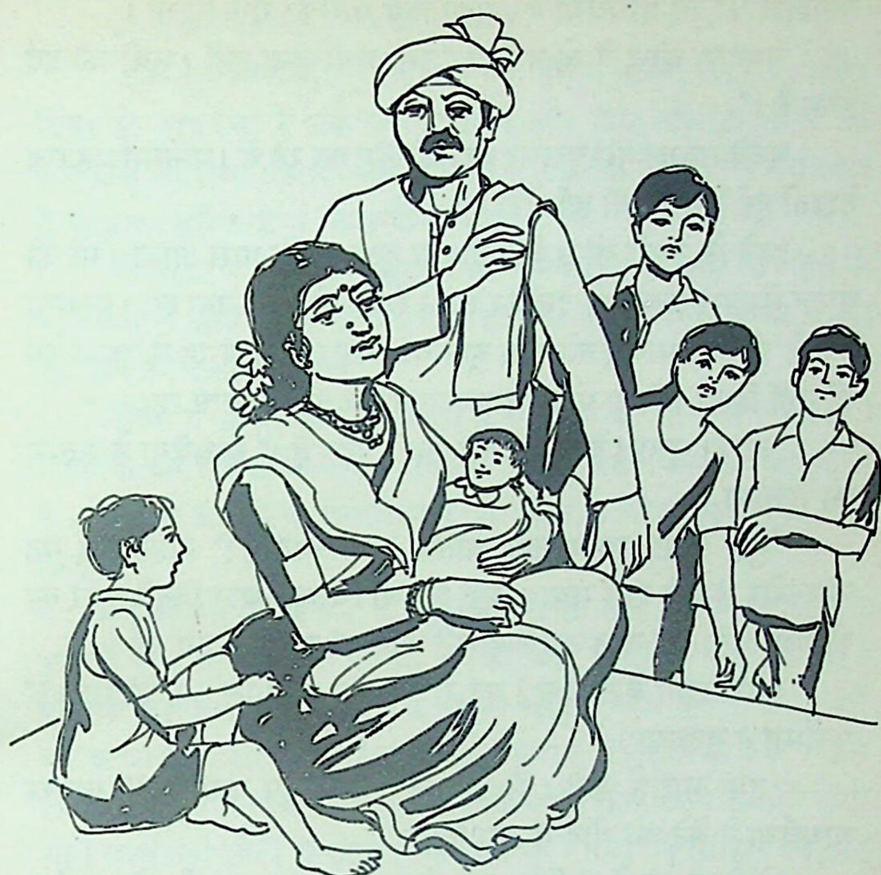
कैसी है, जी ?" पुन्नम्मा ने पूछा। आवाज़ कमजोर भले ही थी, पर उसमें खुशी की खनक थी।

अरे, सोने की गुड़िया लगती है। बिल्कुल तुम्हारे जैसी।" शरारत भरी आंखों से माधवैया ने पत्नी को देखा।

पुन्नम्मा के पीले गालों पर लालिमा दौड़ गयी। शरमाकर तकिए में चेहरा छिपा लिया।

इतने में तीनों बेटे दौड़ते हुए कमरे में आए। पलंग को घेरकर खड़े हो गए।

देखो देखो, तुम्हारी छोटी बहन है। माधवैया बोला।



"मां, बहन का नाम बालनागम्मा रखेंगे न ?" सुब्बारायुडु पलंग पर झुकता हुआ बोला।

पुन्नम्मा ने पति की तरफ देखा।

"ठीक है, मुन्नी का नाम नागम्मा रखेंगे," माधवैया ने हामी भरी।

बच्ची के चेहरे को पास से देखते हुए रामदास ने पूछा, "मां, मुन्नी ने आंखें क्यों नहीं खोली ?"

"मां, देखो तो, मुन्नी की मुट्ठियां कैसे बंधी हैं ? अरे कितने नन्हे-नन्हें पांव हैं इसके !" कहते हुए नागभूषणम् ने बच्ची के पैर पकड़ने की

कोशिश की, तो माधवैया ने उसका हाथ थामकर रोक लिया।

रामदास बीच में बोल पड़ा, "उसे अभी छूना नहीं। मुन्नी को दर्द होता है।"

बच्चे सवाल पूछ पूछकर बाप को तंग कर रहे थे। पुन्नम्मा यह सब देखती हुई, मुसकराती हुई लेटी थी।

इतने में सबसे छोटा बेटा दौड़ता हुआ मां के पास आया। मां की बगल में दूसरे बच्चे को देखकर उसने रोनी-सी सूरत बना ली। पुन्नम्मा ने लेटे ही लेटे सत्यम् को पास बुलाया। वह अपनी जगह से एक कदम भी नहीं हिला। बिना पलक झपकाए बच्ची को निहारता रहा।

"आजा मुन्ना ! देख तो, तेरी छोटी बहन है।" माधवैया ने सत्यम् को बुलाया।

"मुझे छोटी बहन नहीं चाहिए ! मां चाहिए !" कहते हुए वह जोर-जोर से रोने लग गया। उसी क्षण से उसका स्थान किसी दूसरे का हो गया था। यह बात उस नन्ही-सी जान की समझ में आ गई।

"मेरा राजा बेटा है न ! मत रो ! आजा, मेरे पास आ, मेरे राजा !" पुन्नम्मा ने बुलाया।

"तुम आराम करो। मैं उसे ले जाकर चुप कराता हूं," कहकर माधवैया ने बेटे को गोद में उठा लिया।

"मुझे तुम नहीं चाहिए। मां ही चाहिए। उस बच्ची को दूर फेंक दो !" कहकर सत्यम् शोर मचाने लगा। उसे गोद में लेकर बाहर जाते हुए माधवैया ने लड़कों से कहा, "अब तुम सब बाहर चलो।" थकी हुई पुन्नम्मा भारी पलकों को मूंदकर लेट गई।

3

माधवैया और पुन्नम्मा ने बच्ची को इक्कीसवें दिन पालने में डालने की रस्म मनायी। पूरे गांव को दावत दी। पुन्नम्मा ने सांप के बिल में दूध डाला और नागदेवता के लिए सोने का फन बनवाकर पूजा की।

बच्ची का नाम बालनागम्मा रखा।

"दीर्घ सुमंगली भव !" कहकर पुरोहित ने बच्ची को आशीर्वाद दिया तो माधवैया ने उन्हें पचास रुपए और दिए और उपशमन का कार्यक्रम करवाया। उसके बाद पुरोहित ने आश्वासन दिया कि सूर्यग्रहण के दोष का पूरी तरह से निवारण हो गया।

माधवैया ने अन्नदान किया। यह सुनकर आस-पास के गांवों से भी भिखारी आए। उन्हें भी पेट-भर खिलाया। सब संतुष्ट होकर, बच्ची को आशीष देकर चले गए।

दावत में आयी स्त्रियों ने बच्ची के मां-बाप को भाग्यशाली कहा। कहा कि चार लड़कों के बाद होनेवाली लड़की बड़ी किस्मतवाली होती है। इस शुभ अवसर पर माधवैया ने एक हज़ार से भी अधिक रुपए खर्च किए।

किसी परी की कहानी की राजकुमारी की तरह बालनागम्मा, चार भाइयों और मां-बाप की दुलारी बनकर, बड़े नाज़ों से पल रही थी। पुन्नम्मा को खुशी मनाने का बस बहाना चाहिए था। बच्ची 'ऊँ.. आँ की आवाज़ निकालने लगी तो त्योहार मनाती। घुटनों के बल चलने लगी तो खुशी मनाती थी। इसमें माधवैया को कोई आपत्ति नहीं होती थी। बच्ची की छोटी से छोटी हरकत को भी परिवार में त्योहार की तरह मनाते थे।

तीनों बड़े भाई छोटी बहन को बहुत प्यार करते थे। तरह-तरह के खेल खिलाते थे। पर छोटा मौक़ा मिले तो उसे मारता या उसकी चुटकी काट लेता। जब वह रोने लगती तो भाग जाता। एक दो बार सत्यम् मां से पिट भी चुका था।

मां-बाप के हाथों में पली बालनागम्मा पांच साल की हो गई। पुन्नम्मा ने रत्तय्या मास्टर को बुलवाया और बेटी का अक्षरारंभ करवाया। उस दिन स्कूल के सभी बच्चों को स्लेट और पेंसिल दिए गए। बालनागम्मा ने रेशमी लहंगा पहना था जो चलते समय उसके पैरों के

नीचे आ रहा था। हाथ में स्लेट लेकर, रत्तय्या मास्टर का हाथ पकड़कर बालनागम्मा स्कूल को चली। उसे उस रूप में देखकर पुन्नम्मा फूली नहीं समायी।

दोपहर को, खेत से लौटते वक्त बड़ा भाई सुब्बारायुडु स्कूल जाकर सोती हुई बालनागम्मा को गोद में उठाकर घर ले आता था।

"मां, बाला को ज़रा देखो तो ! कैसे थककर सो रही है ?"

"मेरी रानी बिटिया, कैसी मुरझा गई है ! बस, अपना शौक पूरा करने के लिए स्कूल भेजा था। रोज-रोज इस तरह स्कूल जाकर उसे कष्ट होगा तो मुझसे देखा नहीं जाएगा। पढ़ लिखकर क्या करेगी ? उससे नौकरी तो करवानी नहीं है न ? उसे क्या कमी है ? चार भाइयों की इकलौती बहन है।" पुन्नम्मा ने प्यार से बेटी को निहारते हुए कहा।

"बाला आ गई ?" कहकर माधवैया ने सोती हुई बच्ची को चूम लिया।

"हटिए जी ! कितनी बार बता चुकी हूं कि सोते हुए बच्चे को चूमना नहीं चाहिए ? आप तो सुनते ही नहीं।" धीमे स्वर में उसने पति से कहा।

"मुझे और बड़के को खाना दो। खालियान पर जाना है," कहकर माधवैया ने पैर धोए और चौकी पर बैठ गया।

थालियां धोने के लिए आंगन में जाते हुए पुन्नम्मा ने पूछा, "रामदास नहीं आया ?"

"अगर वह भी आ जाता तो बेचारा छोटा खलिहान में अकेले कितना कर पाएगा ? हम जाकर उसे भेज देंगे।"

बड़ा सुब्बारायुडु और दूसरा रामदास अब बच्चे नहीं रहे। खेती के काम में माधवैया का हाथ बंटाने लगे। तीसरे ने थर्ड फार्म तक पढ़कर पढ़ाई छोड़ दी। पर उसे खेत जाना, शारीरिक श्रम करना अच्छा नहीं लगता था। बड़ा आलसी था। दोस्तों के साथ गांव भर में घूमना पसन्द करता था। बाप की डांट से डरता था, पर माधवैया ने खुद उसे आज़ादी दे रखी थी। कहता था, "अभी बच्चा है। जरा खेल-कूद कर लेने दो।"

चौथा बेटा सत्यम् सेकंड फार्म में था। बड़ा तेज था। स्कूल में हर साल फर्स्ट प्राइज़ पाता था।

पुन्नम्मा ने खाना परोसा। माधवैया और सुब्बारायुडु खा रहे थे। पुन्नम्मा सामने बैठी उन्हें व्यंजन परोस रही थी।

"सुनिए जी ! आप छोटे की तरफ बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहे हैं। उसके तौर-तरीके मुझे बिल्कुल अच्छे नहीं लगते।" पति को दाल परोसते हुए पुन्नम्मा बोली। वह नागभूषणम् को 'छोटा' और सत्यम् को 'नन्हा' कहती थी।

"एक दो साल में जिम्मेदारी समझने लगेगा। इन दोनों को क्या मैंने ही समझाया था ? इनको बचपन से ही खेतीबाड़ी में दिलचस्पी थी। पर छोटे का मिजाज़ ही कुछ अलग है," माधवैया ने कहा।

"अच्छा, सत्यम् नहीं आया ? दोपहर का खाना खाने घर नहीं आता है क्या ?" माधवैया ने पूछा।

"आज स्कूल में कोई उत्सव है। शाम को किसी नाटक में वह भाग लेनेवाला है। बाला को छोटे के साथ स्कूल भेजने को कह गया है," पुन्नम्मा ने जवाब दिया।

सुब्बारायुडु चावल में दही डालते हुए बोला, "सत्यम् को आगे खूब पढ़ाएंगे, बाबूजी। जब भी रत्तय्या मास्टर मिलते हैं, कहते हैं कि सत्यम् पढ़लिखकर बड़ा आदमी बनेगा।"

"अगर वह पढ़ना चाहे तो मैं उसे जरूर पढ़ाऊंगा। तुम लोगों में से किसी को भी पढ़ाई का शौक नहीं था।"

पति की थाली में दही डालते हुए, पुन्नम्मा बोली, "मेरा बेटा कितना होशियार है। कभी-कभी डर लगता है कि किसीकी नज़र न लगे। पढ़-लिखकर कलेक्टर बनेगा, आप देखना।"

माधवैया मुसकराया।

"सच कहा, मां ! हमारा सत्यम् बड़ा आदमी बनेगा," सुब्बारायुडु ने कहा।

"हमारी नागम्मा क़िस्मतवाली है। वह कलेक्टर की बहन बनेगी। वह भी उसे बहुत चाहता है। छोटा था तब उसे बहुत सताता था, पर अब तो वह उसे जान से भी ज्यादा प्यारी है," पुन्नम्मा आनन्दविभोर होकर बोली।

"हां, बचपन में वह उसे कभी चैन से जीने नहीं देता था। अब उसके लिए जान भी देने को तैयार है," माधवैया बोला।

"अरे, भूल ही गई! न जाने मेरे दिमाग़ को क्या हो गया। बसवैया जी की पत्नी, सुन्दरम्मा आई थी।"

पत्नी की बात सुनकर माधवैया ने पूछा, "क्यों?"

"रामैया की पत्नी ने उसे हमारे घर बड़के की शादी के बारे में पता करने के लिए भेजा।"

माधवैया को बात समझ में नहीं आई।

"आप समझे नहीं? सुंदररामैया की दूसरी बेटी बड़ी होकर घर में बैठी है न, उसकी बात चलाने आई थी।"

सुब्बारायुडु हाथ धोकर उठ गया।

"क्या हुआ रे, सुब्बुलू। खाना छोड़कर क्यों उठ गया?" पुन्नम्मा ने पूछा। तब तक सुब्बारायुडु वहां से जा चुका था।

माधवैया ने पुन्नम्मा की ओर ऐसे देखा, मानो कह रहा हो, 'समझी?'

"पूरब की दिशा में खेत में से छह एकड़ जमीन बेटी को दहेज में दे रहे हैं।"

"बस, रहने दो। फिर कभी इस बात का जिक्र न करना।" माधवैया ने फटकार दिया।

पुन्नम्मा की समझ में कुछ भी नहीं आया। वह हतप्रभ रह गई।

"ऐसी काली-कलूटी लड़की को बहू बनाओगी? बहू काली होगी तो पूरा वंश काला होगा," माधवैया ने समझाया।

"आप यह कैसी बातें कर रहे हैं? लड़की जरा-सी काली हुई तो

क्या हुआ ? गोरेपन का क्या अचार डालना है ?"

"तुम नहीं समझोगी । जानती हो, सुब्बुलू क्यों खाना छोड़कर चला गया ? वह इस लड़की से शादी नहीं करना चाहता ।"

"बच्चा है, वह भला-बुरा क्या जाने, भला ? लड़की का परिवार अच्छा है । अपने ही गांव के लोग हैं । कभी हमारे काम आ सकते हैं ।"

"अच्छा ! अब तुम्हें इस गांव में सहारे की कमी है क्या ? लेकिन, अभी उसकी शादी की क्या जल्दी है ? अगले साल देखा जाएगा । देखती रहो, तेरे लिए गुड़िया-सी बहू ला दूंगा ।" माधवैया हाथ धोकर उठ गया ।

पुन्नम्मा सोच में डूबी बैठी रही ।

4

नागम्मा की उम्र के साथ घर का खर्चा भी बढ़ता गया । गांव में जो भी नए कपड़े बेचनेवाला आता, उसे बुलाकर पुन्नम्मा बेटी के लिए कपड़ा ख़रीदती थी ।

नागम्मा, जब उसका जी चाहे स्कूल जाती थी । एक दिन में ही पूरे हफ्ते के पाठ पढ़ लेती थी । रत्तय्या मास्टर कहते थे कि नागम्मा बड़ी होशियार है । जब भी मास्टर घर आते तो नागम्मा की तारीफ़ों का पुल बांध देते थे । पुन्नम्मा यह सुनकर इतना खुश हो जाती थी कि उन्हें कभी खाली हाथ नहीं भेजती थी ।

गांव में रामशास्त्री ने संस्कृत पाठशाला खोली । माधवैया ने नागम्मा को वहां संस्कृत की शिक्षा दिलवायी । नागम्मा कहां तक संस्कृत सीख पाई यह तो ठीक तरह से कहा नहीं जा सकता ।

अगले साल पुन्नम्मा ने सुना कि साहुकार वेंकैया जी की इकलौती बेटी को गुंटूरू से एक मास्टर आकर संगीत सिखा रहे हैं । हफ्ते में तीन दिन वे इनके गांव आते थे । पुन्नम्मा ने बेटी को हारमोनियम सिखाने के लिए उसी मास्टर को नियुक्त किया । मास्टर आधा घंटा संगीत सिखाते

और आंधा घंटा नागम्मा की आवाज़ की और गाने की तारीफ़ करते ।

पुन्नम्मा की कमज़ोरी भांपकर मास्टर ने उसका खूब फायदा उठाया । वे कभी भी पुन्नम्मा के घर से खाली हाथ नहीं लौटते थे ।

नागम्मा को किसी भी विद्या में सफलता नहीं मिली । लेकिन अपनी बेटी को गांव की अन्य लड़कियों की तुलना में पुन्नम्मा ने सबसे आगे लाकर खड़ा कर दिया ।

हम यह नहीं कह सकते कि माधवैया और पुन्नम्मा ने अपने बेटों के लिए कुछ भी नहीं किया ।

माधवैया ने बड़े बेटे की शादी खूब धूमधाम से की । लड़के को तीन हज़ार रुपये और दो एकड़ जमीन दहेज में दिया गया । लड़की सुन्दर थी । पर लगा कि ज़रा ज़्यादा बोलती है ।

दूसरे और तीसरे बेटे के लिए भी रिश्ते आने लगे । छोटा सत्यनारायणा गुंटूरू में इंटर फाइनल में पढ़ रहा था ।

नागम्मा सात साल की हो गई । तब तक जमा पूंजी में से आधा खर्च हो गया । सुब्बारायुडु की शादी के बाद कुछ भी नहीं बचा ।

नागम्मा के ग्यारह साल की होने तक तो हालत ऐसी हो गई कि कर्ज़ भी लेना जरूरी हो गया ।

ननद के लिए पैसे खर्च किए जाते तो नागरत्नम का बदन जल उठता था । परन्तु जानती थी कि सुब्बारायुडु के सामने उसकी बहन के ख़िलाफ़ एक भी शब्द मुंह से नहीं निकाल सकती । अंदर ही अंदर जल-भुनकर रह जाती थी ।

5

देखते ही देखते समय निकल गया ।

नागम्मा चौदह साल की हो गई । गोरा-चिट्टा रंग, सुन्दर चेहरा, बड़ी-बड़ी चमकती आंखें, भौरों के समूह के समान काले बाल, मुसकराते होंठ, फूल-से गुलाबी गाल, हंस जैसी चाल... । नागम्मा बड़ी रूपवती थी ।

माधवैया को बेटी की शादी की चिन्ता होने लगी। वह योग्य वर ढूंढ़ने लगा।

माधवैया ने दूसरे और तीसरे बेटे की शादी कर दी थी। दोनों की पत्नियां सगी बहनें थीं। बहुत अमीर तो नहीं थे, पर परिवार अच्छा था। इसीलिए दहेज में चालीस एकड़ की जगह पैंतीस एकड़ जमीन लेने के लिए माधवैया राजी हो गया था।

सबसे छोटा सत्यनारायणा बी.ए. पूरा किए बिना ही राजनीति के कार्यों में उतर गया। पता नहीं कहां घूमता रहता था। अचानक आंधी की तरह आता था। दो दिन हलचल मचाकर, जाते जाते कुछ पैसा लेकर चला जाता।

घर आता तो छोटी बहन के साथ खेलते हुए बच्चा बन जाता। भाभियों से मजाक-शरारत करता। हंसता, हंसाता। ऐसा भोला-भाला, बच्चों जैसा, सत्यम् राजनीति के क्षेत्र में क्या करता होगा, बहुत सोचने पर भी माधवैया की समझ में यह बात नहीं आई।

माधवैया ने बेटे को समझाया बुझाया। 'खूब पढ़-लिखकर कलेक्टर बनेगा।' यही उस मां-बाप की उम्मीद थी। 'पर यह तो नाकाम होकर, निरर्थक काम करते हुए समय बरबाद कर रहा है।' इससे वे दोनों बहुत चिन्तित थे पर पुन्नम्मा ही माधवैया को तसल्ली देती थी। उसे विश्वास था कि एक दिन सत्यम् जरूर बड़ा आदमी बनेगा। "कलेक्टर नहीं हुआ तो क्या, मंत्री बन जाएगा।" ऐसा सोचकर तसल्ली कर लेती थी। जब यह बात पति से कहती तो माधवैया मुसकरा देता था।

नागम्मा मां-बाप की बातें सुनती थी और मन ही मन खुश हो जाती थी कि भैया जरूर मंत्री बन जाएगा।

बालनागम्मा उस घर में रानी बनकर रहती थी।

परी या देवी की तरह उसकी देखभाल की जाती थी।

घर में सब्जी भी नागम्मा की पसंद को ध्यान में रखकर बनाई जाती थी। नागम्मा की शान देखकर बहुओं का मन जलता था। पर कुछ कहने

की उनमें हिम्मत नहीं थी । अपने मन का गुबार वे तीनों आपस में खुसुर-पुसुर करके निकालती थीं ।

एक दिन बड़ी भाभी, नागरत्नम् ने नागम्मा से कहा, "नागम्मा ! जरा देखना, मुन्ना रो रहा है । मेरा हाथ खाली नहीं है, जरा उसे गोदी में लेना ।"

पुन्नम्मा वहीं बैठी थी, बोली, "यह क्या ? ननद को नागम्मा कहकर बुलाती हो ?"

नागरत्नम की समझ में नहीं आया कि उससे क्या गल्ती हो गई । क्या जवाब दे कुछ नहीं सूझा, फिर संभलकर बोली, "नाम तो नागम्मा ही है न । फिर कैसे बुलाऊं ?" इतने दिन तक मन में जो द्वेष था, बाहर निकल गया ।

"हमारे घरों में ननद को नाम लेकर बुलाने का रिवाज नहीं है । ननद को पति का-सा आदर देना होता है ।"

"अभी तक तो ऐसे ही बुलाती थी । आज अचानक क्या हो गया ?" नागरत्नम् ने धीमी आवाज़ में कहा ।

"बच्ची थी, तब ठीक था । अब वह बड़ी हो गई है ।"

"नागम्मा जी ! बुलाऊं क्या ?" नागरत्नम् ने व्यंग्य से पूछा ।

बहू पहले कभी उसके सामने मुंह नहीं खोलती थी । आज इस प्रकार की बातें सुनकर पुन्नम्मा हैरान रह गई उसे दुख भी बहुत हुआ । नागरत्नम् का मुंह चलता जरूर था, पर सास के सामने अब तक इस प्रकार उसने कभी मुंह नहीं खोला था ।

"ननदी कहकर बुलाना ।" पुन्नम्मा कड़ककर बोली ।

"हूं ! कहकर नागरत्नम् वहां से जल्दी-जल्दी चली गई । छोटी बहू सुन्दरम्मा खिड़की में से देख रही थी । जेठानी की हिम्मत देखकर बहुत खुश हुई ।

"क्या है मां ? वह इस तरह भागकर क्यों जा रही है ?" सुब्बारायुडु ने पूछा । वह तभी खेत से घर लौटा था ।

"कुछ नहीं रे, पिताजी अभी लौटे नहीं ?" पुन्नम्मा ने मुसकराकर पूछा । वह मन ही मन यह सोचकर खुश हुई कि उसके बेटे अन्य लड़कों की तरह नहीं हैं ।

"पिताजी अभी आ रहे हैं," यह कहकर पैने को कोने में रखा और अंदर चला गया । सुब्बारायुडु जानता था कि उसकी पत्नी की ज़बान बहुत चलती है । थोड़ी भी छूट देने से घर की शांति भंग हो जाएगी । यह बात उसने शादी होते ही भांप ली थी । इसीलिए पत्नी को क़ाबू में रखता था ।

नागरत्नम पति से बहुत डरती थी । वह जानती थी कि अगर उसने गुस्सा दिलाया तो पति पैना हाथ में लेकर उसकी ओर दौड़ेगा । अगर ऐसा होता तो देवरानियों के सामने नाक कट जाएगी । इसलिए पति जब घर में रहता तो वह बहुत सावधान रहती ।

उस रात पुन्नम्मा ने पति से कहा, "सुनो जी ! आप बेटी के बारे में बहुत बेफ़िक्र हैं । कुछ कीजिए न ?"

पत्नी की बातों का मतलब माधवैया की समझ में नहीं आया । वह बेटी के बारे में बेफ़िक्र कैसे है ? अगर बेटी की उसे फिक्र नहीं है तो इस दुनिया में कोई किसी की फ़िक्र कैसे कर सकता है ?

"अजी, आप समझे नहीं । बेटी शादी के लायक हो गई है । अभी से वर ढूंढ़ना शुरू कीजिए !"

"अच्छा, यह बात है ?" माधवैया के मन का भार हल्का हो गया ।

"इस तरह हंसकर मत टालिए। बैसाख में चौदह साल पूरे हो जाएंगे ।"

रसोईघर की सफ़ाई करके छोटी बहू अपने कमरे में जा रही थी । उसने सास की बातें सुनी, तो ठिठक गई । जब दो लोग बातें कर रहे होते, तो छिपकर सुनने की सुन्दरम्मा की आदत थी ।

"हां, मैंने तो ध्यान ही नहीं दिया ।" माधवैया ने कहा । वह हैरान

था कि अब तक उसने इस के बारे में क्यों नहीं सोचा ?

पुन्नम्मा ने कहा, "गांव में ही कोई लड़का मिल जाए तो अच्छा होगा। लड़की हमारी आंखों के सामने रहेगी।"

"ख़याल अच्छा है, पर मिलना चाहिए न ?"

"भद्रय्या का दूसरा लड़का..."

"उस अहमक के साथ ? पागल तो नहीं हो गई हो ? लड़की आंखों के सामने रहे, इसके लिए तुम उसकी ज़िंदगी बरबाद कर दोगी ?" माधवैया झुंझला उठा।

"मैंने ऐसा कब कहा ? मेरी बच्ची के सुख से ज्यादा मुझे और क्या चाहिए ?"

"ठीक है, रहने दो। कुछ कहने से रो देती हो। अच्छा देखेंगे, गांव में ही शायद कोई लड़का मिल जाए।" माधवैया ने कहा।

"नहीं ! नहीं ! बिटिया के लिए अच्छा वर ढूंढिए। ज्यादा पैसेवाला नहीं है, तो भी चलेगा। हमारे पास जो है, वही बहुत है। घर जमाई मिल जाए तो और भी अच्छा।" पुन्नम्मा बोली।

"घर जमाई चाहिए तुम्हें ?" माधवैया सोच में पड़ गया।

सुन्दरम्मा ने छुपकर इन दोनों की सारी बातें सुनने की कोशिश की। पर जैसा हमेशा होता है। सारी बातें उसे स्पष्ट सुनाई नहीं दी। ऐसा लग रहा था कि जो फिल्म वह देख रही थी उसकी रील बीच-बीच में टूटती जा रही है। वह खीज गई। पर जो सबसे प्रमुख बात थी, 'घर जमाई', वह उसने सुन ली।

सुन्दरम्मा को जैसे बिजली का झटका लगा। सोच रही थी कि ननद शादी करके अपने घर चली जाएगी तो घर का ख़र्च कुछ कम होगा। पर इस तरह तो ज़िन्दगी भर उसे सहना पड़ जाएगा। सुन्दरम्मा जल्दी-जल्दी भागकर, जेठानियों को यह खबर सुनाने के लिए पिछवाड़े में गई।

तीनों ने खुसुर-पुसर की और छाती पीट ली।

6

बालनागम्मा के लिए कई रिश्ते आए। रिश्ते अच्छे थे। परन्तु सब की एक राय नहीं थी। सुब्बारायुडु को यह बिल्कुल पसन्द नहीं था कि नागम्मा का पति घर जमाई बनकर आए। एक दिन नागभूषणम् ने बड़े भाई से कहा, "यह क्या है भैया ! बाबूजी तो सठिया गए हैं। तुम्हारी बुद्धि को क्या हो गया ? घर में चार-चार बेटे हैं, कोई दामाद को घर जमाई बनाकर ले आता है क्या ?" वह समझ गया कि छोटे भाई की इन बातों के पीछे सुन्दरम्मा का हाथ है। हां, उसकी पत्नी भी यही कहनेवाली थी। उसके चेहरे पर ग़ुस्सा देखकर चुप हो गई।

"तुम पिताजी से क्यों नहीं कहते ?" नागभूषणम् ने फिर कहा। "क्या कहूं बोलो ? इतने बड़े हो गए हैं। उन्हें खुद मालूम होना चाहिए।" सुब्बारायुडु ने जवाब दिया। माधवैया तभी अन्दर आया। बेटों ने उसे नहीं देखा। उसने बेटों को नहीं देखा। उल्टे पांव बाहर निकल गया। पिता को देखकर बेटे घबरा गए।

माधवैया सोच में पड़ गया। हां, मेरी बुद्धि घास चरने गई थी। बेटे बड़े हो गए। मेरे बराबर के हो गए। कमाऊ हो गए हैं। उनकी पसंद-नापसंद जानना भी जरूरी है। उस दिन से घर-जमाई लाने की बात उसने मन से निकाल दी।

पुन्नम्मा ने पति को बताया कि बेटी पढ़ा-लिखा लड़का चाहती है। फिर माधवैया सोचने लग गया। पढ़ा-लिखा दामाद मिलना क्या इतना आसान है ? बहुत दहेज देना पड़ेगा। क्या वह इतना पैसा देकर ऐसा दामाद खरीद पाएगा ?

माधवैया लड़कों की तलाश में लग गया। शाम घिर रही थी। माधवैया थककर घर लौटा। आंगन में चारपाई डालकर उसपर अंगोछा बिछाकर बैठ गया। पुन्नम्मा पानी ले आई। गट-गट पानी पीकर लोटा पुन्नम्मा को दे दिया। लोटा लेते हुए उसने पति के चेहरे को देखा।

"क्या हुआ ? आप उदास क्यों हैं ? क्या यह रिश्ता भी हाथ से

निकल गया ?" पुन्नम्मा ने बड़ी आतुरता से पूछा ।

"हां, बात नहीं बनी" माधवैया की आवाज़ में हताशा थी ।

"क्यों ? लड़का अच्छा नहीं है ?"

"लड़के का क्या, बड़ा अच्छा है । एम.ए की परीक्षा दे चुका है । हमारे बस की बात नहीं है ।"

"क्या मतलब ?"

"इतना दहेज हम नहीं दे पाएंगे । पच्चीस हज़ार से एक पाई भी कम लेने के लिए राजी नहीं हैं ।" पुन्नम्मा के चेहरे का रंग उड़ गया । "नहाने के लिए पानी रखो ।" कहकर माधवैया उठ खड़ा हुआ । वह नहाकर आया । पुन्नम्मा ने खाना परोसा और पति के सामने बैठ गई । बहुत कुछ पूछना चाहती थी । पूछ नहीं पा रही थी । खाना खाकर माधवैया ने हाथ धोए । हाथ पोंछने के लिए तौलिया देते हुए पुन्नम्मा ने पूछा, "क्यों जी । क्या सोचा ?"

"सोचने के लिए क्या है ? पच्चीस हजार कहां से लाऊं ?" हाथ पोंछता हुआ माधवैया बोला ।

"अच्छा रिश्ता है । हाथ से जाने देंगे ? हमारे तो एक ही बेटी है, दस-बीस तो नहीं ।" पुन्नम्मा ने दबी आवाज़ में कहा ।

माधवैया सो नहीं पा रहा था । कई विचार दिमाग़ को खाए जा रहे थे । पच्चीस हज़ार कहां से लाए ? कम से कम पांच एकड़ बेचने पड़ेंगे । कोई और रास्ता नहीं । रानी बिटिया के लिए इतना तो करना ही पड़ेगा ।

नागरत्नम् ने सास-ससुर की बातें सुनीं । देवरानियों को ख़बर पहुंचाई । तीनों ने छाती पीटते हुए सास-ससुर के साथ ननद को भी गालियां दीं ।

"उसकी शादी मिट्टी में मिल जाए ।" नागरत्नम् अपने हाथ नचाते हुए बोली । "इतने लोगों को दुःखी करके वह खुश कैसे रह सकेगी" छोटी बहू ने कहा । "अगर हमारे मर्द होशियार होते तो ऐसी नौबत ही नहीं आती । ये तो मिट्टी के माधो हैं । मां-बाप के सामने इनका कुछ भी

नहीं चलता।" दूसरी बहू ने दांत पीस लिए।

उस रात को कमरे में जाते ही नागरत्नम् ने सोते हुए बच्चे को जगाकर चार थप्पड़ लगा दिए। वह जोर से रोने लग गया। नागरत्नम् उसे कोसने लगी।

"यह क्या शोर मचा रखा है? क्यों उसे मार रही हो? ये गालियां कैसी? क्या हो गया है तुम्हें?" सुब्बारायुडु जानता था कि असली गुस्सा तो उस पर ही है। फिर भी पूछा।

"मैं जो भी करूं तुम्हें अच्छा नहीं लगता। तुम्हारा बाप मेरे बच्चों को कंगाल बनाकर छोड़ना चाहता है। पच्चीस हजार लुटाकर तुम्हारी बहन के लिए दूल्हा ख़रीदने जा रहा है।"

"चुप रहो।" सुब्बारायुडु गरज उठा। नागरत्नम् चुप हो गई।

साथ के कमरे में दूसरी बहू पति से कह रही थी, "तुम्हारा बाप तुम्हें संन्यासी बनाकर छोड़ेगा।" रामदास कुछ समझा नहीं। "नहीं समझ में आया क्या?" दुबारा पूछा। 'नहीं' कहकर उसने सिर हिलाया।

"पच्चीस हजार रुपए दहेज में देकर तुम्हारी बहन की शादी रचानेवाले हैं।" रामदास का मुंह खुला का खुला रह गया। वह पत्नी की ओर देखने लगा। "हिम्मत हो तो अपना हिस्सा मांगकर देखो", कमला ने कहा। "ठीक है, मांग लूंगा", रामदास धीरे से बोला।

"क्या जोर से बोल नहीं सकते? बेटों को भिखारी बनानेवाले मां-बाप को इसी घर में देख रही हूं। तुम अलग घर बसाने के लिए तैयार हो या नहीं, बोलो। अगर नहीं कर सकते तो बता दो, मैं मायके चली जाती हूं।"

रामदास घबरा गया कि पत्नी सचमुच चली जाएगी। डरते-डरते बोला, "तुम घबराओ मत, कल ही इसका फ़ैसला कर दूंगा।"

उसके बगलवाले कमरे में नागभूषणम् पलंग पर बैठा पत्नी को देख रहा था। वह अपना बक्सा ठीक कर रही थी। वह नाटकीय ढंग से बोला,

"भामा ! सत्या ! सत्यभामा ! बोल मेरी प्रिये ।"

पत्नी गुस्से से लाल-पीली हो रही थी । उसने सिर उठाकर देखा ।

"क्यों प्रिये, इस कदर नाराज़ क्यों ? मेरा अपराध क्या है, जरा बताओ ना !"

"यह मसकरी रहने दो ! बस करो !"

"सत्यभामा के क्रोध का कारण क्या है भला ?"

"आपको मज़ाक सूझ रहा है ? आपकी बहन के लिए पच्चीस हज़ार रुपए देकर पति ख़रीदा जा रहा है ।"

"बस, इतनी-सी बात है ? क्यों सुन्दरी तुम्हारे मां-बाप ने बारह हज़ार रुपयों में मुझे भी तो तेरे लिए मोल लिया था ।"

"हमसे मुक़ाबला करते हो ? मेरे मां-बाप ने जमीन बेचकर दामाद नहीं खरीदा । इतने गए-गुज़रे नहीं हैं ।"

"अच्छा ! और क्या समाचार है ?"

"वह नागम्मा देवी तो इस घर को बरबाद करने के लिए ही जन्मी है ।" बात खत्म होने से पहले ही सुन्दरम्मा के गाल पर तमाचा पड़ा । उसकी आंखों के सामने अंधेरा छाने लगा ।

"नागम्मा मेरी बहन है, याद रखना ।" कहकर, पलंग से उतर नागभूषणम् बाहर चला गया ।

7

नागम्मा की शादी पक्की हो गई । अपनी बेटी के प्रति माधवैया का यह अंतिम कर्तव्य था । वह भी संतोषजनक तरीके से पूरा हो गया । वेंकट्राव विशाखपट्नम में एम.ए. में पढ़ रहा था । पच्चीस हज़ार दहेज देकर शादी करने की बात निश्चित हो गई । शादी के इंतज़ाम शुरू कर दिए गए । पुन्नम्मा की खुशी का पार नहीं था । माधवैया पांच एकड़ ज़मीन बेचने के लिए मोल-भाव करने लगा । घर में ऊधम मच गया । बहुएं नाराज़ थीं । बेटे असंतुष्ट थे ।

अचानक, बिन बादल बरसात की तरह, सत्यनारायणा आ गया। वह यह सुनकर खुश था कि उसकी बहन की शादी एक पढ़े-लिखे युवक के साथ हो रही है। बड़ा खुश नजर आ रहा था। पर जब किसी ने उसके बारे में जानना चाहा कि वह कहां रहता है, क्या करता है, तो जवाब में मुसकरा दिया।

सत्यम् खाना खा रहा था। बहन परोस रही थी। अचानक पूछ बैठी, "भैया, तुम शहर में क्या करते हो ?" सत्यम् ने सिर उठाकर देखा।

"नौकरी करते हो ? कितना कमाते हो ?" उसने फिर पूछा।

"नहीं मुन्नी। मैं नौकरी नहीं करता। एक सियासी पार्टी में काम करता हूं।"

"मतलब ?"

"इसका मतलब है... देश के लिए काम करना। ऐसे दिन के लिए जब सबको समान हक प्राप्त हों... तुम्हारी समझ में नहीं आएगा, यह सब।" उसे मालूम नहीं हुआ कि बहन को किस प्रकार समझाया जाए।

"वेतन कितना पाते हो ?"

"मेरी ज़रूरतें पूरी हो जाती हैं।"

"कलेक्टर का काम करने वाले को कितने पैसे मिलते हैं ?"

"अच्छा यह बात है ? शायद तुम्हारा होने वाला पति कलेक्टर बनने वाला है।"

"जाओ भैया। तुम बड़े वो हो।"

पुन्नम्मा ने बड़े प्रेम से बेटी को निहारा।

"क्यों बहन, अगर मुझे पुलिस पकड़कर ले गई तो अपने पति से कहकर छुड़वा दोगी न ?" सत्यम् ने हंसते हुए पूछा।

"कैसी बातें करते हो बेटे ! तुझे पुलिस क्यों पकड़ेगी ? तुम क्या कोई चोर हो ? हत्यारे हो ? बकवास मत कर," मां ने डांट दिया।

आंगन में सुब्बारायुडु हल में बैलों को बांध रहा था। माधवैया बेटे के पास आया और बोला, "दस्तावेज़ पर दस्तख़त करने हैं। दोपहर को

रजिस्ट्रार आफिस आ जाना ।" सुब्बारायुडु ने बात सुनी थी पर अनसुनी करके अपने काम में लगा रहा ।

"तुझसे बात कर रहा हूं । सुनाई नहीं देता है क्या ? दोपहर को रजिस्ट्रार आफिस आ जाना ।" माधवैया जोर से बोला ।

सुब्बारायुडु की आवाज में झुंझलाहट थी, बोला, "ठीक है, आ जाऊंगा ।" नागरत्लम्मा चौखट पर खड़ी थी । पति का जवाब सुनकर, "अहमक" कहती हुई अंदर चली गयी ।

रामदास हल में बैल जोतने में भाई की मदद कर रहा था । वह चुप रह गया मानो इस विषय में उसे कोई दिलचस्पी नहीं । मौका देखकर वहां से निकलने की कोशिश कर रहा था ।

"तुझे भी दोपहर को आना होगा ।"

"कहां ?" पूछकर रामदास तनकर खड़ा हो गया । पहले कभी वह बाप के सामने इस तरह खड़ा नहीं होता था ।

"और कहां ? रजिस्ट्रार के दफ़तर में ।"

"किसलिए ?" बात करने में अशिष्टता थी । बाप ने एक पल के लिए बेटे की तरफ देखा । "किसलिए क्या ? दस्तख़त करना होगा ।"

"मैं नहीं करूंगा । पहले मेरा हिस्सा बांटकर दे दो । मैं अलग घर बसाने जा रहा हूं," पत्नी ने जो पाठ रटाया, उसने दोहराया । बाप भौंचक्का रह गया । सुब्बारायुडु एकटक देखता रह गया । खिड़की के पास खड़ी कमला पति की हिम्मत देखकर खिल गई । जेठानी की तरफ ऐसे देखा मानो कह रही हो, "देखा, मुझमें कितनी हिम्मत है ।" उसके चेहरे पर तेज था । नागरत्लम का सिर नीचा हो गया ।

नागभूषणम भी वहां आ गया था । बोला, "हां, पिताजी । रामदास की बात मान लीजिए । सबको अपना-अपना हिस्सा दे दो तो झगड़ा ही मिट जाएगा ।"

खाना खाकर बाहर जाते हुए सत्यम् ये बातें सुनकर ठिठक गया और बोला, "क्या है भैया ? बांटना क्या है ? क्या पागल हो गए हो ?

अभी बंटवारा करने की ऐसी क्या जल्दी आ पड़ी है ?"

"फिर क्या करें ? सब कुछ लूटकर दिए जा रहे हैं तो चुपचाप देखता रहूं ? तुम्हारा क्या जाता है, तुम तो कहोगे ही ! तुम्हारा न घर है न बार !"

सत्यम् का पारा चढ़ गया । वह पिता के सामने जा खड़ा हुआ और बोला, "बंटवारा कर दीजिए पिताजी ! क्या सोच रहे हैं ? हमारे साथ बहन को भी उसका हिस्सा दे दीजिए । वह भी तो हमारी तरह इस घर की बेटी है । उसे भी हक है । औरतों को जायदाद में हिस्सा नहीं दिया जाता इसीलिए तो दहेज जैसी बुराई अभी तक जीवित है । सबका हिस्सा बांट दीजिए और मेरे हिस्से में जो आता है, वह भी बहन को दे दीजिए ।"

"तुम नाराज़ मत होना भैया," नागम्मा की आवाज में दुःख था । आंगन में खड़े तीनों भाई घूमकर बहन को देखने लगे । उसका चेहरा देखकर नागभूषणम् कमजोर पड़ गया । रामदास का गुस्सा ठंडा हो गया । सुब्बारायुडु का मन किया कि दोनों भाइयों को चाबुक से ख़ूब मारे ।

"क्या रे, क्या हुआ ?" कहती हुई पुन्नम्मा बाहर आई । वह गीले हाथ अपने आंचल में पोंछ रही थी ।

"कुछ नहीं मां । ठीक है पिताजी, दफ़तर पहुंच जाऊंगा," कहते हुए नागभूषणम बाहर निकल गया ।

"कितने बजे आना है ? एक बजे आने से ठीक रहेगा ?" पूछकर रामदास जाकर सुब्बारायुडु की बगल में खड़ा हो गया । दोनों हल-बैल लेकर खेत को चले गए । पुन्नम्मा खाने के लिए बुलाती रही, पर उसे अनसुनी करके माधवैया बाहर चला गया । सत्यम् बहन को घर के अंदर ले गया ।

छुपकर तीनों बहुएं सारा तमाशा देखती रहीं । जब सब चले गए, तो वे भी घर के पिछवाड़े में चली गईं ।

"सब एक ही थाली के चट्टे-बट्टे हैं । मां-बाप के सामने चूहे बन जाते हैं ।" छोटी बहू ने मुंह बनाकर कहा । "जो आवारा की तरह घूमता

है, जिसका न घर-बार है न कोई ठिकाना, उसकी बातों में आ गए। बेवकूफ कहीं के। हमारा नसीब खोटा है। हमारे माथे पर यही लिखा है।"

"पता नहीं कहां से आ गया, कलमुंहा कहीं का। इसे भी अभी आना था?" बड़ी बहू नागरत्नम् बोली। बहुओं को ढूंढ़ती हुए पुन्नम्मा बड़ी बहू की बात सुनकर उल्टे पांव लौट गई।

"उसकी शादी बरबादी बन जाए। वह तो इस घर को नष्ट करने के लिए पैदा हुई।"

"देखना, हमारी आह उसे ज़रूर लगेगी।"

पीछे से आती हुई ये बातें पुन्नम्मा की पीठ में तीर की तरह चुभ गयीं। चुपचाप वह वहां से चली गई।

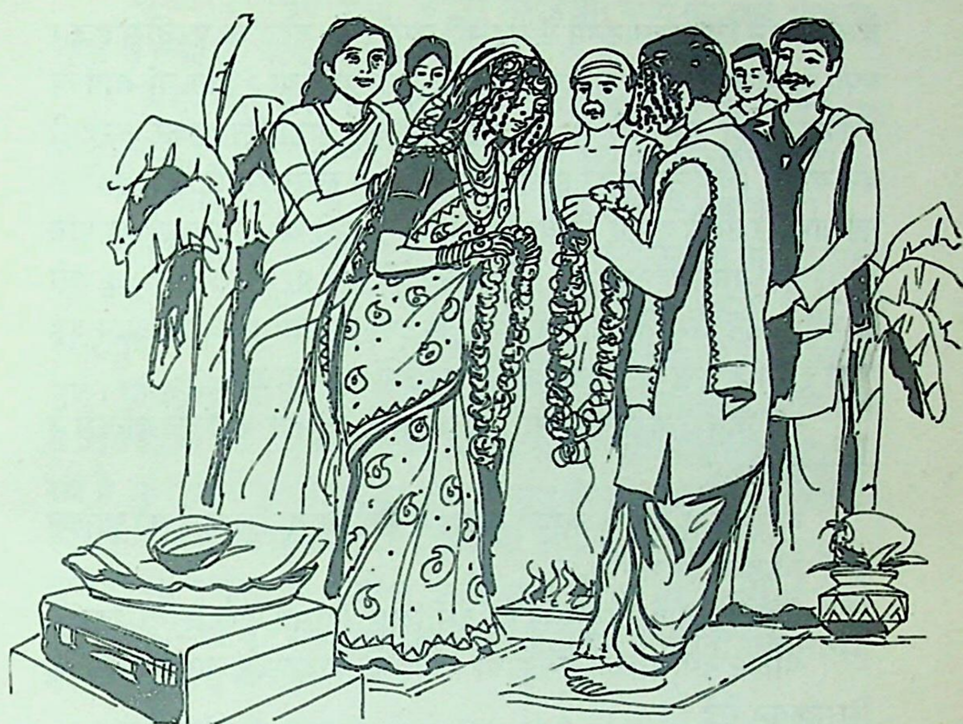
8

नागम्मा की शादी बड़ी धूमधाम से हुई। पांच दिन की शादी थी। क्यों न हो। एक ही तो लड़की थी घर में। बार-बार तो नहीं हो सकती न? दहेज में तो पच्चीस हज़ार रुपए दिए गए थे, ऊपर से शादी के खर्च में और पच्चीस हज़ार लगे। शादी में आए रिश्तेदारों में से कई सोलवें दिन के उत्सव के लिए भी रुक गए थे, तो उनके खाने-पीने में काफी खर्च हुआ।

सब ने कहा, "माधवैया की बेटी बड़ी किस्मतवाली है।" पुन्नम्मा ने मन ही मन सोचा, "मेरी बेटी से ज्यादा खुशनसीब कौन हो सकता है?" "हमारी बहन भाग्यशाली है" कहकर भाई फूले न समाए।

बहन की शादी की रात को ही पार्टी से बुलावा आने के कारण सत्यम् चला गया।

"फूलों में पली है हमारी बेटी। बेटे, अब तुम्हारे घर जा रही है। अब तुम्हारी जिम्मेदारी है," विदाई के समय रोती हुई पुन्नम्मा ने दामाद से कहा। माधवैया ने अंगोछे से आंखें पोंछ लीं। बालनागम्मा मां के गले लगकर फूट-फूटकर रोई। नागम्मा पति के साथ चली गई।



नागम्मा के चले जाने के बाद वह बड़ा घर पुन्नम्मा को काटने को दौड़ा। उससे रहा न गया। ज़ोर ज़ोर से रोने लगी।

माधवैया को लगा कि घर एकदम ख़ाली और सूना हो गया।

भाइयों को लगा कि घर की सारी रोशनी कहीं विलुप्त हो गई।

लेकिन बहुएं बड़ी खुश थीं। उन्हें लगा कि पैरों में रह रहकर अटकनेवाली जंज़ीर टूट गई है।

शादी करना कोई मामूली बात नहीं है। बेटी की शादी रचाकर जब माधवैया ने पीछे मुड़कर देखा, तो चालीस एकड़ ज़मीन अब सिर्फ पैंतीस एकड़ रह गई। पांच हज़ार का कर्ज़ भी उसके सिर पर लदा था।

9

वेंकटराव ने विशाखपट्नम् में गृहस्थी जमा ली । दहेज के पच्चीस हज़ार रुपए मामाजी के हाथ में देकर ऋण से मुक्त हो गया । बिन मां-बाप के वेंकटराव को मामाजी ने ही पाल-पोसकर, पढ़ा-लिखाकर आदमी बनाया था । वेंकटराव को उसी यूनिवर्सिटी में लेक्चरर की नौकरी मिल गई जहां से उसने एम.ए. किया था । नयी गृहस्थी थी । नागम्मा को पति का भरपूर प्यार मिल रहा था । वह फूलों की सेज पर सो रही थी । अपनी आंखों से उन दोनों के आपसी प्यार को देखकर नागम्मा के मां-बाप बड़े खुश हुए । अपनी बेटी की किस्मत पर उन्हें नाज़ हुआ ।

एक दिन वेंकटराव ने नागम्मा से कहा, "तुम्हारे भाई को पुलिस ने पकड़ लिया ।"

नागम्मा रो पड़ी । उसकी समझ में नहीं आया कि भाई को पुलिस क्यों पकड़कर ले गयी ।

"तुम्हारा भाई कम्युनिस्ट है । इसीलिए हिरासत में ले लिया गया ।"

पति ने नागम्मा को समझाया । भाई को याद करके नागम्मा सिसक सिसककर रोई ।

10

इस बीच काल का चक्र दो बार घूम गया । नागम्मा की शादी को दो साल हो गए ।

एक दिन माधवैया घर में घुसते ही पुन्नम्मा से बोला, "अजी, सुना तुमने ?"

"क्या है ?" बिना सिर उठाए ही पुन्नम्मा ने पूछा ।

"बूझो तो जाने ।" पत्नी के पास बैठते हुए माधवैया ने कहा ।

"बेटी की चिट्ठी आई है क्या ?"

"दामाद ने लिखा । बेटी को तीसरा महीना लग गया है ।" सुनकर पहले तो पुन्नम्मा हक्की-बक्की रह गई । फिर खुश होकर बोली, "सुनिए

जी। बेटी के घर सामान लेकर जाना होगा।"

माधवैया सोचने लगा, "कम से कम हज़ार रुपए का खर्च आएगा। कहां से लाएं ?" पत्नी से उसने कहा।

"कैसी बातें करते हैं ? आप तो बड़े कंजूस बनते जा रहे हैं। एक ही तो बेटी है। पहला बच्चा है, खाली हाथ जाना क्या अच्छा लगेगा ?"

"तुम्हारा कहना भी ठीक है।" माधवैया सोच में डूब गया।

इन दो सालों में उस घर में जो परिवर्तन आए उसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता। नागम्मा की शादी के कारण बहुओं में काफ़ी असंतोष फैल गया। इसका नतीजा यह हुआ कि बेटे भी चिड़चिड़े हो गए। माधवैया को घर की ज़िम्मेदारी बेटों को सौंपनी पड़ी। माधवैया ने जान लिया कि उस घर में अब उसका आदर धीरे-धीरे कम होता जा रहा है और उसने अपने घर का बंटवारा कर दिया। उसी रात माधवैया और पुन्नम्मा अपने हिस्से में आए पूरब की तरफ के दो कमरों में आ गए। सुब्बारायुडु ने कहा कि वे दोनों उसके साथ ही रहें, पर माधवैया राज़ी नहीं हुआ। छोटे बेटे सत्यम् के हिस्से की खेती की निगरानी सुब्बारायुडु ने अपने हाथ में ले ली।

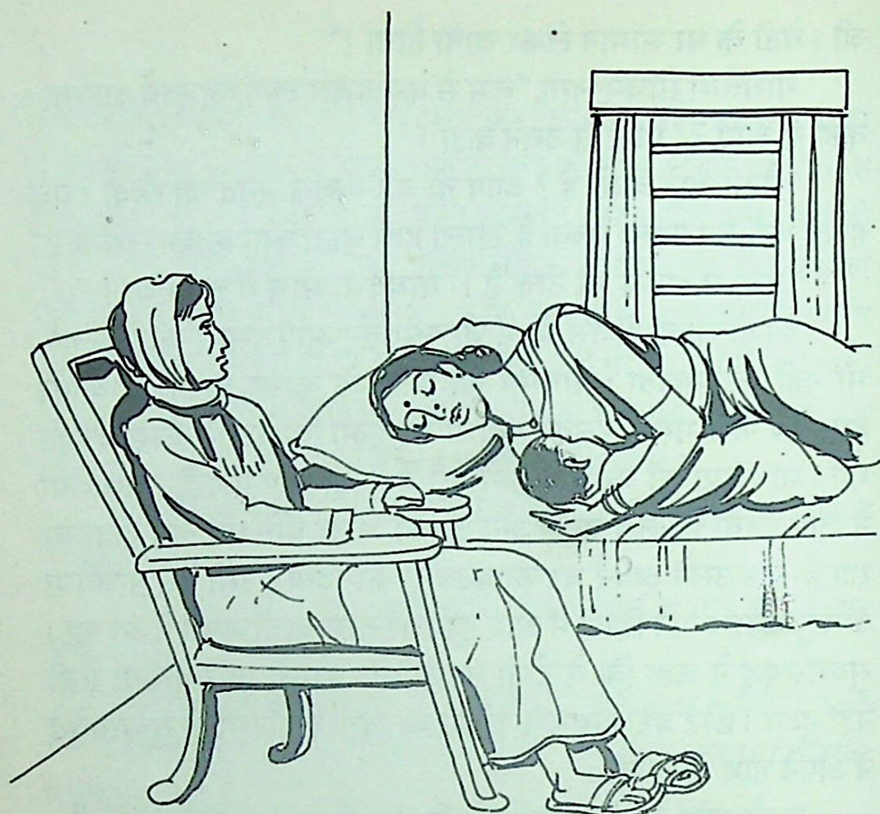
कभी गांव के लोग कहते थे कि माधवैया बड़ा भाग्यशाली है। लेकिन अब वे ही लोग उसे देखकर सहानुभूति प्रकट कर रहे थे।

माधवैया जाकर बेटी को ले आया। भाइयों और भाभियों ने बड़े प्रेम से उसका स्वागत किया। प्रसव की ज़िम्मेदारी लेने के लिए तीनों में होड़ सी लगी थी।

माधवैया ने इनकार कर दिया, "उसका बाप मैं, अभी ज़िंदा हूं। अभी से उसकी ज़िम्मेदारी तुम्हारे ऊपर क्यों डालूं ?"

नागम्मा ने बेटी को जन्म दिया। बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया गया। बच्ची का नाम पार्वती रखा।

बच्ची तीन महीने की हो गई। नागम्मा विशाखपट्नम के लिए रवाना हो गई। पुन्नम्मा भी बेटी के साथ गई। बड़ा भाई सुब्बारायुडु



बैल-गाड़ी में बहन को स्टेशन ले गया और ट्रेन में चढ़ा आया।

वेंकटराव नागम्मा को लेने स्टेशन आया। उसे देखकर नागम्मा हैरान रह गई। वह बहुत कमजोर हो गया था। आंखें धंस गई थीं। आंखों के इर्द गिर्द काले घेर बन गए थे। गोरा बदन अपना रंग खो बैठा था।

मुसकराते हुए पत्नी के हाथ से बच्ची को ले लिया।

"क्या बात है बेटे? इतने दुबले-पतले कैसे हो गए?" पुन्नम्मा बोली तो लगा गले में कुछ अटक गया।

"कुछ नहीं है, मां जी। थोड़ा बुख़ार हो गया था, बस।"

वेंकटराव बेटी को जान से भी ज्यादा प्यार करता था। जब तक घर

में रहता, बच्ची उसके कंधों पर चढ़ी रहती । उस बच्ची की हंसी देखकर अपने आप को भूल जाता था । उसके भविष्य के बारे में न जाने कितने सपने देखता रहता । और तीन महीने गुज़र गए । वेंकटराव की सेहत दिन ब दिन बिगड़ती जा रही थी । रोज शाम को उसे बुख़ार आता था ।

एक्सरे लिया गया । खून की जांच भी करवायी । सब परीक्षाओं के बाद यह बताया गया कि वेंकटराव को क्षय रोग है । नागम्मा के पैरों के नीचे से मानों ज़मीन खिसक गयी । बहुत रोयी । पिता को पत्र लिखा ।

पत्र पढ़कर मां-बाप पर मानों वज्राघात-सा हो गया । भाई घबराहट के मारे अचेत हो गए । माधवैया और पुन्नम्मा विशाखपट्नम के लिए रवाना हो गए । तीसरा बेटा नागभूषणम् भी उनके साथ गया ।

11

दो महीने और बीत गए। डाक्टरों ने सलाह दी कि वेंकटराव को मदनपल्ली ले जाएं । माधवैया पैसे लेने घर लौटा ।

"पिताजी ! वेंकटराव कैसे हैं ?" रामदास ने पिता से पूछा ।

"रोग बढ़ गया । डाक्टरों ने मदनपल्ली ले जाने की सलाह दी है ।"

"बहन कैसी है ?" पूछकर जवाब सुने बिना ही वह बाहर चला गया ।

माधवैया को उम्मीद थी कि पैसे की बात बेटे खुद उठाएंगे । चार दिन बीत जाने पर भी किसीने बात नहीं छेड़ी । अन्त में पिता ने खुद रामदास से पूछा, "क्या सोचा है, रे ?" उसने जवाब दिया, "मेरे पास पैसे कहां हैं ? एक हज़ार रुपए हाल ही में दे दिए थे न ?"

माधवैया को गुस्सा आया । पर वह जानता था कि उसका गुस्सा देखकर डरनेवाले बेटे अब बदल गए । उसने गुस्सा पी लिया । गौशाला में सुब्बारायुडु कुछ काम कर रहा था । उसके पास गया और बोला, "क्यों रे, सुब्बुलू ! कुछ सोचा है क्या ?"

"किस बारे में ?" बैलों को चारा देते हुए सुब्बारायुडु ने बिना सिर

उठाए ही पूछा।

"क्या है बेटे ? दामाद को मदनपल्ली भेजना है। कम से कम पांच हज़ार रुपए चाहिए।"

"आप भी बाबूजी ! क्या मेरे घर में पैसा पेड़ पर उगता है ? एकाएक इतने रुपये कहां से लाऊं ?"

फिर माधवैया को गुस्सा आया। फिर यह भी याद आया कि ये बेटे अब उसके गुस्से से डरनेवाले नहीं रहे। यह सोचकर गुस्सा पी गया। वह जानता था कि बेटे के पास पैसे हैं फिर भी उसने कहा, "साहूकार, रामैया से उधार ले लेना। धीरे-धीरे चुका देंगे।"

"इतने पैसे उधार में लूं ? पागल तो नहीं हो गए ? मेरे भी बाल-बच्चे हैं।"

"तो क्या करें, बोलो ?"

"मेरे पास पैसे नहीं हैं।"

माधवैया का पारा चढ़ गया। "छोटे के खेत से आनेवाली आमदनी कहां गयी ? अगर वह होता तो खेत बेचकर भी अपनी बहन के सुहाग की रक्षा करता !"

बिना जवाब दिए सुब्बारायुडु जल्दी से वहां से चला गया। माधवैया बेटे को खड़ा देखता रहा।

माधवैया अपने हिस्से की ज़मीन को गिरवी रखकर पैसे ले आया। दामाद को मदनपल्ली भेजा। जब पति जा रहा था, तो नागम्मा ज़ार-ज़ार रोई। वेंकटराव पार्वती को गोद में उठाकर दुख से गद्‌गद् स्वर में बोला, "मुन्नी रानी ! मैं तुझे डॉक्टर बनाना चाहता था।"

नागम्मा बेटी के साथ मायके आ गई। जहां तक हो सका मां-बाप उसकी ज़रूरतें पूरी करते जाते थे। नागम्मा इसी उम्मीद से जी रही थी कि पति स्वस्थ होकर लौटेगा। एक एक दिन एक युग के समान बीत रहा था।

12

देखते ही देखते छह महीने बीत गए। शाम के सात बजे थे। नागम्मा बेटी को गोद में लिए, आंगन में टहलती हुई, उसे खाना खिलाने की कोशिश कर रही थी। पार्वती नहीं खा रही थी। सुबह से ही नागम्मा का मन उदास था। पति को याद करके आंसू बहाती रही। पार्वती के मुंह में उसने जबर्दस्ती खाना ठूंस दिया। पार्वती ने उसे थूक दिया। नागम्मा गुस्से से पागल हो गई। बच्ची को गोद से नीचे उतारकर पीठ पर दो तीन घूंसे लगा दिए। पार्वती ऊंची आवाज में रोने लग गई। पुन्नम्मा भागकर आई और पोती को गोद में लेकर चुप कराने लगी।

माधवैया तभी बाहर से आया। वह ऐसे चल रहा था मानो नींद में चल रहा हो। चेहरे का भाव भुतहा था। लड़खड़ाते हुए पिता को नागम्मा ने थाम लिया। पूछा, "क्या है बाबूजी ? क्या हुआ ?" उसकी आवाज में आवेश था। पुन्नम्मा भी पास आई और पूछा, "हाय राम ! क्या हो गया आपको ?" माधवैया का शरीर पसीने से तर था।

सुब्बारायुडु तभी अंदर आया और मां को बुलाया, "मां !" उसकी आवाज में अत्यधिक करुणा थी। सबने उसकी ओर देखा। सुब्बारायुडु का चेहरा सफेद कागज की तरह था। गला रुंध गया था और आंखें फाड़कर देख रहा था। उसके हाथ में गुलाबी रंग का कागज फड़फड़ा रहा था। नागम्मा को शक हुआ। पागल की तरह भाई के सामने आकर खड़ी हो गई। भाई के हाथ से कागज छीन लिया। अंग्रेज़ी में कुछ लिखा था। अक्षरों को जोड़-जोड़कर पढ़ लिया। वेंकटराव ने जो अंग्रेज़ी भाषा सिखाई वह इस टेलिग्राम पढ़ने में काम आई।

टेलिग्राम पढ़कर नागम्मा चीख उठी और बेहोश होकर गिर पड़ी। भाभियां और अड़ोस-पड़ोस के लोग भी इकट्ठे हो गए।

पुन्नम्मा बेजान बुत बनकर बैठी रह गई। माधवैया दीवार से लगकर बैठ गया और अंगोछे से मुंह ढांपकर सिसकने लगा।

भाइयों में बहन की तरफ़ देखने की हिम्मत नहीं रही। बड़ा भाई

एकाएक जोर से रोने लग गया । भाभियां नागम्मा को घेरकर बैठ गईं ।

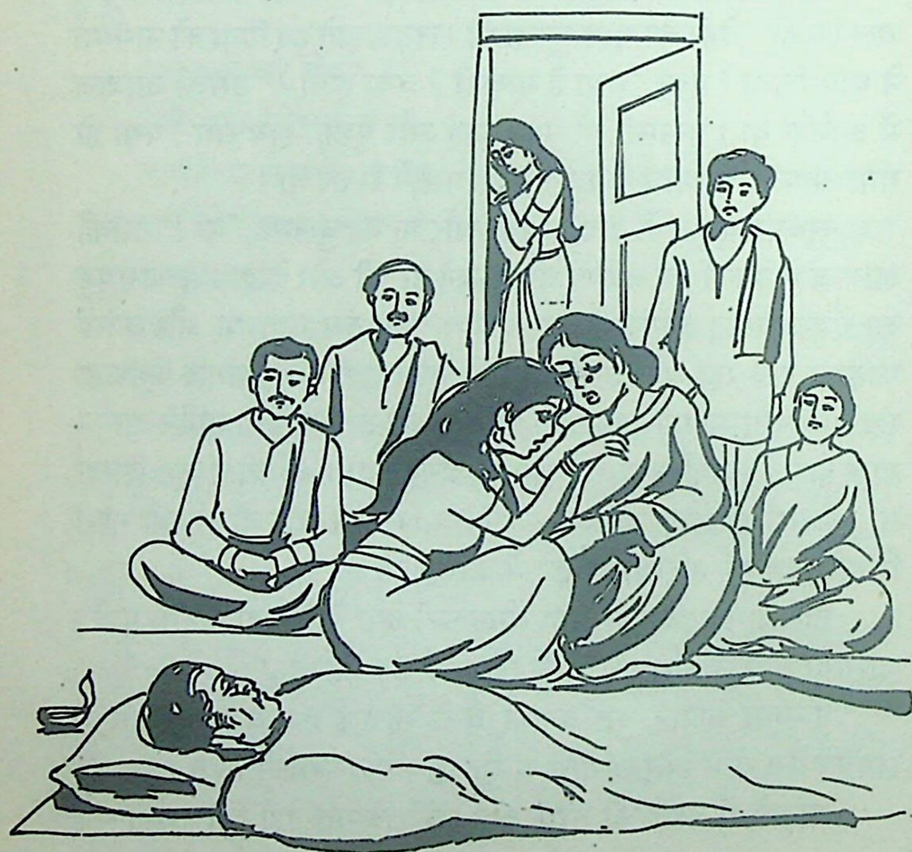
नागम्मा के जीवन की ज्योति बुझ गई !

माथे का सिन्दूर पुछ गया ।

पूरा जीवन जलकर खाक हो गया । उसका सुहाग मिट गया । दुनिया ने कहा, “बेचारी ! नागम्मा !”

नागम्मा के मां-बाप के दुख की कोई सीमा नहीं रही । चाहे जितने भी आंसू बहा ले, मां के हृदय की असह्य पीड़ा प्रकट नहीं हो सकती । नागम्मा के न आंखों से आंसू निकल रहे थे और न मुंह से बोली । धीरे-धीरे रिश्तेदार आने लग गए ।

दसवां दिन था । नागम्मा के सुहागिन रहने का आख़िरी दिन था ।



गुलाबी रंग की साड़ी पहनाकर नागम्मा को आंगन में बिठाया गया। माथे पर बड़ा-सा, कुमकुम का टीका, अस्त होनेवाले सूरज की तरह निस्तेज था। हाथ में चूड़ियां। कोमल, गोरे गले में चमकता मंगलसूत्र - बुझनेवाला उसका सुहाग चिह्न तेज आग के समान लग रहा था। उसके थके-हारे चेहरे पर विषाद के साए थे।

पुन्नम्मा बेटी के सिर को छाती से लगाए बैठी थी। वह फूट-फूटकर रो रही थी। नागम्मा बिल्कुल भी नहीं रो रही थी। पत्थर की मूर्ति बनकर बैठी थी। गांव की सुहागिनें आतीं और देखकर चली जातीं। एक-एक करके वे जब आतीं तो पुन्नम्मा जोर जोर से रोने लगती। रो-रोकर उसका गला बैठ गया।

हाल में बैठे एक बुजुर्ग ने कहा, "ये आने वाले सब एक साथ आ जाते तो अच्छा है।"

अंधेरा छाने लगा। पुन्नम्मा नागम्मा को बाहों में थामे बैठी थी। रात के नौ बजे थे। देखने वाले सब सुहागिन के रूप में उसे आख़िरी बार देखकर चले गए। कुछ ही घंटों में नागम्मा का मंगलसूत्र उतरनेवाला था। मांग का सिन्दूर पुंछनेवाला था। चूड़ियां टूटनेवाली थीं। रंगीन साड़ी की जगह सफेद धोती लेनेवाली थी।

पता नहीं किसने ख़बर की, न जाने कहां से नागम्मा का भाई सत्यम् आ गया। एक दोस्त को भी साथ ले आया। सत्यम् को देखते ही पुन्नम्मा के आंसू फूट पड़े। वह ज़ोर से रोने लग गई। सत्यम् ने बहन के दोनों हाथ अपने हाथों में ले लिए और उसके मुंह से केवल एक शब्द निकला, "बहन।" आवाज़ में दर्द था। नागम्मा में हरकत हुई। तब तक उसका मन दुख के कुहासे से घिरा था। अब वह छंटने लगा। उसके शरीर में धीरे-धीरे चेतना लौटने लगी। नागम्मा भाई को देखती रह गई। सूनी आंखों में अब भाव जागने लगे। वह "भैया" कहकर ज़ोर से रो पड़ी।

रात के दस बजे थे। घर के बुज़ुर्ग उदास बैठे थे। सत्यम् उठकर हॉल में आया। उसका दोस्त, रामम् चुपचाप यह सब देख रहा था। उसने

सत्यम् से कहा, "यह सब क्या है, सत्यम्? इतनी छोटी उम्र की लड़की के साथ यह कैसा अन्याय हो रहा है? अपने पिता जी से कहो कि यह सब बन्द करें।"

"ऐसा नहीं कहते, बेटा! यह रिवाज युगों से चला आ रहा है। हम कैसे इनकार कर सकते हैं?" एक बुजुर्ग ने कहा। रामम् बोला, "ये कैसे रिवाज हैं जी? कुछ स्वार्थी लोगों ने मिलकर ऐसे रिवाज बनाए हैं।"

"छोटा मुंह और बड़ी बात। देखिए! शास्त्रों में लिखी बातों को ग़लत बताने की जुर्रत करता है।" चुरुट पीते हुए बुजुर्ग बोल पड़े।

"दादाजी, ज़रा बताइए। कौन-से धर्म-शास्त्र हैं जो यह सब करने का आदेश देते हैं?"

"वह भी तुम्हीं बताओ। पढ़े लिखे हो न?"

"ग़ुस्सा मत होना, दादाजी! सुहागिन होने का मतलब क्या है? बिन्दी लगाना? चूड़ियां पहनना? रंगीन साड़ी पहनना? बालों में फूल सजाना? इनमें से कौन-सी चीज़ है जो केवल पति के कारण की जाती है? लड़की के पैदाइशी हक़ हैं ये सारे अलंकार। इनका, बीच में आनेवाले पति से कोई संबंध नहीं है।"

"तो तुम क्या कहना चाहते हो?"

"यह सब जो हो रहा है, उसे रोकिए। क्यों सत्यम्? कुछ बोलते क्यों नहीं?" सत्यम् ने भाइयों से कहा कि यह कार्यक्रम रोक दें। उन लोगों ने इस बारे में निर्णय लेने का जिम्मा पिता को सौंप दिया। पिता चुप रहा। सत्यम् अपने दोस्त के साथ चला गया।

सुबह के चार बजे थे। घने काले बादलों के बीच में से तारे झांक रहे थे। दूर कहीं कुत्तों की आवाजें आ रही थीं।

मन को छलनी कर देनेवाला किसी स्त्री का रोना सुनाई दिया। हृदय को चीरता हुआ निकलनेवाला यह क्रंदन अकेली नागम्मा का ही नहीं था। किसी एक स्त्री का रोदन नहीं था। युग-युगांतर से स्त्री के हृदय को चीरकर निकलनेवाला क्रंदन था।

उस रोदन को सुनेंगे तो लाखों मनुष्य इसके विरोध में खड़े हो जाएंगे ।

मानवता शर्म से सिर झुका लेगी । शायद इसीलिए यह कांड रात को किया जाता है ।

नागम्मा को गाड़ी में बिठाकर गांव से दूर, तालाब के पास ले गए ।

13

कर्मकांड पूरा करके माधवैया और पुन्नम्मा बेटी के साथ घर लौट आए । वेंकटराव का कर्मकांड उसके मामाजी के घर में किया गया ।

एक समय था जब नागम्मा तरह-तरह के गहने पहनकर घर में इठलाती चलती थी । अब सफ़ेद साड़ी पहनकर एक कोने में बैठ गई । पति को और सियासी कामों में इधर-उधर भटकनेवाले भाई को याद करके रो-रोकर समय बिता रही थी ।

नागम्मा की बेटी तुतलाकर बोलने लग गई थी । घुप अंधेरे में चमकनेवाले छोटे से दीपक के समान पार्वती अपनी मां के अंधकारमय जीवन को रोशन कर रही थी ।

पृथ्वी घूमती रही । उसपर पैर जमाकर खड़े होने का प्रयत्न नागम्मा लगातार करती रही ।

देखते-देखते पांच साल बीत गए । पुन्नम्मा की मौत को भी चार साल से ऊपर हो गए । पत्नी की मौत ने माधवैया को बिल्कुल बेसहारा और उदास बना दिया ।

जब से पुन्नम्मा की मृत्यु हुई, तब से माधवैया और नागम्मा सुब्बारायुडु के साथ ही रहने लगे । तीनों बेटे उन्हें अपने अपने घरों में रहने के लिए बुला रहे थे । उनके इस बुलावे के पीछे उनकी पत्नियों का हाथ था । माधवैया ने सोचा, मरने के बाद बड़ा बेटा ही चिता में आग देता है । इसलिए उसी के साथ रहने का निश्चय कर लिया ।

सत्यम् की ज़मीन से जो आमदनी हो रही थी, वह सुब्बारायुडु ले

लेता था। जब तक पिता ज़िन्दा हैं उनका हिस्सा भी उसी का रहेगा। इसीलिए नागरत्नम् ने ज़िद पकड़ ली थी कि ससुर उन्हीं के साथ रहेंगे। इसके कारण बहुओं और भाइयों के बीच अनबन शुरू हो गई।

उनका विश्वास था कि अब सत्यम् कभी लौटकर नहीं आएगा। कुछ दिन पहले यह अफ़वाह भी सुनी थी कि सत्यम पुलिस की मुठभेड़ में जंगल में मारा गया। कुछ भी हो नागरत्नम् ने थोड़े दिन तक ससुर और ननद की अच्छी ख़ातिर की।

सुब्बारायुडु और नागभूषणम के बच्चे स्कूल जाने लगे। रामदास के कोई बच्चा नहीं था। नागभूषणम् का बेटा चलपति पार्वती को बहुत चाहता था। हमेशा उसे कंधों पर बिठाए रखता था। सुब्बारायुडु की बेटी बिल्कुल मां पर गई थी। एक दिन सुबह नागम्मा लकड़ी जलाकर चूल्हा जलाने की कोशिश कर रही थी। लकड़ियां आग ठीक से नहीं पकड़ रही थीं। इसी बीच पार्वती आकर मां के पीछे बैठ गई।

"बहुत धुंआ है, बेटी! आंखें सूज जाएंगी। बाहर जा," नागम्मा ने कहा।

"मां, मैं भी चलपति भैया के साथ स्कूल जाना चाहती हूं," पार्वती ने दबी ज़ुबान से कहा।

नागम्मा चौंक गई। उसे यह बात अब तक क्यों नहीं सूझी? हां, कैसे सूझे? जब वह खुद स्कूल गई तो कितनी धूमधाम से उसे भेजा गया था। कुछ रोज़ रोते-रोते जबरदस्ती स्कूल गई, उसके बाद छोड़ दिया। लेकिन उसकी बेटी स्कूल जाने की बात खुद कर रही है। वह अपने पिता पर गई है।

"बोलो, मां! मैं स्कूल जाऊं?"

"ठीक है, बिटिया!" कहकर नागम्मा पार्वती को साथ लेकर पिता की चारपाई के पास पहुंची। माधवैया खांस रहा था।

कैसा तगड़ा आदमी था। अब कैसा हो गया। हड्डियां गिनी जा सकती थीं। नागम्मा ने पिता को देखकर ठंडी सांस ली।

"बाबूजी ! पार्वती स्कूल जाना चाहती है । अब तक हमें इस बात का ध्यान ही नहीं आया," नागम्मा बोली ।

"अरे, सुब्बुलू ! अच्छा दिन देखकर पार्वती को स्कूल भेजने की तैयारी करना !" घर के अंदर आते हुए बेटे को देखकर माधवैया ने कहा ।

"अच्छी बात है !" कहकर बिना रुके वह घर के अन्दर चला गया ।

14

"रोज़-रोज़ खटते मेरी कमर टूट रही है ।" ससुर के सामने खाने की थाली पटकते हुए नागरत्नम् बोली ।

यह देखकर नागम्मा चकित रह गई । हर रोज़ पिता को वही खाना परोसती थी । आज मन उदास था तो तनिक गोशाला में जा बैठी । बस ! खाना भी खुद उसने बनाया था । सिर्फ़ परोसने के लिए बाबूजी का इस क़दर अपमान करना ज़रूरी था ? उसे डर था कि अपमानित किए जाने के बाद बाबूजी खाना नहीं खाएंगे । नागम्मा ने सिर उठाकर देखा । पिता जल्दी-जल्दी खा रहे थे । फ़ौरन उनके पास जाकर बोली, "बाबूजी, मत खाइए !" कहने का मन हुआ । पर नहीं कह सकी सहानुभूति से उनको देखती रह गई । एक समय था जब माधवैया इस घर के बेताज बादशाह थे । बड़े खुद्दार थे । उनके सामने किसी का मुंह नहीं खुलता था । उनकी बात पत्थर की लकीर थी । ऐसे व्यक्ति का इस तरह अपमान किया जा रहा है ? खाने की थाली को सामने पटका जा रहा है ?

नागम्मा वहां खड़ी नहीं रह सकी । रात भर सोई नहीं । पौ फटते समय उसकी आंख लगी । कोई उसे झकझोरकर जगा रहा था । वह हड़बड़ाकर उठ बैठी । सामने छोटी भाभी खड़ी थी ।

"उठ ! जल्दी उठ, आ !" भाभी बोली ।

बाहर कुछ शोर सुनाई दिया । नागम्मा घबराई-सी आंगन में आई । पिताजी की खाट को घेरे लोग खड़े थे ।

"नींद में ही प्राण निकल गए । बेचारा । पकड़िए, नीचे लिटाइए ।"

नागम्मा भौंचक्की रह गई। उसका मन सुन्न हो गया था। सारी चेतना बर्फ़ की तरह जम गयी।

"खुशक़िस्मत है। चलते-फिरते चल बसा।"

"शेर जैसा आदमी था। जब तक ज़िन्दा रहा शेर की तरह जिया।" लोग तरह-तरह की बातें कर रहे थे। नागरत्नम रोए जा रही थी। छोटी बहुएं आंख-नाक पोंछ रही थीं। पार्वती को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था। वह रोने लगी। पड़ोस की कांतम्मा बच्ची को चुप कराकर अपने घर ले गई।

रोती हुई नागरत्नम् को नागम्मा ने अजीब नज़रों से देखा। पिता के शव की ओर देखा। रात को जो खाना खाया उसीने पिता की जान ली थी। इतना बड़ा अपमान सहकर भी खाना खाया। तभी उसे लगा था कि कोई अनर्थ होनेवाला है। बाबूजी के दिल को बहुत गहरी चोट पहुंची थी। इसलिए उस घर में दुबारा खाना खाने की नौबत नहीं आई।

माधवैया को नहलाया गया। उसके पैरों के पास नारियल फोड़कर नागम्मा फूट-फूटकर रोने लगी। जैसे बांध टूट गया। सैलाब उमड़ आया।

"बाबूजी! तुम भी मुझे छोड़कर चले गए? मां के पास चले गए?" कहकर रोती हुई नागम्मा को भाभियां चुप कराने लगीं।

15

नागम्मा की स्थिति ऐसी हो गई थी जैसे तैरना न जाननेवाले को किसी ने पानी में धकेल दिया हो। जिन हालात में पिता का देहांत हुआ था, उसके बारे में सोचने से भी डर लगता था। भाभी नागरत्नम् की कड़वी और कठोर बातों से उसका हृदय छलनी हो गया था। आंगन में एक कमरे कें कोने में बेटी के साथ रहने लगी। अकेली बैठती तो सोचती, कि सीताजी से तो मेरी हालत बेहतर है। उनके दुख के सामने मेरा दुख कुछ भी नहीं है।

आटा पीसते, घड़ों से पानी भरते, कपड़े धोते, धान कूटते सोचती थी – सक्कूबाई से ज्यादा तकलीफ़ तो नहीं सहनी पड़ रही है।

अपमान या तिरस्कार से अब पहले जैसी पीड़ा नहीं होती थी। सोचती थी, "भाई-भावज ही तो हैं। भला-बुरा कहेंगे तो क्या हर्ज है?"

पार्वती चलपति के साथ स्कूल जाने लगी। नागरत्नम् की बेटी सूर्यकांतम्, पार्वती से नफ़रत करती थी।

एक दिन सूर्यकांतम् ने शोर मचा दिया कि बक्से में रखा पांच रुपए का नोट ग़ायब हो गया। मां और बेटी ने मिलकर चोरी का इल्ज़ाम पार्वती के सिर मढ़ दिया। नागम्मा के आत्मसम्मान को ठेस पहुंची। उन्हें कुछ कह भी नहीं सकती थी। पार्वती को पकड़कर अंधाधुंध पीटने लगी। सुब्बारायुडु उसी समय घर आया। उसने पार्वती को बाहों में ले लिया। पीटने का कारण सुनकर हैरान रह गया। कहा कि वे पांच रुपए तो उसने खुद निकाले थे। यह सुनते ही नागरत्नम् और सूर्यकान्तम् वहां से खिसक लिए।

नागम्मा ने बेटी को छाती से लगा लिया। पार्वती रोते रोते, खाना खाए बिना ही सो गई। नागम्मा भी भूखी थी। बेटी के पास चटाई पर सो गई।

जीवन की मार से पीड़ित मां और उस मां से मार खाई हुई लड़की दोनों उस रात को ठीक से सो नहीं पाई। नींद में चौंकती बेटी पर हाथ रखकर नागम्मा लेटी रही।

16

पार्वती ने ग़ुस्से से कहा, "मामी और सूर्यकांतम् अच्छे लोग नहीं हैं। भूत हैं। पिशाच हैं।"

मां ने टोका, "नहीं बेटी, ऐसा नहीं बोलते। बड़े लोगों को इस तरह गाली नहीं देनी चाहिए।"

"क्यों? हमें वे जो चाहे कह सकते हैं क्या?"

"हम उनके घर में रहते हैं न ।"

"उनका मकान कैसे हुआ ? यह तो नानाजी का घर है । नानाजी तुम्हारे पिताजी ही थे न ।" पार्वती की आवाज़ गंभीर थी ।

नागम्मा आंखें फाड़कर बेटी को देखती रही । पार्वती बड़ी हो रही है । उम्र से ज्यादा होशियार है । इस उम्र में मैं कितनी भोली थी । मेरे मन में अब तक, 'यह घर मेरे पिता का ही तो है ।' ऐसा विचार नहीं आया । मेरी बच्ची में हिम्मत है, जो मुझमें नहीं है । आज भी बड़े भाई के सामने कुछ कहते हुए डर लगता है । नौ साल की बच्ची, किसीने कुछ कह दिया, तो जवाब देने लगती है ।

"मां ! हम यहां से चले जाएंगे ।"

नागम्मा चौंक उठी । बोली, "कहां जाएं बेटी ?"

"अपने घर ?"

नागम्मा के मन में जैसे कांटा चुभ गया । चुप रह गई ।

"क्या है, मां ? जवाब क्यों नहीं देती ? हमारा कोई घर नहीं है, क्या ?"

बड़ी मुश्किल से मुंह खोलकर नागम्मा ने जवाब दिया, "नहीं, बेटी !"

"हमारा घर क्यों नहीं है, मां ? तुम्हारे बाबूजी का घर है, सूर्यकांतम् के बाबूजी का भी घर है । फिर मेरे पिताजी का घर क्यों नहीं है ?"

नागम्मा के होश उड़ गए । क्या कहे, कुछ भी नहीं सूझा । आंखों में आंसू आ गए ।

"मां तुम रो क्यों रही हो ? मत रो, मां । मैं ऐसे सवाल नहीं करूंगी । ठीक है, यही रहेंगे ।" पार्वती ने कहा ।

नागम्मा बड़ी मुश्किल से उमड़ते आंसुओं को रोक पाई । आंखें पोंछ लीं ।

"स्कूल जाने का समय हो गया, मां ! खाना दो ।"

"चल, बेटी !" नागम्मा के कहने पर पार्वती अंदर भागी । नागम्मा

रसोईघर में पहुंची तो देखा कि बेटी अलमारी के पास खड़ी थी । मां को देखा तो हड़बड़ाकर अलमारी के दरवाजे बन्द कर दिए ।

"बेटी, क्या चाहिए ?"

"कुछ नहीं, मां । अलमारी में कितने सारे कॉकरोच हैं । वे इधर उधर भाग रहे थे तो मजा आ रहा था ।" पार्वती घबराकर बोली ।

अभी बच्ची है । छुटपन से ही पार्वती कॉकरोच को छेड़ती रहती थी । तीलियों से उन्हें सताती थी तो नागम्मा मना करती थी । उस बात को याद करते हुए नागम्मा ने पार्वती को खाना खिलाया ।

जल्दी-जल्दी खाना खाती हुई पार्वती को देखकर, "धीरे-धीरे खा बेटी ! जल्दी क्या है ? अभी तो बहुत टाइम है," छाछ परोसते हुए नागम्मा ने कहा ।

पार्वती ने जल्दी खाना खाकर हाथ धोए और बिना हाथ पोंछे ही स्कूल चली गई ।

"पगली, कहीं की ! स्कूल जाना हो तो और किसी बात की चिन्ता नहीं है इसे" नागम्मा मन ही मन खुश हुई ।

"मां... ! सूर्यकांतम् ज़ोर से चिल्लाई ।

सुनते ही नागम्मा का दिल जोर-जोर से धड़कने लगा । सूर्यकांतम् इस तरह चिल्लाती है तो इसका मतलब था कि प्रलय आनेवाला है । नागम्मा या पार्वती के खिलाफ़ कुछ कहने से पहले वह लड़की हमेशा इसी तरह चिल्लाती थी । नागम्मा नहा रही थी । जल्दी-जल्दी बदन पर पानी डालने लगी और सोचने लगी, "फिर कौन-सी आफ़त आ गई है ?"

सूर्यकांतम् और नागरत्नम् 'हाय ! हाय' कहते हुए शोर मचा रही थी । किसी को कोस रही थीं । गुसलखाने से उनकी बातें स्पष्ट सुनाई नहीं दे रही थीं ।

नागम्मा नहाकर बाहर निकली तो भाभी की बातें कंकड़ों की तरह कानों को चुभीं, "यह तो उस दुष्ट छोकरी का ही काम है । पेट भर खाने को नहीं मिलता पर लाड़-प्यार से इस क़दर बिगाड़ रखा है कि क्या

कहें ?"

नागम्मा बुत-सी खड़ी रही । टूटी सुराही हाथ में लिए सूर्यकांतम् सामने आकर खड़ी हो गई । उसका चेहरा एकदम लाल था ।

"क्या हुआ कांतम् ? सुराही क्यों टूटी ?" नागम्मा ने डरते-डरते पूछा ।

"वही सवाल मैं तुमसे कर रही हूं ।" कांतम् की आवाज़ कठोर थी ।

नागम्मा की समझ में कुछ भी नहीं आया ।

"सुबह देखा था तो ठीक थी । इतने में कैसे टूटी ? रात को गिलास टूटा था । इतनी बढ़िया सुराही । रेशमी साड़ी, ज़रीवाली देकर ख़रीदी थी । बच्ची को पसंद आई । ससुराल जाते समय ले जाएगी, यह सोचकर ख़रीदी थी । पता नहीं किसकी बुरी नजर लग गई । उनकी आंखें फूट जाएं । अलमारी में रखी चीज़ अलमारी में ही टूट गई ? यह तो जान बूझकर किया गया है । नहीं तो कैसे टूटती ?" नागरत्नम् ने ऐसे अन्दाज़ से कहा मानों वह नागम्मा और उसकी बेटी को ही दोषी ठहरा रही है ।

"भाभी ! यह बड़ा अन्याय है । मैं क्या बच्ची हूं, जो जान बूझकर किसी चीज को तोड़ डालूंगी ?" नागम्मा की आवाज जैसे किसी गहरे कुएं से निकल रही हो, ऐसी कमजोर थी ।

"तूने नहीं तो तेरी बेटी ने तोड़ी होगी ! दोनों एक ही बात है न ? वह तो दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है । लड़की को इस तरह पालोगी तो आगे चलकर क्या करेगी ? गला घोंटकर कुएं में फेंक दो । दो दिन आंसू बहाकर उससे छुटकारा पा लो । यही बेहतर है ।" नागरत्नम् आपे से बाहर हो रही थी ।

नागम्मा चौंक गई ।

इतने में उसे याद आया कि जब वह रसोई घर में पहुंची तो पार्वती हड़बड़ाकर चौकी पर आ बैठी थी । नागम्मा का दिल बैठ गया ।

"पार्वती के आते ही पूछ लूंगी, भाभी । मैं उसे समझाती हूं । वह फिर कभी ऐसा काम नहीं करेगी ।" नागम्मा ने अपराध भाव से कहा ।

"देखो तो, कितने आराम से कह रही है। 'आते ही पूछ लूंगी।' मेरी सुराही तो टूट गई न? वह कैसे वापस करोगी?" रोनी-सी आवाज़ में सूर्यकांतम बोली।

"अभी तो शुरुआत है, बेटी। अभी न जाने क्या-क्या नुकसान होनेवाला है।" नागरत्नम् ने कहा। मां-बेटी पार्वती पर इल्ज़ाम लगाकर अपने मन का मैल निकालने लगी तो नागम्मा वहां से खिसक ली।

नागम्मा का मन कडुआहट से भर गया।

खाना खाने का भी मन नहीं किया। वह बहुत उदास थी।

सोचते-सोचते पार्वती पर बहुत ज्यादा ग़ुस्सा भी आने लगा। न जाने क्या-क्या सोचने लगी।

पार्वती दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है। उसी के लिए तो मैं खुद इतना दुख सह रही हूं। पार्वती से कितनी सारी आशाएं लगाए बैठी हूं। पर लगता है पार्वती पर अब काबू रखना मुश्किल है। अभी से वह सबका विरोध करने लग गई। यह उसकी मूर्खता नहीं है। स्कूल में हर साल वही फ़र्स्ट आती है। कई इनाम जीतती है। पर इतनी जिद्दी क्यों हो गई? कुछ भी हो अभी से उसे सही रास्ते पर लाना होगा। नहीं तो उम्र के साथ-साथ उसका स्वभाव भी जिद्दी बनता जाएगा।

"आने दो। खाल खींच लूंगी। सुराही तोड़ी और मुझसे झूठ भी बोली।"

नागम्मा पार्वती की राह देखने लगी। काम तो कर रही थी, पर ध्यान तो पार्वती की ओर ही था। इसी ताक में थी कि कब वह आए और कब उसे दो तीन तमाचे लगाकर सीधे रास्ते पर लाया जाए।

पांच बज गए। पार्वती नहीं आई। नागम्मा बार-बार बाहर आकर देख रही थी। साढ़े पांच बज गए, पर पार्वती नहीं आई। नागम्मा के मन में जो गुस्सा था उसकी जगह अब बेचैनी ने ले ली। छह बजने के बाद भी पार्वती नहीं आई तो नागम्मा को अनेक प्रकार के संदेह होने लगे। आंगन में आकर सड़क की ओर देखने लगी।

पार्वती को क्या हो गया? शायद मार-पीट के डर से कहीं. . . नागम्मा सर से पांव तक कांप गई।

अब काफी देर हो चुकी थी। अंधेरा होने लगा। पशु घर लौट आए। नागम्मा आंखों में आंसू लिए आंगन में खड़ी थी। दूर से सुब्बारायुडु और पार्वती साथ आते हुए दिखाई दिए। नागम्मा की जान में जान आई। सुबह की बात याद आते ही फिर ग़ुस्सा आ गया।

"देखो, बहन। लड़की को ज़रा तमीज़ सिखाओ।"

नागम्मा ने सुब्बारायुडु की तरफ देखा।

"खेत से लौट रहा था तो यह लाल तालाब के पास दिखाई दी। लड़कों के साथ तालाब में उतरकर कमल के फूल तोड़ रही थी। देखो तो, कपड़े भी भीग गए हैं। लड़की है, अभी से बड़ों की बात मानना नहीं सीखेगी तो आगे चलकर मुश्किल में पड़ जाएगी," सुब्बारायुडु बोला।

"क्या उसमें कहीं लड़की के लक्षण हैं? यह तो लड़कों जैसी हरकतें करती है। सुबह इसने क्या किया जानते हो?"

पार्वती ने धीरे-से वहां से खिसकने की कोशिश की तो नागम्मा ने उसके बाल पकड़कर खींचा और गुस्से में ख़ूब पीटने लगी। पार्वती चुपचाप सहती रही। न रोई न बोली।

"पैदा होते ही मर क्यों न गई? एक बार ही रोकर पीछा छुड़ा लेती।"

"बस-बस, इतना भी मत मारो।" सुब्बारायुडु बीच में पड़ गया।

नागम्मा नहीं रुकी। पार्वती सुब्बारायुडु के पीछे छुपी थी। उसे खींचकर पीटने लगी और कहने लगी, "फिर उस तालाब की ओर जाएगी?"

मार खाते हुए पार्वती बोली, "जाऊंगी, मेरी मर्ज़ी।" वह बहुत ज़िद्दी थी। यह सुनते ही नागम्मा का पारा चढ़ गया। पागलों की तरह पार्वती के हाथों से और लातों से मारने लगी। सुब्बारायुडु बड़ी मुश्किल से पार्वती को छुड़ा पाया।

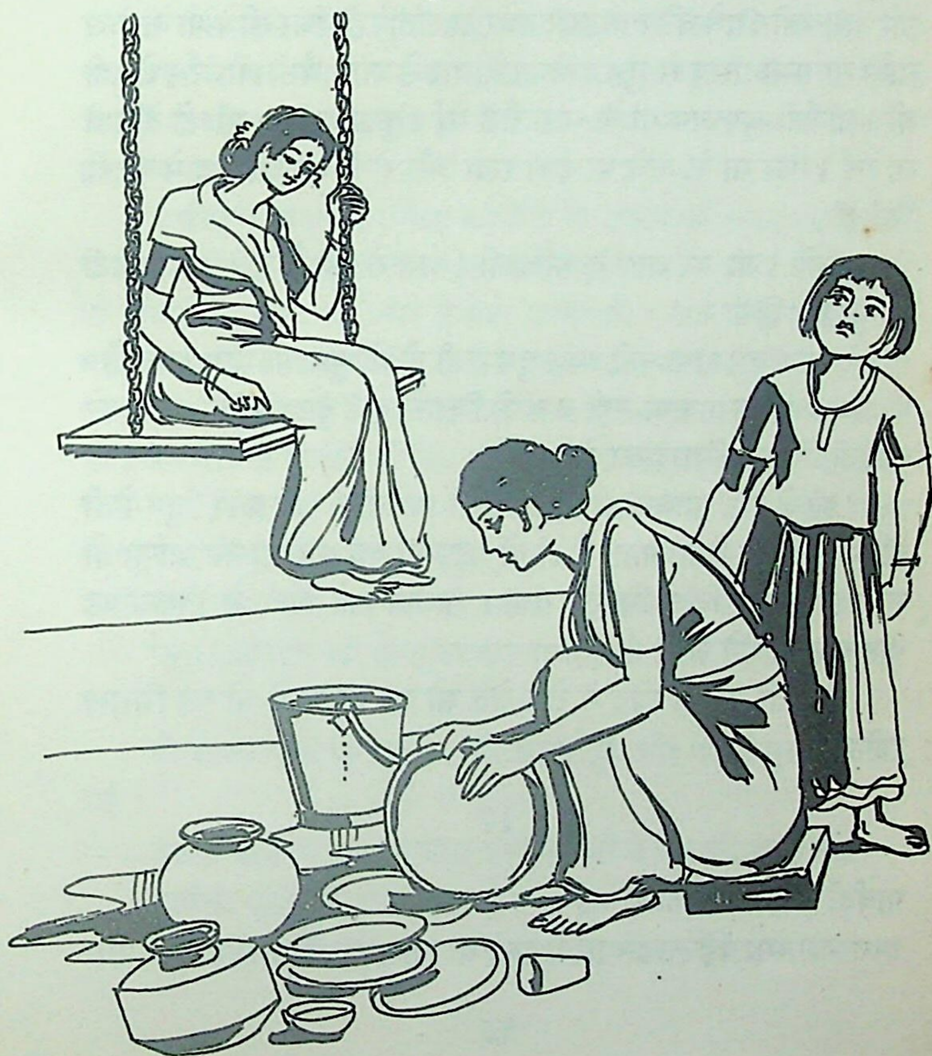
बहन से कहा, "मार डालेगी, क्या?"

"मर जाएगी तो बला टले ।" नागम्मा की सांस फूल रही थी ।

"बाबूजी, मेरी कांच की सुराही तोड़ डाली है इसने ।" सूर्यकांतम् ने पिता से शिकायत की ।

"यह काम तूने ही किया है, न ?" नागम्मा गरज पड़ी ।

नागम्मा का गुस्सा देखकर नागरत्नम् भी डर गई । उसे पता नहीं था कि हमेशा गालियां बर्दाश्त करनेवाली, मूक जानवर की तरह चुप रहनेवाली नागम्मा में इतना गुस्सा है ।



"हां, मैंने ही तोड़ा था। जब मैंने गिलास नहीं तोड़ा था तो भी उन दोनों डायनों ने मुझे कितना कोसा था।" पार्वती ने जवाब दिया।

सबने पार्वती की ओर चकित होकर देखा।

नागम्मा ने एक क्षण के लिए पार्वती के चेहरे को देखा।

एकाएक उसका दुःख उमड़ पड़ा।

भागकर अपने कमरे में चली गई।

सुब्बारायुडु, नागरत्नम् और सूर्यकांतम् भी वहां से चले गए।

पार्वती आधे घंटे तक इधर उधर टहलती रही, फिर सीधे मां के पास गई। नागम्मा पल्लू से मुंह ढांपकर दीवार से लगी बैठी थी और रो रही थी। पार्वती चुपचाप मां के पास बैठ गई। कुछ देर तक मां को देखती रह गई। फिर मां के कंधे पर हाथ रखा और रोनी-सी आवाज़ में बोली, "मां।"

"छीः! जा, परे जा! कुलच्छिनी! अब रो रही है, तू?" मां ने बेटी को दुत्कार दिया।

"मां! तुम रोना नहीं, मां! तुम रोती हो तो मुझे भी रोना आता है। मैं अब कोई ऐसा काम नहीं करूंगी जिससे तुम्हें दुःख पहुंचे।" कहकर पार्वती सिसक-सिसककर रोने लगी।

इतनी मार खाकर भी न रोनेवाली पार्वती ने जब कहा, "तुम रोती हो तो मुझे भी रोना आता है।" तो नागम्मा का सारा ग़ुस्सा क़ाफूर हो गया। उसका दिल पिघल गया। पार्वती को गोद में लेकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

पार्वती मां की गोद में रोते-रोते सो गई। नींद में भी वह सिसक रही थी।

17

पार्वती तेरह साल की हो गई।

नागम्मा बड़े लाड़-प्यार में पली थी। उस उम्र में नागम्मा के दिमाग़

का पूरा विकास नहीं हुआ था । पर पार्वती की स्थिति ऐसी न थी । जब से पैदा हुई उसने जीवन में कडुवाहट ही देखी । क़दम क़दम पर ठोकरें खाईं । इसलिए अपनी उम्र के हिसाब से वह बहुत सयानी हो गई । मन परिपक्व हो गया । घर और बाहर के जीवन में समन्वय न कर सकने के कारण उसके मन में संघर्ष होता रहता था । बाहर, स्कूल में, सब उसे चाहते थे । उससे दोस्ती करने के लिए लड़कियों में होड़-सी लग जाती थी । पर घर में पल-पल उसका अपमान होता था, तिरस्कार किया जाता था । पार्वती जैसे-जैसे बड़ी होती गई, घर के लोगों के प्रति उसका मन कडुवाहट से भर गया । घर के माहौल से नफ़रत करती थी । ख़ासकर अपनी मां की दयनीय स्थिति को देखकर उसका मन करता था कि उस घर में न रहा जाए ।

पार्वती ने साहूकार रामैया की बेटी से दोस्ती की । वह भी पार्वती के क्लास में थी । पार्वती कभी-कभी उनके घर जाती थी । सहेली की मां पार्वती के साथ बड़े प्यार से पेश आती थी । खाना खिलाती थी । बातें करती थी । उसे पार्वती पर तरस आता था । बस, यही बात पार्वती को अच्छी नहीं लगती थी । कोई उस पर तरस खाता तो वह चिढ़ जाती थी । जब पार्वती देखती थी कि उसकी सहेली को अपने घर में कितना लाड़-प्यार मिल रहा है तो वह सोचने लग जाती कि, "अगर मेरे पिता ज़िंदा होते, तो मैं भी इसी तरह खुश रहती ।" उस पिता के रूप को, जिसे उसने कभी नहीं देखा, कल्पना की आंखों से देखने की कोशिश करती ।

ऐसा कोई दिन नहीं होता था जब पार्वती की घर में पिटाई नहीं होती हो ।

दो साल पहले सूर्यकांतम् की शादी हुई और वह ससुराल चली गई ।

उसके जाने के बाद नागम्मा और पार्वती ने चैन की सांस ली ।

पार्वती थर्ड फार्म पास कर गई ।

स्कूल में फर्स्ट आई । पार्वती ने जो इनाम जीते, उन्हें देखकर नागम्मा

को पति की याद आई और वह दुखी हो गई।

नागम्मा चाहती थी कि पार्वती कम से कम स्कूल फ़ाइनल तक पढ़ ले। बेटी का जीवन मेरे जीवन की तरह न हो। अगर मैं पढ़ी-लिखी होती तो मेरी यह स्थिति नहीं होती। मेरी बेटी खूब पढ़-लिख ले। अपने पैरों पर खड़ी हो जाए। नागम्मा के मन में इस प्रकार के विचार बार-बार आने लगे।

छुट्टियां ख़त्म हो रही थीं। स्कूल खुलने का समय भी हो गया। नागम्मा इसी आशा में बैठी थी कि सुब्बारायुडु खुद पार्वती को आगे पढ़ाने की बात करेगा। पर ऐसा कुछ नहीं हुआ। पार्वती रोज़ मां से स्कूल जाने की बात कहती थी, मचलती थी।

"मां! कल्याणी के पिताजी ने एप्लिकेशन दे दिया है। ज्यादा देर करेंगे तो सीट नहीं मिलेगी।" पार्वती आकर मां के पास बैठी और बोली।

नागम्मा सोच में पड़ गई।

"कल्याणी आगे की पढ़ाई के लिए गुंटूरू के कान्वेंट में भर्ती हो रही है। मैं भी वहीं जाऊंगी।"

नागम्मा अपने ही ख्यालों में खोई थी, बोली, "ठीक है।"

"ठीक है कहकर बैठे रहने से क्या होगा? मामाजी से कहो कि अर्जी भेजें।

"ठीक है, बेटी! देखेंगे।"

"नहीं, आज ही कहो।" कहकर कोई किताब लेकर पार्वती चल पड़ी।

"कहां जा रही हो, बेटी?" नागम्मा ने पूछा।

"कल्याणी के घर। यह किताब दे आती हूं।"

"अंधेरा हो रहा है, अब कहीं नहीं जाना। मामा ग़ुस्सा होंगे। कल चली जाना," नागम्मा ने कहा। पार्वती रुक गई।

आंगन में चारपाई पर बैठकर सुब्बारायुडु चुरुट बना रहा था।

नागम्मा उसके पास जाकर खड़ी हो गई। सुब्बारायुडु ने उसे अनदेखा कर दिया और अपने ही काम में मगन रहा।

"भैया !" नागम्मा धीमी आवाज़ में बोली।

"क्या ?" सुब्बारायुडु ने पूछा।

सुब्बारायुडु जान गया था कि नागम्मा किसलिए उसके पास आई है और क्या पूछने जा रही है। इसलिए उसने दिलचस्पी नहीं दिखाई।

"इस साल बेटी की पढ़ाई के बारे में... वह गुंटूरू जाकर पढ़ने की ज़िद कर रही है," अधमरे स्वर में नागम्मा बोली।

नागरत्नम् कहीं से आ गई और बोली, "अरे, और क्या पढ़ना है ? तेरह साल की हो गई है।"

"नहीं, भाभी।"

"क्या नहीं ?... बड़े घरवाले भी लड़कियों को नहीं पढ़ा रहे हैं। गुंटूरू भेजकर पढ़ाना क्या हमारे बस की बात है ? अगर इतने ओहदेमन्द होते तो सूरीडु को नहीं पढ़ाते, हम ?"

"कम से कम स्कूल फ़ाइनल कर ले तो अपने पैरों पर खड़ी हो जाएगी न ? इसलिए..." नागम्मा ने दबी आवाज़ में कहा।

पार्वती ये बातें सांस रोककर सुन रही थी।

"अच्छा, यह बात है ? बेटी से नौकरी कराना चाहती हो ? अच्छा हुआ कि उसे नेता बनाने की बात नहीं कही तुमने। वह तो इस काबिल है। हां, तुम्हारे पति उसे डॉक्टर बनाने की बात करते थे न ? क्या ख्याली पुलाव..."

"भाभी, अब बस भी करो, मज़ाक न उड़ाओ," नागम्मा को ठेस लगी तो बीच में ही बोल पड़ी। उसे लगा कि उसके हृदय में किसी ने भाला भोंक दिया। यह पहली बार नहीं था कि नागरत्नम् ने उसका इस तरह मज़ाक उड़ाया हो।

गुस्से से नागम्मा का दिल जल उठा।

"भैया !" नागम्मा ने दीन भाव से कहा।

पर भाई न तो कुछ बोला और न ही उसकी बात पर कोई ध्यान दिया।

चुरुट को दांतों से काटकर उसे मुंह में रखा और दियासलाई का डिब्बा लेने जेब में हाथ डाला।

नागम्मा ने यह नहीं जाना था कि सुब्बारायुडु के अन्दर जो 'भाई' था, उसको मरे बहुत समय बीत गया है।

"और आगे क्या पढ़ाना है? शहर भेजकर पढ़ाने की ताक़त हममें नहीं है। जल्दी ब्याह करा दो तो बला टले। इसे विदा करके हम तीनों चैन की सांस ले सकेंगे," नागरत्नम् बोली।

नागम्मा अभी भी उम्मीद लिए भाई को देख रही थी। पार्वती बड़ी-बड़ी आंखें खोले मामा के जवाब का इन्तज़ार कर रही थी।

"अपने मन की बात कह क्यों नहीं देते? पत्थर के बुत बने चुपचाप बैठने से क्या होगा?" नागरत्नम् ने पति पर वार किया।

सुब्बारायुडु उठ खड़ा हुआ। अंगोछा झाड़कर कंधे पर डाला और बाहर चला गया।

जाते हुए पति को नागरत्नम् ने एक पल के लिए देखा और नागम्मा पर बरस पड़ी।

"इस चुड़ैल को पढ़ाएगी तो क्या यह तेरी बात मानेगी?"

"नहीं पढ़ाना चाहते हो तो रहने दो। पर मुझे चुड़ैल कहोगी तो चुप नहीं रहूंगी। अभी बता देती हूं," पार्वती स्वाभिमान से बोली।

"क्या री? मेरा दिया खाती है और मुझी को आंख दिखाती है?" आंखें मटकाती हुई नागरत्नम् बोली।

"तुम्हारा दिया नहीं खाते, हम। मेरे मामाजी... नहीं... मेरे नानाजी का दिया खाते हैं।" पार्वती ने जवाब दिया। "नानाजी की जायदाद पर मेरी मां का भी हक़ है। वैसे भी तुम लोग छोटे मामाजी का हिस्सा भी हड़पकर खा रहे हो," पार्वती जल्दी-जल्दी बोल गई।

पार्वती की बातें सुनकर नागम्मा और नागरत्नम् अवाक् रह गए।

नागरत्नम् ने अपने आप को संभालते हुए कहा, "यह सब तुम्हारी मां ने सिखाया ?"

"अगर मेरी मां के पास इतना ही दिमाग़ होता तो आज हमारी स्थिति ऐसी न होती ।"

"कल की छोकरी, कैसे बड़ों के मुंह लग रही है ? कितनी बदतमीज हो गई है ? बड़ों का लिहाज करना बिल्कुल नहीं जानती । ग़लती तो हमारी थी । उन दोनों भाइयों की तरह हम भी तेरा जिम्मा नहीं लेते तो इस सब से बच जाते । तेरी मां भीख मांगकर तुझे ज़िंदा रखती ।" नागरत्नम् ने व्यंग्य कसा ।

"इससे तो वही अच्छा होता ।"

"चुप, बदतमीज़ ।" नागम्मा का हाथ उठ गया ।

पार्वती ने मां को एक बार देखा । लापरवाही दिखाते हुए वहां से चली गई । थोड़ी देर घर में चहलक़दमी करती रही और फिर पिछवाड़े चली गई । वहां जो तोरी आदि सब्जी के बेल लगे थे, उन्हें उखाड़कर फेंकने लगी । अमरूद के पेड़ पर चढ़कर बैठ गई । छोटे-छोटे अमरूद तोड़कर चारों तरफ़ फेंकने लगी ।

नागम्मा खाना बना रही थी । मन बड़ा भारी हो रहा था ।

पार्वती कितनी ढीठ हो गई है ? बड़ों जैसी बातें करने लगी है । मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि ऐसी हो जाएगी । मुझे कभी महसूस नहीं हुआ कि यह पिताजी का घर है, इसमें मेरा भी हक़ है, बड़े भैया और भाभी छोटे भैया का पैसा खा रहे हैं । इतनी छोटी बच्ची को यह सब कैसे सूझा । इतनी बड़ी हो जाने के बाद भी मुझे कभी यह सब सूझा क्यों नहीं ? इस लड़की का क्या किया जाए ? क्या उसकी शादी कर देनी चाहिए ? अभी से शादी ? उसकी पढ़ाई बन्द कर देनी पड़ेगी ? सोचती हुई नागम्मा चूल्हे के सामने बैठ गई । उसका दिल तड़प उठा ।

"हाय ! हाय ! मरी, देखो तो क्या कर दिया इसने । इसका सिर फूटे । इसे महामारी ले जाए। देखो तोरी की क्या हालत बनादी इसने ?

नागम्मा !" पिछवाड़े में आई तो नागरत्नम्मा ने वहां का दृश्य देखा और चिल्लाने लगी ।

नागम्मा भागकर बाहर आई ।

"यह छोकरी तो मेरे घर का सर्वनाश करके ही छोड़ेगी ।" नागम्मा गालियां देने लगी । इस बीच एक अमरूद आकर उसके सिर को लगा ।

नागरत्नम् ने चौंककर पेड़ की तरफ़ देखा । "अरी, मुफ़्त का खाना खा-खाकर तुझे चरबी चढ़ी है । अमरूद से मुझे मारती है ? मामाजी को आने दो । आज फ़ैसला हो जाएगा । इस घर में या तो तुम दोनों रहोगे या मैं," कहकर वह तेज़ी से अंदर चली गई ।

"अरी, नालायक । पहले नीचे उतर ।" नागम्मा पागलों की तरह चिल्लाई । उसे लगा कि वह सचमुच पागल होती जा रही है ।

"नहीं उतरूंगी । यहां से कूदकर मर जाऊंगी । तुम सब मुझसे पिंड छुड़ाना चाहते हो न ?" वह तुनककर बोली और अमरूद तोड़कर ज़मीन पर पटकने लगी ।

नागम्मा के पैर कांपने लगे ।

यह तो कुछ भी कर सकती है । हाथ पैर तोड़ लेगी तो ? अपाहिज हो जाएगी तो एक और मुसीबत खड़ी हो जाएगी ।

"बिटिया ! मुझे मत सताओ । तेरे लिए ही सबकुछ सहक़र भी ज़िंदा हूं । मेरा दुख तुझे किस तरह समझाऊं, बता ?" कहकर नागम्मा ने अपना सिर दोनों हाथों थाम लिया और पेड़ के तने के सहारे बैठ गई । पार्वती का हठ मां का रोना देखकर पिघल गया । पार्वती जल्दी से पेड़ से नीचे उतर आई ।

जैसे ही पार्वती नीचे आई, नागम्मा का ग़ुस्सा फिर चढ़ गया । पार्वती के बाल पकड़कर उसे खूब पीटा और बोली, "फिर कभी ऐसी बदतमीज़ी करेगी, बोल ।" पार्वती चुपचाप मार खाती रही । बिलकुल भी नहीं रोई । कुछ बोली भी नहीं । जब नागम्मा के हाथ थक गए तो पीटना बन्द कर दिया ।

पिसते हुए गन्ने की तरह, नागम्मा ने काल-चक्र में पिसते हुए तीन साल और गुज़ार लिए।

अब पार्वती को सोलहवां साल लग गया।

वह एक साल पहले ही सयानी हो गई थी। वह खूब लंबी थी। वैसे तो नागरत्नम् और सूर्यकांतम् की पुरानी साड़ियों को पहनती थी, फिर भी जवानी फूल की तरह उसके बदन पर खिलती जा रही थी।

पार्वती में प्राकृतिक सुन्दरता थी। उम्र के साथ-साथ उसका हठीलापन भी बढ़ता गया। हर पल वह परिस्थितियों से जूझने के लिए तैयार रहती थी।

सूर्यकांतम् गर्भवती थी। प्रसव के लिए मायके आई। पति उसे छोड़ने आया था। दो दिन रहा। जब तक रहा, वह पार्वती को घूरता ही रहा। पार्वती इस बात से परेशान हो गई। उसकी नज़रें जब पार्वती के शरीर पर पड़तीं तो उसे लगता था कि बदन पर कीड़े रेंग रहे हैं।

तीसरे दिन सूर्यकांतम् ने अपनी मां से कहा, "ये जल्दी चले जाएं तो अच्छा होगा, मां।"

"यह कैसी बातें करती हो बेटी? और चार दिन रुकने के लिए कहो न?" मां ने आश्चर्यचकित होकर कहा।

"वे चार दिन यहां रहेंगे तो मुझे छोड़ने की नौबत आ जाएगी।" नागम्मा जूठे बर्तन पिछवाड़े ले जा रही थी। उसने ये बातें सुनीं। उसके क़दम अपने आप रुक गए।

पार्वती वहीं बैठी उपन्यास पढ़ रही थी। उसके कान खड़े हो गए।

नागरत्नम् बेटी की बातों का मतलब समझ न सकी।

"वह लौंडी उन्हें रिझाने की कोशिश कर रही है। जब से आए हैं, देख रही हूं कि उनकी आंखें उसी पर लगी हैं। न जाने क्या जादू कर दिया उसने।" सूर्यकांतम् शिकायत करने के अंदाज़ में बोली।

"बस, किसी की बात नहीं मानती। किसी का डर नहीं है उसे। मां तो कुछ देखती नहीं। मुझे नहीं लगता कि वह शादी करके सबकी तरह

गृहस्थी बसाएगी। अगर शादी हो भी जाए तो पति का साथ नहीं निभाएगी। किसी के साथ भाग जाएगी और हमें बदनाम करके छोड़ेगी। देखते रहना। उसका इठलाकर चलना, आंखें मटकाना... हाय, राम !.. क्या ये सारे लक्षण बता नहीं रहे हैं कि वह कैसी लड़की है ?" नागरत्नम् कनखियों से नागम्मा को देखते हुए बोली।

नागम्मा के हाथ से बर्तन छूट गया।

वह अचेत सी खड़ी रह गई।

पार्वती ने हाथ में पकड़ी किताब को फेंक दिया। वह आकर सूर्यकांतम् के सामने गिरी। आंधी की तरह आकर पार्वती मां और बेटी के सामने खड़ी हो गई।

"आंखें फाड़कर तेरा पति मुझे ऐसे देखता है जैसे ज़िंदा निगलना चाहता हो। उसे समझाओ कि कुत्ते की तरह लड़कियों के पीछे न दौड़े। बड़ा सुन्दर है जो मैं उसपर जादू चलाऊं ? उसका चेहरा देखकर तो मुझे उल्टी आ जाती है, समझी !" अपना ग़ुस्सा उगलकर पार्वती हांफने लगी।

सुनकर मां-बेटी अवाक् रह गयीं।

नागम्मा ने पार्वती का हाथ पकड़ लिया और जबरदस्ती वहां से खींचकर ले जाने लगी। मां के साथ जाते हुए पार्वती ने मुड़कर फिर कहा,

"देखते रहो। ज़रूर किसी के साथ भाग जाऊंगी। तुम सबको बदनाम करूंगी। तुम्हारे चेहरों पर कालिख पोतकर ही मेरा गुस्सा ठंडा होगा। कुछ भी हो तेरे पति जैसे कुरूप आदमी से शादी नहीं करूंगी।"

नागरत्नम् और सूर्यकांतम् की बोलती बन्द हो गई वे एक दूसरे की तरफ़ सिर्फ़ देखती रह गयीं।

पार्वती ने मां से खूब मार और गालियां खाईं और खाली पेट ज़मीन पर सो गई। नागम्मा उसके पास बैठी उसी को देखती रही।

वह सोचने लगी।

हां, पार्वती शादी के लायक हो गई है। उसकी शादी कर देने से इस घर से तो उसे छुटकारा मिल जाएगा। इस क़ैद से आज़ाद हो जाएगी।

उस दिन से रोज़ नागम्मा पार्वती की शादी के बारे में सोचने लगी ।

दुनिया ने कहा, "उम्र तो शादी के लायक़ हो गई है ।"

लोगों ने कहा, "शादी कब करेगी ?"

"कोई रिश्ता मिला ?"

"देर हो जाने से वर नहीं मिलेगा । जल्दी करो ।"

"आजकल दहेज़ दिए बिना अच्छे रिश्ते कहां मिलते हैं ?"

परिचित लोग तरह तरह के सवाल पूछने लगे । सब की बातें सुनकर नागम्मा बेचारी जवाब नहीं देती थी । भला, क्या जवाब देती ?

नागम्मा और वेंकटराव ने बेटी को डॉक्टरी पढ़ाने के सपने देखे थे । वे सब सपने मिट्टी में मिल गए ।

पार्वती की पढ़ाई आठवीं के बाद ही रूक गई ।

नागम्मा की आंखों के सारे सपने उसके आंसुओं में बह गए ।

दोनों को पेट भरना ही दुश्वार हो गया ।

हाथ पैर तोड़कर खटना और दो कौर खाने के लिए खरी-खोटी सुनना पड़ रहा है । अब पार्वती की शादी की चिन्ता नागम्मा के गले का फंदा बन गई थी ।

18

वे गर्मी के दिन थे ।

सूर्यास्त हो जाने के बांद भी गर्म लू चल रही थी ।

सुब्बारायुडु बाहर आंगन में बैठा चुरुट पी रहा था ।

"बहन ! थोड़ा पानी पिला दो ।" नागम्मा को पुकारा ।

नागम्मा ने पानी का लोटा पकड़ाया । पानी गट-गट पीकर खाली लोटा बहन को दे दिया ।

नागम्मा ने लोटा ले लिया, पर वहां से हिली नहीं । सुब्बारायुडु ने देखकर भी अनदेखा कर दिया और चुरुट का एक और कश भरा ।

"भैया ! पार्वती के लिए कोई रिश्ता देखो ।" पार्वती ने धीमी

आवाज़ में कहा ।

"हां, देखूंगा ।" सुब्बारायुडु ने लापरवाही से कहा ।

"फिर सोचना क्या ? उस भद्रैया से तय कर दो, न ?" नागरत्नम् पोते को गोद में लिए खड़ी थी, बोली ।

"कैसी बातें करती हो भाभी । सोने की गुड़िया जैसी बेटी को उस बूढ़े के साथ बांध दूं ? उसका गला काटने को कहती हो ?" नागम्मा ने दुःखी होकर कहा ।

"भई, तुम भी कितनी अजीब हो ? वह बूढ़ा कहां है ? पचास भी पूरे नहीं हुए होंगे ! भद्रैया में क्या कमी है ? हट्टा-कट्टा आदमी है ?"

नागम्मा का गला भर आया । उसने बस इतना ही कहा, "पार्वती तो अभी सोलह साल की भी नहीं है, भाभी ।"

"तो क्या हो गया ? जानती हो वह कितना अमीर आदमी है ? उसने खुद ही तुम्हारी बेटी का हाथ मांगा है । यह तुम्हारी खुशकिस्मती है । खाने-पहनने की कोई कमी नहीं होगी । जीवन आराम से बीतेगा । तुझे भी आसरा मिल जाएगा ।"

अंतिम शब्दों से नागम्मा के स्वाभिमान को ठेस लगी ।

गुस्से में आकर बोली, "भाभी ! क्यों मुझे नीचा दिखाने की कोशिश करती हो ? एक समय था जब इस घर में, तुम्हारी आंखों के सामने, मैं रानी की तरह रह रही थी । तुम तो उस तरह की ज़िंदगी की कल्पना भी नहीं कर सकती थी । कब किसके साथ क्या हो जाएगा, कोई कह नहीं सकता । इतना भी मुझे मत दुत्कारो, जैसे मैं कोई कीड़ा हूं । मैं भी इसी घर की बेटी हूं, तुम यह मत भूलो ।"

"क्यों जी, देख रहे हो ? इसकी बातें तो सुनो । अब मैंने ऐसा क्या कह दिया कि यह मुझे इतनी बातें सुना रही है ? मुझे अपने मायके में उतना लाड़-प्यार नहीं मिला जितना उसे इस घर में मिला है, इस बात के लिए मुझे ताने दे रही है । इसीलिए कहते हैं कि अच्छा करो तो बुराई मिलती है । तेरे भले के लिए हम तुझे समझा रहे थे । बाप रे ! इसके लिए

इतना कुछ बोल गई तू ?... यह तो मेरे पति की ग़लती थी । उन दोनों की तरह ये भी तेरी ज़िम्मेदारी नहीं लेते...” नागरत्नम् ने मुंह खोल दिया । शब्दों का प्रवाह अपने आप पहाड़ के ऊपर से गिरते पत्थरों की तरह शुरू हो गया ।

“बस भी करो, भाभी ।” आंखों में आंसू भरकर कहती हुई नागम्मा अंदर चली गई ।

सुब्बारायुडु पत्थर की मूर्ति की तरह चुरुट के कश खींचता बैठा रहा ।

दो महीने में पार्वती के सत्रह साल पूरे हो जाएंगे । किसीने उसकी शादी की बात नहीं छेड़ी । नागम्मा को दिन-रात पार्वती की शादी की चिंता खाए जा रही थी । पार्वती का व्यक्तित्व उस घर के वातावरण में ढल नहीं पा रहा था ।

नागम्मा का दिल बेचैन था । जब वह पार्वती की उम्र की थी, तब तक जीवन के कई अनुभवों से गुज़र चुकी थी । शादी हुई, शहर में गृहस्थी बसाई । बच्चे की मां बनी । विधवा हो गई । सुहाग मिट्टी में मिल गया और वह मायके आ गई ।

नागम्मा यही आस लगाए बैठी थी कि सुब्बारायुडु पार्वती को अपनी बहू बनाएगा । पर वे दहेज़ चाहते थे । इसलिए बाहर रिश्ते ढूंढ़ रहे थे । यह देखकर नागम्मा निराश हो गई ।

बाक़ी दो भाई शहर में घर बसाकर रहते हैं । चलपति पार्वती से शादी कर लेता तो कितना अच्छा होता । चलपति तो पार्वती को बहुत चाहता था । नागम्मा को लगा कि ये सब विचार बड़े बेतुके हैं । अब चलपति पहले जैसा कैसे हो सकता है ? अपने भाइयों को अपनी आंखों के सामने पूरी तरह बदलते हुए उसने देख लिया था । चलपति दो भाइयों की जायदाद का वारिस है । उसे एक नहीं दो-दो मांओं का प्यार-दुलार मिल रहा है । वह भला पार्वती से क्यों शादी करने लगा ?

“बेटी की शादी कब कर रही हो, नागम्मा ?”

"अब तक दो बच्चों की मां हो जाती । बेचारी, अभी तक कुंआरी है ।"

"भई, अपनी हालत को ध्यान में रखकर सपने देखना चाहिए । रहते हैं दूसरे के दया-धर्म पर और आशाएं हैं कि आसमान को छूती हैं । उस भद्रैया में क्या कमी है, जो उसका रिश्ता मंजूर नहीं है, इन्हें ?"

इसक प्रकार नागम्मा पर गांव के लोग तीर चला रहे थे ।

लोगों का यह शोर दिन-रात नागम्मा के कानों में गूंजता रहता था ।

एक दिन उससे रहा न गया तो सुब्बारायुडु से बोली, "क्यों भैया ? पार्वती की शादी के बारे में क्या तय किया है ? इस तरह चुप रहोगे तो काम कैसे चलेगा ?"

सुब्बारायुडु हल बांध रहा था, बोला, "कहां देखूं बहन ? रिश्ता कहां से लाऊं ?"

"ऐसा मत कहो, भैया ! बेटी को और कितने दिन घर में बिठाए रखेंगे ?" उसके स्वर में दुःख भी था और ग़ुस्सा भी ।

"बोलो, मैं क्या करूं ? बिना दहेज़ दिए आजकल लड़की की शादी करना कितना मुश्किल है, यह तुम भी जानती हो । बात को ज़रा समझो ।"

"भैया ।" नागम्मा की आवाज़ में दर्द था ।

सुब्बारायुडु ने उसकी ओर देखा ।

"भैया, तुम्हारे दो बेटे हैं..." स्वाभिमान ने उसे आगे कुछ बोलने न दिया ।

"मैं इसमें क्या कर सकता हूं ? तुम्हारी भाभी नहीं मानेगी । जो कुछ पैसा मेरे पास था, वह सब उन दोनों की पढ़ाई में खर्च हो गया । तेरी बेटी से शादी करेंगे तो उनके बच्चों को भीख मांगनी पड़ जाएगी ।" कहकर बैलों को हांकता हुआ सुब्बारायुडु चला गया ।

उसके पीछे पीछे चलते हुए नागम्मा बोली, "तुम कितने बदल गए हो, भैया ! एक समय था जब मैं ज़मीन पर चलती तो तुम्हें दुःख होता था कि मेरे पैर छिल जाएंगे । मुझे ज़रा भी तकलीफ़ होती तो तुमसे देखा

नहीं जाता था। वह भैया कहां चला गया ?" इतने दिनों तक जो वेदना नागम्मा के मन में घुमड़ रही थी, वह सब बाहर आ गई।

सुब्बारायुडु ठिठक गया। चेहरे पर दुःख के साए एक पल के लिए दिखाई दिए। इतने में ही उसकी पत्नी वहां आकर खड़ी हो गई।

"पागल मत बनो ! उस भद्रैया के साथ बेटी की शादी कर दो। हवाई किले मत बनाओ।" कहकर सुब्बारायुडु चला गया। वह इतनी ऊंची आवाज़ में बोला कि पत्नी को भी उसकी बातें सुनाई दें।

"आप क्यों बीच में बोल रहे हैं। आपकी बहन तो अपनी बेटी की शादी किसी गंधर्व से या कलक्टर से करना चाहती है," नागरत्नम् ने ताना कसा।

"भाभी !" नागम्मा ज़ोर से चीखी। तब तक सुब्बारायुडु घर से बाहर निकल गया था। नागरत्नम् ने एक बार नागम्मा को देखा और अंदर चली गई।

नागम्मा के दिमाग़ में ज्वालामुखी फूटने लगे।

मन की गहराइयों में किसी के प्रति द्वेष की ज्वाला धधकने लगी।

बस उसे अब निर्णय लेना है।

उस भद्रैया से पार्वती का रिश्ता करेगी।

नागम्मा ने आंचल से आंसू पोंछे और भद्रैया के घर समाचार भेजा।

पार्वती वहीं खड़ी थी। बलि पर चढ़ाए जानेवाले बकरे की तरह, कांपती आवाज़ में वह केवल "मां" कह सकी।

"हां, बेटी ! मैं अपने ही हाथों से तेरा गला काटने जा रही हूं। तेरे खून से मेरे हाथ रंगनेवाले हैं, बेटी। जो काम किसी मां ने नहीं किया, वह मैं करने जा रही हूं। इसके सिवा मैं कर भी क्या सकती हूं? कहकर नागम्मा ने बेटी को गले से लगाया और फूट फूटकर रोने लगी।

पार्वती का हठीलापन हमेशा मां के आंसुओं के सामने कमज़ोर पड़ता रहा है। मां की असहाय स्थिति को समझ गई। वह भी चुपचाप मां की छाती से चिपकी रोती रही।

नागम्मा ने अपने स्वर्गवासी पति और कहीं ज़िंदा भटकनेवाले सत्यम् भैया को याद करके आंसू बहाए।

19

भद्रैया बारात लेकर आया और पार्वती की शादी हो गई।

शादी के समय बेटी की दयनीय स्थिति पर नागम्मा आंसू बहाती रही।

पति के साथ मिलकर बेटी के भविष्य के कितने सुन्दर सपने देखे थे, उसने। कितनी उम्मीदों से कल्पना के सुन्दर महल बनाए थे। अब पार्वती को इस बूढ़े के साथ ब्याहना पड़ा। पति की आत्मा मुझे जरूर शाप देगी। नागम्मा सोच-सोचकर रो रही थी।

"चुप हो जा, नागम्मा। अपनी मर्ज़ी से तुमने बेटी का हाथ उसके हाथ में दिया है। अब रोने से क्या फायदा?"

"दामाद और बेटी हमेशा सुखी रहें, खुश रहें यही आशीर्वाद दो। रोना नहीं। इससे अमंगल होता है।"

स्त्रियां नागम्मा को समझा रही थीं। तसल्ली दे रही थीं।

शादी की अगली सुबह बेटी के साथ नागम्मा भी दामाद के घर चली गई। पार्वती ने ज़िद पकड़ ली थी कि मां साथ नहीं आई तो वह भी नहीं जाएगी। इसलिए नागम्मा को जाना ही पड़ा।

पहले तो बेटी को बहुत समझाया, "बेटी, शादी होते ही मैं तुम्हारे साथ तुम्हारे पति के घर गई तो लोग हसेंगे। मेरी बात मान जा।"

"लोग हसेंगे तो कोई बात नहीं। लोगों ने हमारी क्या मदद की? हम क्यों दुनिया से डरें? जानती हो, मैं शादी करने को क्यों राज़ी हुई? तुम्हें इस नरक से बचाने के लिए। अगर तुम इन लोगों के साथ इस घर में रहोगी तो मुझे न मेरा पति चाहिए न अपना घर।" पार्वती ने साफ़-सांफ़ कह दिया।

नागम्मा चकित होकर बेटी को देखती रह गई। मेरी बच्ची ने मेरे



लिए इतना बड़ा बलिदान दिया । नागम्मा ने बेटी को प्यार से गले लगा लिया ।

नागम्मा दामाद के घर में ही रहने लगी । समय आराम से गुज़र रहा था ।

सालों बाद नागम्मा को लगा कि वह फिर से ज़मीन पर चल रही है ।

जीने का सहारा मिल गया था ।

यहां वह चुपचाप बैठी नहीं रहती थी । बेटी से कोई काम नहीं करवाती थी । घर का सारा काम खुद करती थी । पर यहां वह खुशी से काम करती थी । स्वेच्छा से करती थी । उस पर किसी प्रकार का दबाव नहीं था । ग़ुलामी की भावना नहीं थी । समय पर खाना मिलता था । हर साल दो सफेद धोतियां मिल जाती थीं । उन्हें पाने के लिए ताने नहीं सुनने पड़ते थे । इससे ज़्यादा क्या चाहिए ? सबसे अच्छी बात तो यह थी कि चौबीस घंटे बेटी आंखों के सामने रहती थी ।

भद्रैया के पास पचास एकड़ ज़मीन थी । घर भी बहुत बड़ा था । अपनी खेती खुद करता था । पर अपने काले बदन तथा मोटी तोंद की वजह से देखने में कुरूप लगता था ।

पहली पत्नी को गुज़रे दो साल हो चुके थे । जब बच्चे होने की आशा नहीं रही तो पति-पत्नी ने भद्रैया के भानजे को गोद में ले लिया । उसे अपने बच्चे की तरह प्यार से पाला-पोसा । उसका नाम सूर्यनारायणा था । वह अब बाईस साल का नौजवान था । शहर में एम.ए. के दूसरे साल में पढ़ रहा था । भद्रैया ने शादी होने तक उसे इसके बारे में नहीं बताया ।

सूर्यनारायणा ने जब भद्रैया की दूसरी शादी के बारे में सुना तो पिता को चिट्ठी लिखी और भला-बुरा कहा । भद्रैया से छुपाकर पार्वती ने वह चिट्ठी पढ़ी ।

"इस उम्र में तुम्हें दूसरी शादी करने की क्या ज़रूरत थी ? अगर शादी करनी ही थी तो तीस साल की किसी विधवा से करते । इतनी

छोटी उम्र की लड़की को पैसे का लालच देकर फंसाने में शर्म नहीं आई? अगर तुम्हारे बच्चे होते तो उसकी उम्र की तुम्हारी बेटियां होतीं।" इसी प्रकार के कठोर, तीखे शब्दों से चिट्ठी भरी पड़ी थी।

यह चिट्ठी पढ़कर पार्वती को खुशी हुई। उसकी नज़र में सूर्यनारायणा एक आदर्श पुरुष बन गया। बड़ी बेचैनी से वह उसके आने की राह देखने लगी।

एक दो बार उसने भद्रैया से सूर्यनारायणा के बारे में बात करने की कोशिश की। हर बार भद्रैया बात बदल देता था।

रसोई पर नागम्मा का ही अधिकार था। दामाद का खाना भी खुद परोसना शुरू कर दिया। दामाद भी उससे आत्मीयता से पेश आने लगा। पर उसमें नागम्मा को एक प्रकार का छिछोरापन दिखाई दिया। दामाद है यह समझकर अनदेखा करना पड़ा।

कभी कभी दामाद के बर्ताव से उसका मन दुखी हो जाता था। पर सोचती थी कि शायद मैंने ही समझने में ग़लती की है। यह सोचकर चुप रह जाती थी कि शायद इस आदमी का स्वभाव ही ऐसा है।

रात को जब वह दामाद को खाना परोसती तो वह सास की आंखों में आंखें डालकर विचित्र भाव से घूरता था।

'पता नहीं सारा खाना कहां जाता है? उसकी आंखों में इतनी भूख क्यों है?' उसकी आंखों में ऐसा भाव देखकर नागम्मा का मन कसैला हो जाता था। लगता था कि शरीर पर बिच्छू रेंगने लगे हैं। मन को कितना भी समझाती, उस आदमी के प्रति नफ़रत का भाव बढ़ता ही जाता था।

कुछ भी हो, वह मेरा दामाद है।

मुझे अपनी बेटी का सुख चाहिए।

उसकी गृहस्थी ठीक हो, इस एक इच्छा की पूर्ति के लिए वह सब कुछ करने को तैयार थी।

एक रात उसकी जिंदगी में ऐसी आई, जिसकी कभी कल्पना तक नागम्मा नहीं कर सकती थी।

किसी भी स्त्री के जीवन में ऐसी रात कभी न आए।

वह एक कालरात्रि थी।

मानव में छुपा जानवर जाग उठा था। युगों से आदमी के स्वभाव में निहित दुष्टता उस रात साकार रूप में नागम्मा के सामने आकर खड़ी हो गई।

उस रोज़ रसोई में नागम्मा झुककर दामाद की जूठी थाली उठा रही थी। तभी किसीने उसका पल्लू पकड़कर ज़ोर से खींचा। नागम्मा हड़बड़ाकर खड़ी हो गई और उसने मुड़कर देखा। भद्रैया!

नागम्मा का शरीर नफ़रत से कांप गया।

"छी!" कहकर घायल शेरनी की तरह वह उठ खड़ी हुई। गुस्से से खून खौलने लगा। दीवार से लगी चौकी उठाकर भद्रैया पर फेंकना चाहा। एक क्षण के लिए हिचकिचाई। भद्रैया, यह जंगली जानवर, मेरा दामाद है। इसने मेरी बेटी के गले में मंगलसूत्र डाला है।

ग़ुस्सा निकालने के लिए चौकी को ज़मीन पर रखी थाली पर दे मारा।

थाली "टन..." से बज उठी।

भद्रैया घबराकर, जल्दी-से भाग खड़ा हुआ।

"तू पार्वती का पति है। नहीं तो वह चौकी तेरे मुंह पर दे मारती", नागम्मा के ये शब्द भद्रैया के कानों तक पहुंचे। नागम्मा बड़ी मुश्किल से उमड़ते गुस्से को और आंसुओं को रोक पाई। दांत पीसकर रह गई।

पर सारी रात अपने जीवन के बारे में सोचती रही। अपनी दयनीय स्थिति पर आंसू बहाती रही।

सुबह अपना बिस्तर बांधा और चल पड़ी। कुछ कहा-सुनी हो भी जाए तो भी भाई के घर को ही अपने रहने के लायक समझा।

मां को सामान बांधते देखकर पार्वती ने पूछा, "कहां जाने की तैयारी है, मां?"

"मामा के पास जा रही हूं बेटी। देखने को मन कर रहा है," नागम्मा

बिना सिर उठाए बोली ।

"झूठ । तुम मुझसे कुछ छुपा रही हो । क्या हुआ, बताओ मां । तुम्हारे दामाद ने कुछ कह दिया क्या ?" पार्वती ने पूछा ।

नागम्मा ने चौंककर सिर उठाया और बेटी को देखा ।

वह क्या कहती ? क्या बताएगी कि क्यों घर छोड़कर जा रही है ? उसके साथ जो हुआ इसके बारे में किसी से कैसे कहे ? फिर अपनी ही बेटी से कैसे कहे कि तुम्हारे पति ने मेरा पल्लू पकड़कर खींचा ? कोई मां अपनी बेटी से यह बात कह सकेगी भला ?

"तुम चली जाओगी तो मैं एक पल के लिए भी यहां नहीं रहूंगी । तुम्हारे लिए ही यह शादी करने को राज़ी हुई थी । चलो, दोनों चलते हैं । तुम अगर इस घर में नहीं रहना चाहती तो मैं तुम्हें मजबूर नहीं करूंगी । चलो कहीं बर्तन मांजकर जिंदगी गुज़ार लेंगे ।" पार्वती का गला रूंध गया । पार्वती की ज़िद को नागम्मा खूब जानती थी । जो कहती है, करके दिखाती है । लाख समझाने पर भी बात नहीं मानेगी ।

उसने अपना सामान अंदर रख दिया ।

नागम्मा चुपचाप अन्दर जाकर घर के काम में लग गई । बेटी की गृहस्थी ठीक चले, यही उसकी इच्छा थी । पार्वती के लिए वह कोई भी दुःख सहने को तैयार है । किसी भी अपमान का सामना करने से नहीं डरती ।

20

नागम्मा के लिए दामाद के घर में यमलोक के द्वार खुल गए ।

भद्रैया बात बात पर नागम्मा पर आग उगल रहा था ।

बिल्ली-कुत्ते के बहाने सास को अनाप-शनाप सुना रहा था ।

फिर भी उसकी भूख अभी भी शान्त नहीं हुई, यह बात उसकी आंखों से ज़ाहिर हो रही थी । दामाद की बातों से ज्यादा उसकी नज़रों से नागम्मा परेशान थी । उन आंखों को सहना कठिन हो रहा था । नागम्मा

को डर था कि कहीं पार्वती को सच्चाई का पता न लग जाए। जब नागम्मा काम कर रही होती तो भद्रैया उसके सामने आकर खड़ा हो जाता और उसे घूरने लगता। यह देखकर नागम्मा का मन नफ़रत से भर जाता। उसे अपने आप से नफ़रत होने लगी थी।

आंगन में लेटे कुत्ते को लात मारते हुए भद्रैया बोला, "मेरे घर का खाना खाकर कितना मोटा हो गया है, तू?" वह रोता हुआ वहां से भाग गया। नागम्मा जान गई कि ये बातें कुत्ते के लिए नहीं उसके लिए ही कही गई हैं। पर चुप रही।

दूसरे दिन आंगन की दीवार पर बैठा, एक कौआ बोल रहा था। नागम्मा वहीं बैठी बर्तन मांज रही थी।

"चर्बी चढ़ गई है क्या? क्यों इतना शोर मचाते हो?" भद्रैया ने एक तीली कौए पर फेंकी।

पर वह जाकर नागम्मा की पीठ को लगी। नागम्मा चौंक पड़ी। बात समझ में आ गई। फौरन तीली हाथ में लेकर उठ खड़ी हुई। आंखें अंगारों की तरह लाल थीं। तीली भद्रैया पर फ़ेंकना चाहती थी, पर "छी!" कहकर उसे ज़मीन पर दे मारा। भद्रैया भीगी बिल्ली की तरह खिसक गया।

एक दिन नागम्मा को सुनाने के लिए बिल्ली से भद्रैया से कहा, "दूध-दही खाकर कितनी चिकनी और मोटी हो गई है री, तू।"

एक बार अकारण ही पार्वती पर खीज गया।

पार्वती चुप न रही, विरोध किया।

भद्रैया ने पार्वती पर हाथ उठाया।

पार्वती ने पति का हाथ ज़ोर से अपने दातों से काटा।

गालियां देते हुए भद्रैया खेत की तरफ़ चला गया। उसकी गालियां ज्यादातर पार्वती के लिए न होकर मेरे लिए ही हैं, यह नागम्मा समझ गई।

नागम्मा रसोईघर में दीवार से पीठ टिकाए बैठ गई। मैं क्या करूं? एक तरफ़ बेटी की गृहस्थी! दूसरी ओर मेरा मान-सम्मान। पार्वती को

बिना बताए यहां से चली जाऊं तो ?

"मां" पार्वती की आवाज़ सुनकर नागम्मा ने सिर उठाकर उसकी तरफ़ देखा । देखते ही स्तब्ध रह गई ।

पार्वती के बाल बिखरे थे । माथे पर चोट उभर आयी थी । आंखें अंगारों की तरह लाल थीं । गुस्से से हांफ रही थी । नागम्मा बेटी को देखती रह गई ।

"मां, चलो यहां से चलें । इस घर में एक पल के लिए भी नहीं रुकूंगी ।" पार्वती बोली ।

नागम्मा पार्वती की बातें नहीं समझ सकी । मुंह ताक़ती रह गई ।

"यही काम हम दूसरी जगह करके गुज़ारा कर सकते हैं । चलो, चलें ! अब उस बूढ़े का मुंह भी नहीं देखना चाहती ।" पार्वती ने कहा ।

नागम्मा ने उठकर बेटी का सिर छाती से लगा लिया और बोली, "ग़लत बात है, बेटी । ऐसा नहीं कहते । अच्छे घर की बेटियां घर छोड़कर नहीं जातीं । चाहे जितना भी दुख भोगना पड़े चार दीवारों के बीच ही रहती हैं । इसी में स्त्री की मर्यादा है ।"

"मैं हरगिज मर्यादा के नाम पर ऐरे-गैरे की गाली नहीं सहूंगी । चलो, चलें ।"

"कहां जाएंगे, बेटी ? मैं अभी बूढ़ी नहीं हुई, तू तो अभी जवान है । ऐसी स्थिति में मैं तुझे कहां ले जाऊं ? क्या यह दुनिया हमें इज़्ज़त से जीने देगी ?" नागम्मा ने उदास होकर कहा ।

"कहीं न कहीं जाएंगे । बस, यहां नहीं रहना है," पार्वती ने ज़िद पकड़ ली ।

"नहीं बेटी, ऐसा मत कहो । स्त्री का जीवन केले के पत्ते के समान नाज़ुक होता है । हमारा परिवार निष्कलंक है । तू अगर पति को छोड़कर जाएगी तो हम बदनाम हो जाएंगे, बिटिया ।" नागम्मा ने बेटी को समझाया ।

पार्वती तेज़ी से अपने कमरे में चली गई । बेटी को देखकर नागम्मा

ने गहरी सांस ली।

पार्वती न तो अपने पति को चाहती थी न नफ़रत ही करती थी। हाथ में पैसा हो तो साड़ियां खरीदती। जो भी मिलती, अच्छी-बुरी, सब तरह की किताबें पढ़ती थी। लगता नहीं था कि वह और किसी के बारे में सोचती है।

पार्वती जान गई कि भद्रैया अपने भानजे से डरता है। शादी के छः महीने बाद सूर्यनारायणा एक बार आया और दो रोज़ रहक़र चला गया।

उन दो दिनों में भद्रैया ने पार्वती के प्रति आत्मीयता और नागम्मा के प्रति आदर के भाव प्रकट किए थे। नागम्मा को लगा कि भद्रैया पार्वती से डर रहा है। उसने बेटी से इसके बारे में पूछा तो वह शरारत भरी मुस्कान होंठों पे लाकर मां को देखती रही।

"बोलो, बेटी?"

"कहूंगी तो मुझसे ग़ुस्सा करोगी।"

"नहीं करूंगी, बता।"

"मैंने उस बुड्ढे से साफ़-साफ़ कह दिया कि मैं उसे नहीं चाहती। अगर मुझे तंग किया तो किसी के साथ भाग जाऊंगी। इस बात से वह बहुत डर गया। बेचारा, बुड्ढा।" खिलखिलाकर हंसते हुए पार्वती ने कहा।

नागम्मा बुत सी खड़ी रह गई। यह कैसी लड़की है? पति का बिल्कुल आदर ही नहीं करती? उसने इतनी बड़ी बात इतनी आसानी से कैसे कह डाली?

"ग़लत बात है बेटी। ऐसी बातें अपने मुंह से नहीं बोलनी चाहिए।" नागम्मा जान नहीं पाई कि बेटी को क्या कहकर समझाए।

पार्वती बेफिक्री से हंस दी।

21

दिसंबर की छुट्टियां बिताने सूर्यनारायणा घर आया।

आते समय पार्वती के लिए प्लास्टर ऑफ पेरिस से बनी, राधा कृष्ण

की मूर्ति ले आया ।

उसे देखकर पार्वती फूली न समायी । उस दिन पार्वती की आंखों में चमक देखकर नागम्मा हैरान रह गई ।

सूर्यनारायणा के आने से नागम्मा ने राहत की सांस ली । भद्रैया का जुल्म कम हुआ । जब से भानजा आया भद्रैया सुबह-सवेरे खाना खाकर खेत पर जाने लगा और देर रात घर लौटने लगा । सूर्यनारायणा नागम्मा के साथ हिल मिल गया था । नागम्मा भी उसे बेटे की तरह चाहने लगी ।

पर पार्वती के साथ उसका खुलकर बात करना, हमेशा आमने-सामने बैठकर गप-शप करना नागम्मा को अच्छा नहीं लगा । उसें डर था कि कुछ कहने से बच्चे दुखी होंगे । पराया तो नहीं है । पति का भानजा ही तो है । हमउम्र लड़का है । शहर की बातें बताता तो पार्वती शौक से सुनती थी । जब से वह आया पार्वती का उत्साह बढ़ गया । पहले जैसी ज़िद्दी भी नहीं रही । उसका स्वभाव ही बदलने लगा है । कम से कम इसी वजह से पार्वती में परिवर्तन आ जाए और वह पति का आदर करना सीख ले तो बेहतर होगा । कितनी खुश दिखाई देने लगी है, आजकल । इससे ज्यादा मुझे क्या चाहिए ? सूर्यनारायणा अच्छा लड़का है, शरीफ है । वह नहीं जानता क्या कैसे बर्ताव करना है ?

नागम्मा ने अपने मन को अनेक प्रकार से समझाया ।

पर एक दिन दोपहर को...

बेटी के कमरे के अधखुले दरवाज़े को खोलकर नागम्मा ने जैसे ही उसके कमरे में जाने के लिए कदम बढ़ाया तो ठिठककर रुक गई ।

अपनी आंखों पर उसे विश्वास नहीं हुआ ।

पैरों के नीचे ज़मीन खिसकने लगी ।

शरीर काठ हो गया ।

'मैं क्या देख रही हूं ? सपना है या सच ? नहीं सपना । हां, सच है ।' वह हतप्रभ रह गई ।

पार्वती पलंग के किनारे बैठी थी। सूर्यनारायणा उसकी गोद में सिर रखकर लेटा था। पार्वती की उंगलियां उसके बालों से खेल रही थीं। वह तन्मयता से झुककर उसके चेहरे को देख रही थी।

नागम्मा उल्टे पांव लौट गई।

पैर हवा में चल रहे थे। मति भ्रष्ट हो गयी थी।

दिमाग की नसें ऐसे तन गईं कि लगता था सिर फट जाएगा।

पार्वती. . . मेरी कोख से जन्मी बच्ची. . . इतना साहस. . . इतनी नीचता. . . कर सकती है ? सूर्यनारायणा ! चंडाल ! बस उनका वंश ही ऐसा है। उस भद्रैया का भानजा ही तो है। पर मेरी बेटी, मेरे परिवार में कभी ऐसी बात नहीं हुई। लेकिन मेरी अपनी बेटी. . . क्यों ऐसा कर रही है ? क्यों ?

नागम्मा का बदन दहक उठा।

शेरनी की तरह गरजी, "पार्वती !"

"आई, मां !" पार्वती भागती हुई आई।

"क्या है, मां ?" मां को अजीब नज़रों से देखते हुए पूछा।

"छी ! पापिन, कहीं की। मेरी कोख को कलंकित करने के लिए ही जन्मी थी ?" पार्वती के मुंह पर जोर का तमाचा पड़ा।

"इस तरह की गंदी ज़िंदगी नहीं जीती तो क्या फ़र्क पड़ता ? ...मर क्यों नहीं जाती ?"

पार्वती चकित खड़ी रही।

"छी ! जा, हट मेरे सामने से। मैं तेरा पापी चेहरा नहीं देखना चाहती। न तू मेरी बेटी है न मैं तेरी मां।" नागम्मा तेजी से वहां से चली गई।

नागम्मा आंगन में खूंटे से पीठ सटाकर बैठ गई।

मानो उसके सोचने की शक्ति ख़त्म हो गई।

पार्वती की आंखें धुंधला गईं। अपना शरीर भारी लगने लगा।

यह सब शोर-शराबा सुनकर सूर्यनारायणा वहां से खिसक गया।

पार्वती ने कमरे के दरवाज़े बन्द कर लिए और तकिए में मुंह छिपाकर रो पड़ी। उसका शरीर कांपने लगा।

"छी ! इस तरह की ज़िंदगी नहीं जीती तो क्या फ़र्क पड़ता ? अपना पापी चेहरा मुझे मत दिखा।" ये बातें क्या मेरी मां ने मुझसे कही थीं ? मेरे लिए अब तक सब प्रकार की मुश्किलें सहनेवाली मां ने यह कह दिया कि मां बेटी का हमारा रिश्ता आज के बाद ख़त्म हो गया ? मेरे लिए मरते दम तक दामाद के घर में रहकर खटने के लिए जो तैयार थी उसी मां ने मुझे आज इस तरह दुत्कार दिया ? पार्वती के मन में गुस्सा और आत्मसम्मान की भावनाएं जाग उठीं। उसने दिल पर पत्थर रख लिया।

उसके कानों में किसी की आवाज बार बार गूंज रही थी, "छी ! इस तरह का निकृष्ट जीवन न जीने से क्या फ़र्क पड़ जाता ?"

वह अचानक पलंग पर उठ बैठी। सोचने लगी।

नागम्मा ने मशीन की तरह शाम को घर के सारे काम निपटाए।

वह चाहती थी कि भद्रैया जब घर लौटेगा तो उसे किसी प्रकार का शक न हो।

पार्वती अपने कमरे से बाहर नहीं निकली।

नागम्मा ने उसे बुलाना भी नहीं चाहा।

सूर्यनारायणा न जाने कहां चला गया।

दामाद को खाना परोसकर नागम्मा आंगन में जाकर चारपाई पर लेट गई। मन में तरह-तरह के विचार उठ रहे थे।

पार्वती ने दोपहर से कुछ भी नहीं खाया था। नागम्मा सोचने लगी — मैंने पार्वती को क्यों मारा ? क्यों आपे से बाहर हो गई ? समझाने से शायद काम बन जाता। क्या इसमें सिर्फ पार्वती की ग़लती थी ? उनके आपसी स्नेह को देखकर भी चुप रहना मेरी ग़लती नहीं थी ? पार्वती को बूढ़े के साथ ब्याह देना मेरी ग़लती नहीं थी ? न जाने गुस्से में क्या क्या कह गई। बिटिया का दिल कितना दुखाया मैंने।

मेरे इतना कुछ कह देने के बाद भी उसने मुंह नहीं खोला । इस तरह बातें सुनकर चुप रहना उसके स्वभाव के विपरीत है ।

मैं प्यार से समझा देती तो क्या पार्वती मेरी बात नहीं मानती ?

मैंने आश्रय पाने के स्वार्थ से पार्वती के जीवन को भ्रष्ट कर दिया । मेरे पति ने पार्वती के बारे में क्या क्या-सपने देखे थे ?

अगर स्वर्ग से पति यह सब देख रहे हैं तो मुझे ही कोसेंगे । मेरी ही ग़लती बताएंगे ।

हां, सारी ग़लती मेरी ही है । दुनिया के प्रति जो द्वेष था वह सब मैंने पार्वती पर दिखाया । हे भगवान !

इस तरह पार्वती के बारे में सोच-सोचकर नागम्मा आधी रात तक दुखी होती रही । फिर नींद की गोद में चली गई । नींद में भी बुरे सपने देखती रही ।

बुरा सपना टूटा, तो डर के मारे एकदम उठ बैठी ।

घर से सौ गज की दूरी पर पीपल का पेड़ था । उस पर बैठा एक उल्लू बोल रहा था ।

नागम्मा के मन और शरीर को एक अनजान कमज़ोरी ने जकड़ लिया । एक अजीब प्रकार का डर . . उदासी. . . । ठंडी हवा चल रही थी फिर भी शरीर पसीने से तर-ब-तर हो रहा था ।

पार्वती के बारे में एक बुरा सपना देखा । पंहले कभी ऐसा सपना नहीं देखा था । उसे लगा कि शायद उसने पार्वती का दिल बहुत दुखाया ।

न जाने पार्वती कैसी है ? उसने कोई ऐसा वैसा कदम तो नहीं उठाया न ?

नागम्मा उठकर तेज़ हवा के झोंके की तरह अंदर आई । पार्वती के कमरे के दरवाज़े पूरी तरह से खुले थे ।

नागम्मा का कलेजा मुंह को आया । सांस लेना मुश्किल हो गया । भद्रैया के खर्राटे सुनाई पड़ रहे थे । पार्वती का पलंग खाली था ।

नागम्मा को लगा दुनिया खाली हो गई ।

दीवार पकड़कर कांपते पैरों को संभाला । इतने में कुछ याद आया । सूर्यनारायणा के कमरे की तरफ़ जाने का मन नहीं किया । फिर उसके मन में शंका जागी, नफ़रत जागी । जल्दी से सूर्यनारायणा के कमरे की तरफ़ चली । उस कमरे के दरवाज़े भी खुले पड़े थे । यह देखकर नागम्मा धड़ाम से ज़मीन पर बैठ गई ।

नसें फटने लगीं । अपने आप को संभाला, उठी और दुबारा पार्वती के कमरे में गई ।

खाली कमरे ने नागम्मा को मानो सहानुभूति से देखा ।

नागम्मा इस संसार को और अपने आप को एकदम भूल गई । दीवार की घड़ी ने तीन बजाए तो नागम्मा फिर अपनी दुनिया में लौट आई । पागलों की तरह कमरे को देखने लगी तो तकिए के नीचे दबाकर रखा गया एक नीले रंग का काग़ज़ दिखाई पड़ा । मशीन की तरह चली और उस काग़ज़ को हाथ में लिया । दीवार पर लगी लालटेन को ज़मीन पर रखा और उसे और रौशन किया । लालटेन के पास बैठ गई और दिल को मज़बूत करके काग़ज़ को पढ़ने लगी ।

"मां !"

तुम्हें मां कहकर पुकारने का अधिकार मैं खो चुकी हूं, यह मैं जानती हूं ।

फिर भी तुम्हें इसी तरह पुकारने को मन चाहा । इस बात के लिए मुझे क्षमा कर दो ।

तुमने कहा कि मैं अपना चेहरा तुम्हें अब कभी न दिखाऊं । इसी बात से मुझे हिम्मत मिल गई । इस चिट्ठी को पूरा पढ़ लेना । तुमसे यह मेरी आख़िरी विनती है । ज़रूर पढ़ोगी न ?

तुमने कहा कि मेरी ज़िंदगी भ्रष्ट हो गई है, ऐसे जीने से क्या फ़ायदा ? मुझे भी ऐसा ही लगा, मां ।

मैं जानती हूं कि तुम इस जनम में मुझे देखना पसन्द नहीं करोगी । चाहे तुम मुझे माफ़ भी कर देती फिर भी मैं सदा तुम्हारी आंखों के सामने

रहती तो इससे तुम्हें दुख ही मिलेगा। मैं जानती हूं कि मेरे प्रति प्रेम और द्वेष की भावनाएं तुम्हारे मन में सदा चलती रहेंगी। इससे तुम्हें तकलीफ़ होगी।

तुमने मेरे लिए अनेक कष्ट झेले। अपमान और तिरस्कार सहे। जब से मैंने होश संभाला मैं यही चाहती थी कि तुम्हें कोई दुःख न पहुंचे पर मैंने तुम्हें बहुत दुःख दिए।

और यह मेरा स्वभाव बन गया। मैंने यह कभी नहीं जाना कि मेरे अन्दर विद्रोह पनप रहा है।

कहते हैं कि जीवन की सभी अवस्थाओं में बचपन सबसे मधुर होता है। पर मुझे वह मधुरता, वह आनंद कहां मिला मां? जब से होश संभाला तिरस्कार का सामना ही करती रही। कड़ुवापन ही चखा। प्रतिकूल परिस्थितियों में पलकर बड़ी हुई। इसीलिए मेरा मन हर बात का विरोध करना ही सीख पाया।

तुमने जब निश्चय किया कि मेरी शादी भद्रैया से कर दोगी, तब मेरे शरीर का एक एक अंग विद्रोह करने को तड़प उठा।

पर उस भावना को मैंने ख़त्म कर दिया। वह सिर्फ तुम्हारे लिए ही मैंने किया था, मां।

सिर्फ तुम्हारे लिए!

तुम्हें उस नरक कूप से बचाने के लिए ही, मां।

सिर्फ तुम्हारे लिए ही, मां।

भद्रैया को देखकर मुझे उल्टी आती थी। उसे नोंचना चाहती थी। कभी-कभी मार भी खाती थी। जब सहन नहीं हुआ तो धमकाया कि किसी के साथ भाग जाऊंगी। तब जाके डर गया। मुझसे विनती की कि ऐसा न करूं और वादा भी किया कि मेरे पास नहीं आएगा। उसे डर था कि मेरे भाग जाने कहीं उसके वंश पर दाग़ न लग जाए। बेचारा, भद्रैया।

तब मुझे मामी की बातें याद आईं।

तुम्हें याद है मां? वह कहती थी कि यह किसी दिन किसी के साथ

भाग जाएगी। हमें बदनाम करेगी। भद्रैया की बातें सुनकर मैं मन ही मन हंस पड़ी। तब ऐसा काम करती तो घर की ही बदनामी होती। अब अगर करूं तो दो दो घर बदनाम हो जाएंगे। तब सोचा था कि यह काम करूं और दोनों घरों को बदनाम करूं।

इन दोनों घरों ने हम दोनों को क्या दिया है, मां ?

पढ़ते हुए नागम्मा के हाथ कांपने लगे। आंखों में आंसू भर आने के कारण अक्षर साफ दिखाई नहीं दे रहे थे।

आंखें पोंछकर फिर पढ़ने लगी।

मां ! क्या तुम्हें बताऊं कि मैं भद्रैया के घर में इतने दिन कैसे रही ?

आकाश में बादल छाए हैं, अंधेरी शाम है, वातावरण में हवा नहीं है, पर-कटा एक पंछी ज़मीन पर गिरा छटपटा रहा है। दीनता से, पर आशा भरी निगाहों से आकाश की तरफ़ देख रहा है। स्वेच्छा से खुले आसमान में उड़ने की इच्छा को दबाने से असमर्थ उड़ने की चेष्टा कर रहा है। पर ज़मीन पर गिर पड़ता है। बार बार गिरने से उसके घायल पंख और भी घायल होते जा रहे हैं। इससे ज्यादा कोई फ़ायदा नहीं हो रहा है। वह उड़ना चाहता तो है, पर उड़ नहीं पाता।

वहां से दूर जाना चाहता है, पर हिल नहीं सकता।

उसके पर काट दिए गए हैं।

उसी वक्त एक जादूगर वहां आया।

उस पर-कटे पंछी को देखा।

उसकी आंखों में झांका।

उसकी आशाएं क्या हैं, यह जान गया।

उसका दिल करूणा से भर गया।

उसने अपनी जादुई शक्ति का प्रयोग किया।

पंछी के नए पर उग आए।

एक ही पल में वह आसमान में था।

भूमि को भूल गया।

अब तक जो दारूण पीड़ा सही थी, उसे भी भूल गया।

मां, तुमसे एक बात पूछती हूं.. उस पक्षी के पर काटकर उसकी प्राकृतिक जीवन गति में बाधा डालकर उसे धराशायी करने वाले चिड़ीमार का उस पर कोई अधिकार है क्या? या उस जादूगर का उस पर अधिकार है, जिसने उसे नई ज़िंदगी प्रदान की?

पंख आने के बाद पंछी कब तक ज़मीन पर रह सकता है, मां?

वह तो उसके लिए अस्वाभाविक बात है। ज़मीन पर नहीं रहता। रह नहीं सकता। सूर्यम् के व्यक्तित्व ने पहली नज़र में ही मुझे आदर के साथ अपने पास बुलाया।

मैं चौंक गई।

हड़बड़ा उठी।

पर उस बुलावे का जवाब तो मुझे देना ही पड़ा। अपने आप को मैं रोक न पाई।

उसे देखते ही और क्या क्या महसूस हुआ, बताऊं?

मुझसे नफ़रत कर रही हो न?

सोच रही हो न कि मैं कितनी बेशर्म हूं?

कुछ भी हो तुम मां हो। मां हमेशा माफ़ कर देती है।

उस क्षण मुझे जिस आज़ादी का अनुभव हुआ उसका वर्णन कैसे करूं? जैसे कोई व्यक्ति सालों से ऐसे कमरे में हो जिसके दरवाज़े और खिड़कियां बन्द रही हों। अचानक उन दरवाजों और खिड़कियों के खुल जाने से उस व्यक्ति को जो आनन्द मिलता है, कुछ उसी प्रकार का आनन्द मैंने भी महसूस किया। अचानक खुली हवा और रोशनी मिल गई थी।

सूर्यम् को देखकर मुझे ऐसा लगा कि मैं समुद्र तट पर बैठी सूर्योदय की आभा को निहार रही हूं, तिमंजिले भवन की छत पर खड़ी पूनम की चांदनी में नहा रही हूं, सुबह-सुबह नींद से जागते ही सामने की खिड़की में से ओस में भीगा गुलाब का फूल दिखाई दे रहा है।

उसे देखकर मेरे अंदर सैकड़ों झरने फूट पड़े।

शरीर का एक एक अंग पुलक से भर गया।

जवानी दोपहर की धूप की तरह मेरे शरीर को जला रही थी, उस समय... सूर्यम् का स्पर्श... क्या लिखूं, मां ?

आखिर तुम मेरी मां हो। कैसे बताऊं ?

मेरी उस अनुभूति को बस तुम समझ लो, मां।

सूर्यम् ने मुझपर सहानुभूति दिखाई। उसने मुझपर रहम खाया।

मेरे साथ जो अन्याय हुआ उसके विरोध में उसका जवां खून खौल उठा।

मां, बोलो तो जो मैंने किया, वह काम बहुत बड़ा पाप है क्या ?

अगर ऐसा है तो फिर राधा का कृष्ण के साथ क्या रिश्ता है ?

बुआ का है न ?

इतना ही नहीं, वह कृष्ण से उम्र में बड़ी भी थी।

मैं तो सूर्यम् से छोटी हूं।

राधाकृष्ण के प्यार को आदर्श मानकर हम उनकी पूजा करते हैं। हम सत्यभामा-कृष्ण, रुक्मिणी-कृष्ण या जांबवती-कृष्ण क्यों नहीं कहते ? शायद राधा भी शादी-शुदा थी। नहीं तो कृष्ण उससे शादी न कर लेता ?

राधा ने भी अनगिनत अपमान और दुःख सहे होंगे।

क्या तुम यह कह सकती हो कि राधा और कृष्ण का प्रेम अपवित्र था ?

वहां तक पढ़ने के बाद नागम्मा कुछ सोचने लगी। थोड़ी देर के बाद आंखें पोंछकर फिर पढ़ने लगी।

मां ! तुमने मुझसे कहा था कि ऐसी ज़िंदगी जीने से क्या फ़ायदा, मर क्यों न जाती ? मुझे जन्म देनेवाली मां होकर, तुमने ऐसा कहा।

मेरे कानों में तुम्हारे ये शब्द बहुत समय तक गूंजते रहे।

मुझे भी तुम्हारी बात ठीक लगी।

मुझे लगा कि मुझसे बहुत बड़ा अपराध हो गया।

मुझे मर जाने की इच्छा हुई, सोचा मरकर सबसे बदला ले लूंगी।

लेकिन मैंने कोई अपराध नहीं किया। फिर भी मर जाना चाहा।

उस रात भद्रैया ने आकर दरवाजा खटखटाया तभी मुझे होश आया। वह आकर चुपचाप अपने पलंग पर सो गया। आधे घंटे में खर्राटे भरने लगा। मैं धीरे-से उठी और बाहर आई। तुम आंगन में लेटी थी। आखिरी बार दूर से ही तेरे चरणों को प्रणाम किया।

सूर्यम् के कमरे के पास गई। वह वहां नहीं था। 'कायर, भाग गया।' मैंने सोचा। अपने आप पर मुझे हंसी आने लगी।

पिछवाड़े के कुएं के पास गई।

कुएं की दीवार पर बैठकर खूब सोचा। मौत से एक पल के लिए डर लगा... पर तुरंत ही तुम्हारे वे शब्द फिर याद आए, "छी ! ऐसी ज़िंदगी जीने से क्या फ़ायदा ?" आंखें मूंद लीं... कूद पड़ी... नहीं... कूदकर मृत्यु की गोद में, पानी में मुझे जाना था, पर दो मज़बूत हाथों ने मुझे पकड़ लिया और पीछे खींच लिया। मैं एक युवक के विशाल सीने पर गिर पड़ी। जानती हो किसने मुझे बचाया ? मेरे पति के भानजे सूर्यनारायणा ने।

सूर्यम् ने मुझे जीवन का अर्थ समझाया।

मेरी आंखें खोल दीं।

उसने मुझे बताया कि जब से शाम ढली, वह अमरूद के पेड़ के नीचे बैठकर यही सोच रहा था कि आगे उसे क्या करना चाहिए। जब किसी निश्चय पर पहुंचा तो अन्दर आते हुए मुझे कुएं पर बैठी देख लिया।

मां ! सूर्यम् की बातों का सार मैं तुम्हें बता रही हूं।

यह वंश की मर्यादा, गौरव, समाज, आचार-व्यवहार, विज्ञान, विकास, संस्कार, संस्कृति, सभ्यता, सारा संसार, उसकी सभी शक्तियां, ये सब मिलाकर क्या एक जीवन प्रदान कर सकते हैं ?

अगर ऐसा नहीं कर सकते तो उन्हें जीवन का सर्वनाश करने का अधिकार किसने दिया ?

एक जीवन को न सही... ये सब मिलकर क्या बीते हुए किसी एक क्षण को लौटा सकते हैं ?

क्षण ! क्षण भंगुर है ! पर ऐसे कई क्षण मिलकर ही तो इस सृष्टि को स्थिरता प्रदान कर रहे हैं न ।

मुझे जीवन चाहिए ।

नहीं, मुझे जो जीवन मिला है, इसे सार्थक बनाना है ।

बचपन की मधुरता को जाने बिना ही वह बीत गया । चाहे कितने समय तक तपस्या करूं वह फिर से लौटकर नहीं आनेवाला । अगर वही ग़लती जवानी में भी करूंगी, तो फिर यह ज़िन्दगी मुझे क्या दे सकेगी । इसीलिए देर नहीं करना चाहती । अपने सुख की खोज में निकल पड़ी हूं ।

जीवन को ढूंढ़ती हुई चल पड़ी हूं ।

इन बंधनों में रहकर जी नहीं सकती ।

मुझे आज़ादी चाहिए ।

मुझे विमुक्ति चाहिए । वह चाहिए ! चाहिए !

क्या मैंने कोई ग़लती की है, मां ?

ग़लती क्या है ?

समाज ने कुछ नियम बनाए । उनका उल्लंघन करना ही ग़लती है, यही कहोगी न तुम ? उस समाज ने हम दोनों को क्या दिया ?

जीवन भर का दुःख !

तुम्हारी तरह मुझमें सारा जीवन दुःखी होकर जीने की हिम्मत नहीं है । क्या मुझे इतना भी हक नहीं है कि अपने जीवन को अपनी इच्छा के अनुसार जी सकूं ? क्या ये सारे नियम हमारे पूर्वजों ने औरत के लिए ही बनाए ? बताओ तो, क्यों ?

समाज पर शासन करने वाला, शास्त्रों की रचना करने वाला पुरुष है, इसीलिए ।

इस सृष्टि में जो चीज अत्यंत कोमल और सुंदर होती है उसे लोग

दो तरह की दृष्टि से देखते हैं। एक तरफ़ उसकी अलौकिक सुंदरता की आराधना करते हैं तो दूसरी ओर उसे बिल्कुल अनुपयुक्त और कमजोर बताकर उसका तिरस्कार करते हैं। पता नहीं खुशनसीबी कहूं या बदनसीबी, स्त्री खासकर हमारे देश की स्त्री, इन दोनों अनुभवों से गुजर रही है।

एक तरफ़ तो सुंदरी, सुकुमारी, कोमलांगी, मातृमूर्ति कहकर आराधना करते हैं। दूसरी तरफ़ स्त्री, अबला कहकर तिरस्कार करते हैं।

जानती हो मंदिर में देवी-देवता का आदर कब तक रहता है ?

उस देवता की आराधना करने वाले जब तक होंगे, तब तक। जिस मंदिर में कोई पूजा करने नहीं जाता, वहां जानवर रहने लगते हैं, गंदगी फैलती है। मां तुम जानती हो न, कि हमारे गांव में जो माता का मंदिर पोखर के पास स्थित है, वह किस प्रकार टूट-फूट गया था। आक के पौधे उग आए थे और वहां सांपों और सुअरों का अड्डा बन गया है। क्यों ? वहां कोई पूजा करने नहीं जाता, इसीलिए न ?

नाना-नानी ने लड़की के लिए व्रत और पूजा की।

तुम्हें भी मंदिर की देवी की तरह आदर मिला।

लेकिन लड़के की तरह तुम्हें नहीं पाल सके।

पीढ़ियों से औरत के प्रति जैसा व्यवहार किया जा रहा है, उसके कारण स्त्री-स्त्री ही रह गई। उसे ऊपर उठने नहीं दिया गया। समाज ही निर्णय करता है कि स्त्री को अमुक चीजों की आवश्यकता है। उसके लिए समाज ही सोचता है। उसे अपनी तरफ़ से सोचना मना है, इसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

घोंघे का शरीर बड़ा कोमल होता है। इसलिए प्रकृति ने उसकी रक्षा के लिए एक आवरण बनाया। पर उसे भी जब भूख लगती है या रति की इच्छा होती है, तब साथी को खोजती हुई बाहर निकलती है। काम हो जाने के बाद वह फिर से आवरण के अंदर चली जाती है। स्त्री को पुरुष से कमजोर बताते हुए समाज ने स्त्री के लिए नियमों का कवच

बनाया। भूख लगने पर भी स्त्री उस कवच से बाहर निकलकर नहीं आ सकती। आने की ज़रूरत ही नहीं है, क्योंकि उसके आवरण के अन्दर ही उसकी ज़रूरतें पूरी करने के सारे इंतजाम कर दिए गए हैं। अगर किसी कारणवश वह कवच को छोड़कर बाहर निकल आई तो फिर जिस अपमान का उसे सामना करना पड़ेगा, जो तिरस्कार उसे मिलेंगे, उनका अंत ही नहीं होता। इस देश में स्त्री को इतनी भी आज़ादी नहीं मिल सकती जितनी एक घोंघे को मिलती है।

मां ! तुम्हारे साथ क्या हुआ ?

तुम्हारे मां-बाप ने तुम्हें कवच में सुरक्षित रखकर बड़े वैभव से तुम्हारी परवरिश की थी।

स्वतंत्र जीवन बिताने के लिए तुम्हें न पढ़ाया-लिखाया न ही ऐसे अवसर प्रदान किए कि तुम अपने पैरों पर खुद खड़ी हो सकती। उन्होंने कभी सोचा ही नहीं कि इन सब बातों की तुम्हें कभी ज़रूरत पड़ सकती है। फिर शादी करके तुम्हें पति को सौंप दिया और चैन की सांस ली। पर अनहोनी हुई और तुम्हारे पति का स्वर्गवास हो गया। तुम्हारा कवच उघड़ गया। भाइयों की शरण में आ गई। अनेक कष्ट सहे। किसलिए ? अपने और अपनी बच्ची का पेट भरने के लिए ? तुम्हें इतनी मुश्किलें क्यों सहनी पड़ीं। ?

ज़रूरत पड़ने पर इस विशाल जगत में तुम भी सिर उठाकर जी सकती थी। पर इस प्रकार की हिम्मत या व्यक्तित्व का विकास ही नहीं होने दिया।

नानी या नाना को यह नहीं सूझा कि तुम्हें पढ़ाना ज़रूरी है। क्यों ?

लड़की को पढ़ाना उन्होंने ज़रूरी नहीं समझा। दहेज की कुप्रथा क्यों प्रबल है ? लड़की का मां-बाप की संपत्ति पर हक नहीं होता, इसीलिए। अगर तुम्हारे भाइयों के साथ तुम्हें भी अपने पिता की संपत्ति में हिस्सा मिलता तो तुम अपना पेट खुद पाल सकती थी।

तुम मुझे खूब पढ़ाना चाहती थी। क्यों नहीं पढ़ा सकी ? तुम्हारे

पास फूटी कौड़ी भी नहीं थी ।

अगर तुम पढ़ी-लिखी होती तो तुम्हारी ज़िंदगी ऐसी न होती । पिताजी की मौत के बाद कोई छोटी-मोटी नौकरी कर लेती और मुझे अपनी इच्छा के अनुसार पढ़ा-लिखाकर पालती-पोसती । मामाजी की तरह जायदाद में हिस्सा मिल जाता तो शायद बड़े मामाजी अपने बेटे के लिए खुद मेरा हाथ मांगते । एक बार सोचकर देखो मां । क्या मेरी बातों में सच्चाई नहीं है ?

पर खुद तुम दूसरों की दया पर जी रही थी । मैं तुम्हारे लिए बोझ ही बन गई । लड़की बड़ी होने के बाद भी मायके में बैठी रहे तो दुनिया उसे दोष देती है । उस लड़की को किसी बूढ़े या बीमार आदमी के साथ बांधकर दुनिया राहत की सांस लेती है ।

मां एक बार सोचो । फिर मुझे माफ़ कर सको तो कर देना ।

तुम्हारा बचपन प्यार-दुलार में बीता । पर मेरा बचपन ? पच्चीस हजार रुपए दहेज देकर तुम्हारे लिए सुन्दर सुशिक्षित पति को ले आए । चाहे थोड़े समय के लिए ही सही, तुमने जीवन की खुशियों का खूब आनंद उठाया ।

पर मैं ? दहेज न दे सकने के कारण साठ साल के कुरूप, कठोर खूसट के साथ विवाह के बंधन में बांध दी गई ।

उस बूढ़े की पूजा करना मेरा कर्त्तव्य है । उसने मेरे गले में जो मंगलसूत्र बांधा है, उसे रोज़ आंखों से लगाना है । यही है न मेरे जीवन का परमार्थ ?

पिताजी के चल बसने के बाद तुम्हारा क्या हुआ ?

कितना अपमान और तिरस्कार सहना पड़ा ? वह भी अपने ही भाइयों के हाथों । जिस घर में तुम्हारा जन्म हुआ, उसी घर में । पर तुम्हें इन सब बातों से दुःख नहीं हुआ । इसे तुमने अपना अपमान ही नहीं समझा ।

पर मेरी बात अलग है न ?

साठ साल का भद्रैया कभी भी भगवान को प्यारा हो सकता है। मेरे अभी अठारह साल भी पूरे नहीं हुए हैं। फिर उसके जाने के बाद मेरा क्या होगा ? किसके सहारे जीऊंगी ? भद्रैया के भानजे की शरण में, उसकी पत्नी की सेवा करते हुए, अपमान की ज़िन्दगी ही जीनी पड़ेगी न ?

जो जितना ज्यादा अपमान की ज़िन्दगी जीकर, नीच जीवन बिताकर इस दुनिया से विदा होता है, उससे यह दुनिया उतना ही अधिक खुश होती है।

बड़ी अच्छी थी। पुण्यात्मा थी। पतिव्रता थी। इन खिताबों से मेरे मरने के बाद मेरी प्रशंसा करेगी यह दुनिया। इन्हीं प्रशंसाओं के लिए ही तो स्त्री इतना निकृष्ट जीवन जीती है।

पर मुझे कोई प्रशंसा नहीं चाहिए, मां।

मुझे जीवन चाहिए।

जीवन का भरपूर अनुभव करना है।

सूर्यम् मुझसे शादी करने के लिए तैयार है। अगर नहीं करता तो भी मुझे कोई दुःख नहीं होगा।

इस प्रकार की ज़िन्दगी मैंने खुद चुनी है। इसमें मुझे दुख मिले या सुख, समान भाव से स्वीकार करूंगी। पर मुझे छुटकारा चाहिए।

यह जीवन एक वैतरणी की तरह है, इससे मैं मुक्ति चाहती हूं।

मेरे लिए दूसरों ने जो सुरक्षा का कवच बनाया है, उसमें मैं रह नहीं सकती, मां।

उसमें रहकर सांस लेना मुश्किल हो रहा है।

जीवन पुकार रहा है मुझे।

उस पुकार को मैं अनसुनी नहीं कर सकती।

मैं जा रही हूं।

मैं जानती हूं कि मेरे कारण दो वंशों को बदनाम होना पड़ेगा। जानती हूं कि सब छाती पीटने लग जाएंगे। मैं भी यही चाहती हूं।

कम से कम आगे आनेवाली पीढ़ियां तो सजग हो जाएंगी। लड़कियों को बलि का बकरा बनाने से पहले भला-बुरा सोचेंगी। कम से कम ये दो वंश वाले तो अपनी कमसिन बेटियों को बूढ़े खूसटों के हाथों में नहीं सौंपेंगे।

मैं जा रही हूं।

इस क्षण से मेरा नाम विमुक्ति है।

मै मार्गदर्शी हूं।

मैं क्रांति हूं।

दुनिया अगर मुझे पतिता कहती है तो मैं डरनेवाली नहीं हूं। दुनिया को देखकर मैं खूब हसूंगी।

मुझे एक ही दुख है, मां। तुम्हें अकेली छोड़कर जा रही हूं। मैं जानती हूं कि तुम मेरे साथ नहीं आओगी। तुम्हारे इर्द गिर्द जो कवच बंधा है, वह बड़ा मज़बूत है। उसे छोड़कर आना तुम पसन्द नहीं करोगी।

मैं जानती हूं। तुम्हें समाज से डर लगता है। समाज में तुम्हें आदर चाहिए। तुम्हें सुख नहीं चाहिए। बड़ों ने तुम्हारे लिए जो बंधन बनाए हैं, उनसे विमुक्ति नहीं चाहिए। उन बंधनों को साथ लेकर ही मिट जाने में तुम्हें खुशी मिलेगी।

मां ! मुझे माफ़ कर दोगी न ?

मां। तुम बड़े मामाजी के घर चली जाना।

बड़े मामाजी अच्छे आदमी हैं। वहीं जाओगी न ?

अलविदा मां।

तुम्हारी

"पार्वती"

चिट्ठी पढ़कर नागम्मा काठ हो गई। दीवार से लगकर न जाने कितनी देर तक बैठी रह गई।

दूर से मुर्गे की बांग सुनाई पड़ी।

थोड़ी देर बाद नागेश्वर मंदिर की घंटिया बज उठीं।

नागम्मा की चेतना लौट आई। चारों ओर ध्यान से देखा। कमरे में काग़ज़ बिखरे पड़े थे। एक पल के लिए उन काग़ज़ों की ओर उदासीन भाव से देखा।

"पार्वती ! तुमने अच्छा काम किया है, बेटी। कम से कम तुम सुखी रहो, बिटिया। मैं अपने दिल की गहराई से तुझे आशीर्वाद देती हूं।"

नागम्मा के कानों को अपनी बातें ऐसी लगीं जैसे वे किसी और के मुंह से निकल रही हों। वह चौंक गई।

यह क्या।

मैं पार्वती के पाप का समर्थन कर रही हूं? मेरे वंश में किसीने अब तक ऐसा ग़लत काम किया है? मैं या मेरे रिश्तेदार अब सिर उठाकर कैसे जी पाएंगे? कलमुंही। कितना घटिया काम किया है री, तूने?

पार्वती के इस काम का जिम्मेदार कौन है? क्या मैंने जो किया वह ठीक था? मैंने पार्वती की शादी भद्रैया से की। क्या वह घटिया काम नहीं था? अगर देखा जाए तो पार्वती के इस बगावत के पीछे मैं हूं। मेरे भाई हैं, मेरा वंश है। क्या मैं चाहती हूं कि मेरी बेटी भी मेरी तरह गई-गुजरी ज़िन्दगी जिए? नहीं... नहीं... पार्वती ने ठीक ही किया। उसने अच्छा काम किया... पार्वती सुखी रहे। पार्वती ने बहुत अच्छा काम किया।

जिस दामाद के घर में बेटी न हो, वहां मैं कैसे रह सकती हूं?

भद्रैया जागकर बात जान गया तो?

कौन-सा मुंह लेकर उसके सामने जाऊंगी? अगर पूछे कि तुम्हारी बेटी कहां है, तो क्या जवाब दूंगी?

नागम्मा तेजी से बाहर आई।

पल्लू कंधों पर ओढ़े धुंधलके में चलने लगी।

चौराहे के पास आकर खड़ी हो गई।

मेरा रास्ता किस तरफ़ जाता है? मैं कहां जाऊं? भाई के घर जाकर क्या कहूं? यह कहूं कि मेरी बेटी भद्रैया के भानजे के साथ भाग गई? कैसे बताऊंगी?

पार्वती ने सच ही कहा था । मुझे किसी न किसी के आश्रय की ज़रूरत है । उसके बिना मैं जी नहीं सकती । मैं कल्पना भी नहीं कर सकती कि स्त्रियां बिना सहारे के जी सकती हैं ।

नागेश्वरस्वामी के मंदिर से सुप्रभात गान सुनाई दे रहा था ।

चौराहे पर खड़ी नागम्मा मशीन की तरह उस सुप्रभात गान की दिशा में चल पड़ी ।

मंदिर के पासवाले पोखर के पास आकर खड़ी हो गई ।

एक पल के लिए कुछ सोचा और जल्दी-से एक एक करके सीढ़ियां उतरकर आखरी सीढ़ी पर बैठ गई ।

पैर पानी में थे । साड़ी का किनारा भीग रहा था । एकटक पानी की ओर देख रही थी ।

नागम्मा के पैंतीस साल भी पूरे नहीं हुए । काई से भरे गंदले पानी से पहले उसे बहुत घिन होती थी । बिना किसी को साथ लिए उस पोखर के पास फटकती भी नहीं थी । पर अब वही सुबह के धुंधले प्रकाश में पोखर की सीढ़ियों पर बैठी थी ।

हरे रंग के पानी को देखा ।

सास से झगड़कर पोखर के पानी में कूदनेवाली आदेम्मा, पति से झगड़ा करके उसमें कूदनेवाली कमलम्मा और बेटे के हाथों अपमानित होकर पोखर में छंलाग लगानेवाली मंगम्मा - ये तीनों नागम्मा की आंखों के सामने घूम गयीं ।

उस पोखर के पानी में से उसे पास बुलाने के लिए किसी ने हाथ बढ़ाए ।

जिन स्त्रियों को पोखर के पानी में डूबकर जान देते हुए उसने देखा, वे सभी नागम्मा को बुलाने लगीं ।

पैंतीस साल से भी कम उम्र की नागम्मा ने जीवन में तीन जन्मों के दुःखों को झेला था ।

मंदिर में सुप्रभात की सेवा ख़त्म हो गई ।

देवता नैवेद्य स्वीकार करने लगे...

नागम्मा ने हाथ उठाकर मन ही मन भगवान को प्रणाम किया। "हे, भगवान ! कहते हैं कि आत्महत्या महापाप है। पर मैं इस जीवन के बोझ को और ढो नहीं सकती, भगवान ! मैं बहुत थक गई हूं स्वामी।"

"हां, पार्वती ने ठीक ही कहा था। हमारे जीवन वैतरणी में बदल गए हैं। मैं पल-पल इस वैतरणी को पार करने की कोशिश करके थक गई हूं। मरने के बाद उस लोक में जाने के रास्ते में वैतरणी है, या नहीं, यह तुम ही जानते हो, ईश्वर ! पर मुझे तो इसी लोक में इसकी जीवन में वैतरणी दिखाई दी। क्षितिज तक कहीं किनारा दिखाई नहीं दिया। मैं थक गई हूं। मुझसे अब और तैरा नहीं जाएगा। मुझे आराम चाहिए। मुझे इस वैतरणी से मुक्ति चाहिए। छुटकारा चाहिए। हे, भगवान। मुझे माफ़ करो। बेटी, पार्वती ! तुम भी मुझे माफ़ करो।

नागम्मा ने आंखें मूंद लीं और आगे को झुक आयी।

मंदिर में घंटी बज उठी।

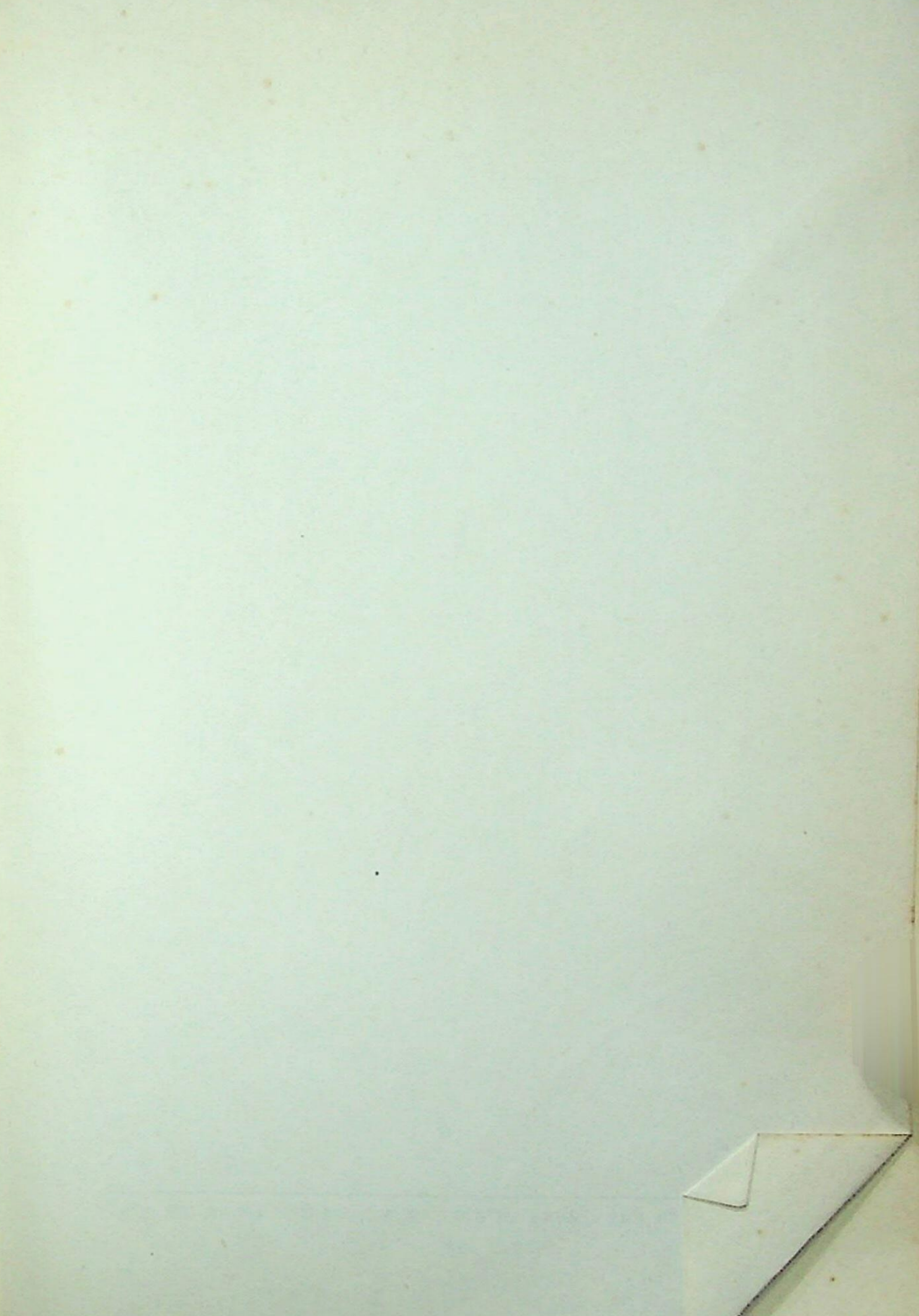
भगवान पूजा-अर्चना स्वीकार करने में मगन थे।

पूरब की दिशा लाल हो गई।

सूर्य भगवान ने दुनिया के अंधेरे से मुक्ति दिलाई।

भद्रैया अभी तक खर्राटे भरकर सो रहा था।

पिछवाड़े में कौए नागम्मा के लिए नहीं, नहीं उसके जूठे बर्तनों के लिए, कांव-कांव कर रहे थे।





रु. 14.00 ISBN 81-237-2928-6

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया